**सुविचार**

जितना कठिन संघर्ष होगा जीत उतनी ही शानदार होगी।

Daily

# THE PHOTON NEWS

सच के हक में...

Published from Ranchi

Ranchi ● Monday, 15 May 2023 ● Year : 01 ● Issue : 118 ● Ranchi Edition ● Page : 12 ● Price : 3 ● www.thephotonnews.com

E-Paper : epaper.thephotonnews.com


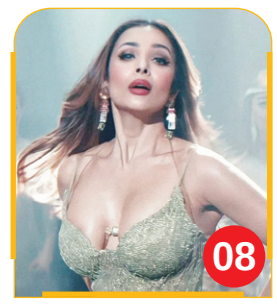


पैपराजी पर नाराज हुईं मलाइका अरोड़ा

**SHARE**

| | | |
|---|---|---|
| सेंसेक्स | : | 62,027.90 |
| निफ्टी | : | 18,314.80 |

**SARAFA**

| | | |
|---|---|---|
| सोना | : | 5,800 |
| चांदी | : | 78.05 |

(नोट : सोना 22 कैरेट प्रति ग्राम)

**BRIEF NEWS**

## प्रवीण सूद बने सीबीआई के नए निदेशक

NEW DELHI : कर्नाटक के पुलिस महानिदेशक प्रवीण सूद को केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) का अगला निदेशक नियुक्त किया गया है। सूद का कार्यकाल दो वर्ष का होगा। वे आगामी 25 मई को कार्यकाल पूरा करने वाले सुबोध जायसवाल का स्थान लेंगे। सीबीआई के नए निदेशक के चयन के लिए शनिवार को उच्चाधिकार प्राप्त समिति की बैठक हुई थी, जिसमें प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, मुख्य न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ और लोकसभा में सबसे बड़ी पार्टी के नेता अधीर रंजन चौधरी शामिल हुए। बैठक में तीन नामों का चयन किया गया और नए केंद्रीय सतर्कता आयुक्त व सदस्य लोकपाल के नामों पर भी चर्चा हुई। केंद्रीय मंत्रिमंडल की नियुक्ति मामलों की समिति ने प्रवीण सूद के नाम को मंजूरी प्रदान की। केंद्रीय कार्मिक, लोक शिकायत एवं पेंशन मंत्रालय के एक आदेश में इसकी जानकारी दी गई है।

## अकोला में हिंसा, एक की मौत, धारा 144 लागू

MUMBAI : महाराष्ट्र में अकोला के पुराने शहर क्षेत्र में शनिवार देररात विवादित पोस्ट को लेकर दो गुटों के बीच हुई मारपीट के बाद आगजनी और पथराव में एक व्यक्ति की मौत हो गई। इस घटना में 10 लोग घायल हो गए। घायलों में दो पुलिसकर्मी भी हैं। रामदास पेठ पुलिस स्टेशन की टीम ने इस मामले में अब तक 26 लोगों को हिरासत में लिया है। गृहमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने घटना की जांच के आदेश दिए हैं। अकोला के पुलिस अधीक्षक संदीप घुगे ने बताया कि शहर में धारा 144 लागू कर दी गई है। स्थिति अब नियंत्रण में है। एहतियातन स्टेट रिजर्व फोर्स की दो यूनिट को तैनात किया गया है। बताया गया है कि रात करीब साढ़े 11 बजे हरिहरपेठ क्षेत्र के राजराजेश्वर सेतु इलाके में विवादास्पद पोस्ट के कारण दो समूहों के बीच बहस शुरू हुई। पुलिस विवादित पोस्ट के मामले में मुकदमा दर्ज करने की प्रक्रिया शुरू कर रही थी, तभी सड़कों पर पथराव शुरू हो गया। कारों में आग लगा दी गई।

## रक्षा मंत्रालय ने सैन्य महत्व वाले 928 आइटम के आयात पर प्रतिबंध लगाया

NEW DELHI : रक्षा मंत्रालय ने 'आत्मनिर्भर भारत' पहल के तहत सैन्य महत्व के 928 सब-सिस्टम और पुर्जों के आयात पर प्रतिबंध लगाते हुए चौथी स्वदेशीकरण सूची (पीआईएल) को मंजूरी दे दी है। इन वस्तुओं का विवरण सृजन पोर्टल पर उपलब्ध है, जिन्हें सूची में निर्धारित की गई समय सीमा के बाद भारतीय-उद्योग से ही खरीदा जा सकेगा। रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने और रक्षा सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों (डीपीएसयू) के आयात को न्यूनतम करने के लिए यह कदम उठाया है। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने सैन्य महत्व के 928 लाइन रिप्लेसमेंट यूनिट, सब-सिस्टम्स, स्पेयर एंड कंपोनेंट्स की चौथी रचनात्मक स्वदेशीकरण सूची को मंजूरी दी है।

# रोशपा की पार्किंग से अवैध वसूली व बाइक चोरी का क्या है कनेक्शन? मालिक रोशन सूरीन बोले- चोरों से बचाने के लिए कुछ लोगों को रखा है

## निगम से नहीं लिया गया है कोई टेंडर या अनुमति, अवैध वसूली करने वालों को हटाने की कही बात

**रोशपा का सच**

SUHAIB ANSARI, RANCHI : रांची के मेन रोड स्थित रोशपा टावर की पार्किंग से अवैध वसूली और लगातार हो रही चोरी कई सवाल खड़े कर रही। आखिर अवैध वसूली और लगातार हो रही बाइक चोरी का क्या कनेक्शन है? सवाल उठना स्वभाविक है, चूंकि रोशपा टावर के पीछे खड़ी वैसी ही बाइक की चोरी हो रही, जो अवैध वसूली नहीं देते। इन चोरी गई बाइक का कोई सुराग भी नहीं मिलता। आखिर चोरी का सरगना कौन है? इधर, वसूली में शामिल लोगों की स्थिति पर गौर किया जाए, तो वे ज्यादातर नशे में रहते हैं। इनकी हुलिया, अच्छे लोगों की तरह नहीं रहती। इनका न तो अपराधिक रिकॉर्ड किसी के पास है। न ही, इनकी गतिविधियों की ही कोई खबर रखता है। इधर, रोशपा टावर के मालिक रोशन सूरीन का कहना है कि पार्किंग एरिया से लगातार हो रही चोरी रोकने के लिए ही कुछ लोगों को रखा है। जबकि इन्होंने पार्किंग से वसूली के लिए निगम से कोई टेंडर या अनुमति भी नहीं ली है। इसके बावजूद पार्किंग एरिया से अवैध वसूली की जा रही है। लेकिन वसूली करने वालों में कौन-कौन लोग हैं, उनकी क्या गतिविधियां है। इसकी ठीक से उन्हें जानकारी तक नहीं है।

रोशपा टावर की पार्किंग एरिया में वसूली की तस्वीर ● फोटोन न्यूज

रोशपा टावर की पार्किंग एरिया से सटी जगहों पर लगी दुकानें ● फोटोन न्यूज

रोशपा टावर के इसी एरिया में खड़ी वहानों की होती है चोरी ● फोटोन न्यूज

### पार्षद का उछल रहा नाम

इस पूरे पार्कि के ठेका में एक पार्षद का नाम उछल रहा है। वसूली करने वालों का कहना है वे पार्षद के लिए काम करते हैं। वसूली कर उन्हीं को देते हैं। उनके माध्यम से रोशपा के मालिक और निगम के अधिकारियों को पैसा पहुंचता है। इसलिए बेखौफ होकर ये अवैध वसूली करते हैं। बकायदा ये निगम की पर्ची भी थमाते हैं। इधर, खबर छपने के बाद रोशपा टावर लिखी पर्ची देने लगे हैं। हालांकि निगम ने इस वसूली के लिए किसी भी प्रकार की टेंडर या अनुमति से इन्कार किया है।

### ठेले-खोमचे वालों से भी अवैध वसूली

रोशपा टावर की पार्किंग से अवैध वसूली पार्किंग तक ही सीमित नहीं है। ये ठेले-खोमचों वालों से भी वसूली करते हैं। छोटी दुकानों से 50 रुपए प्रतिदिन, आइसक्रीम जैसी दुकानों से 200 रुपए प्रतिदिन की वसूली की जा रही है। दुकानों ने नाम न छापने के शर्त पर बताया कि उनसे टैक्स की तरह हर दिन वसूली की जाती है, नहीं देने पर दुकान हटाने की धमकी दी जाती है। इधर, अवैध वसूली प्रकरण पर रांची नगर निगम जांच कर रही है। नगर आयुक्त शशि रंजन ने पूरे मामले की जांच कराने की बात कही है। उन्होंने कहा है कि रोशपा टावर की पार्किंग एरिया से बिना टेंडर अवैध वसूली हो रही है तो गंभीर बात है। इसपर कड़ी कार्रवाई की जाएगी।

> “ पार्किंग एरिया से वसूली के लिए फिलहाल कोई टेंडर नहीं ले रखा है। चोरी रोकने के लिए कुछ लोगों को रखा है। लेकिन पर्ची देकर वसूली किए जाने के मामले को मैं खुद देखूंगा। ऐसा करने वालों को मैं हटा दूंगा।
>
> **रोशन सूरीन, मालिक रोशपा टावर।**

# ICSE : 10वीं में जमशेदपुर के रुशिल कुमार NATIONAL TOPPER

## ICSE RESULT : 10वीं में 98.94 व 12वीं में 96.93% विद्यार्थी उत्तीर्ण

PHOTON NEWS RANCHI : काउंसिल फॉर द इंडियन स्कूल सर्टिफिकेट एग्जामिनेशन (सीआईएससीई) ने 10वीं और 12वीं कक्षा के परीक्षा के परिणाम घोषित कर दिए हैं। 10वीं में 98.94 प्रतिशत व 12वीं में 96.93 प्रतिशत विद्यार्थी उत्तीर्ण हुए हैं। 10वीं कक्षा की परीक्षा में नौ विद्यार्थियों ने 99.80 प्रतिशत के साथ देश में शीर्ष स्थान हासिल किया है। 12वीं कक्षा में पांच विद्यार्थियों को 99.75 प्रतिशत अंक मिले हैं। बोर्ड ने नतीजों के साथ-साथ पास प्रतिशत और टॉपर लिस्ट भी रिलीज कर दिया गया है। 12वीं में रिया अग्रवाल और 10वीं में रुशिल कुमार ने टॉप किया है। रुशिल कुमार जमशेदपुर के टेल्को में स्थित हिलटॉप स्कूल के छात्र हैं। सीआईएससीई के सचिव गेरी अराथून ने रविवार को नतीजे घोषित होने की घोषणा की। सीआईएससीई ने फरवरी-मार्च में 10वीं (आईसीएसई) और 12वीं कक्षा (आईएससी) की परीक्षाएं आयोजित की थीं। देश भर में जिन 9 बच्चों ने टॉप किया है, सभी को 500 में 499 यानी 99.8 फीसदी अंक हासिल हुए हैं। 9 विद्यार्थियों में 5 लड़के और 4 लड़कियां हैं।

अपने माता-पिता के साथ आईसीएसई 10वीं का टॉपर रुशिल कुमार ● फोटोन न्यूज

### रुशिल कुमार का इंजीनियरिंग के बाद IAS OFFICER बनने का है सपना

आईसीएसई 10वीं के टॉपर रुशील कुमार ने परीक्षा से पहले जमकर तैयारी की थी। उन्हें यकीन था कि वह टॉप करेंगे। इसकी वजह भी रुशील ने बतायी। रुशील ने कहा कि उनका एग्जाम बहुत अच्छा गया था। इसलिए उन्हें भरोसा था कि वह टॉप करेंगे। रुशील ने बताया कि भविष्य में वह किसी बेहतर आईआईटी से पढ़ाई करना चाहते हैं। उसके बाद वह सिविल सर्विस की तैयारी करेंगे। रुशील कुमार ने यह भी बताया कि 10वीं की परीक्षा की तैयारी कैसे की। उन्होंने बताया कि पढ़ाई के लिए घंटे या वक्त कभी तय नहीं किया। हां, उन्होंने परीक्षा की तैयारी पूरी रणनीति के साथ की। उन्होंने पढ़ाई के घंटे तय करने की बजाय अपना टार्गेट तय कर लिया था कि एक दिन में इतने चैप्टर कम्प्लीट करना है। रिवीजन भी लगातार करते रहते थे। अपने इसी रूटीन को वह फॉलो करते थे। आईसीएसई 10वीं के ऑल इंडिया टॉपर जमशेदपुर के रुशील ने बताया कि परीक्षा में बेहतर परिणाम के लिए स्पेसिमेन पेपर भी सॉल्व करते थे। लगातार जो कुछ भी पढ़ाई करते थे, उसको रिवाइज लगातार करते रहते थे। परीक्षा से ठीक एक-दो दिन पहले भी रुशील ने सभी चैप्टर को रिवाइज किया था। उन्होंने अपनी सफलता का श्रेय अपने माता-पिता के साथ-साथ शिक्षकों को भी दिया। रुशील कुमार ने कहा कि उनकी सफलता में सभी लोगों की अपनी भूमिका रही।

### सबसे ज्यादा पांच टॉपर महाराष्ट्र से

इस बार आईसीएससी बोर्ड की परिक्षा में सबसे ज्यादा टॉपर महाराष्ट्र से हैं। महाराष्ट्र से पांच विद्यार्थियों ने टॉप किया है। आईसीएसई 10वीं का जो ऑल इंडिया मेरिट लिस्ट जारी किया गया है, उसमें 9 बच्चों के नाम हैं। जमशेदपुर के रुशील कुमार का नाम सबसे ऊपर है। बाकी आठ विद्यार्थियों के नाम अनन्या कार्तिक, श्रेया उपाध्याय, अद्वय सरदेसाई, यश मनीष भसीन, तनय सुशील शाह, हिया सांघवी, अविशी सिंह और संबित मुखोपाध्याय हैं। टॉपर्स की लिस्ट में झारखंड बंगाल से 2 बच्चों ने अपना नाम सुनिश्चित किया है। 4 बच्चे महाराष्ट्र के हैं, एक उत्तर प्रदेश, एक बेंगलुरु और 1 उत्तर प्रदेश से हैं। जेवियर्स स्कूल (पूर्व बर्दवान, पश्चिम बंगाल) के विद्यार्थी हैं। जमशेदपुर शहर में बेहतर रिजल्ट का उत्साह है। इस बार सभी स्कूलों का रिजल्ट पिछली बार की तुलना में बेहतर हुआ है। शहर में करीब 99.3 प्रतिशत बच्चे पास हुए हैं। 10वीं में करीब 74 प्रतिशत से अधिक स्टूडेंट्स का स्कोर 90 प्रतिशत से अधिक है। 98 से 100 प्रतिशत के बीच अंक प्राप्त करने वाले स्टूडेंट्स की संख्या करीब 3 प्रतिशत हैं। इस साल 10वीं की परीक्षा में शहर के 4045, स्टूडेंट्स शामिल हुए थे। इसमें से 2055 लड़के, 1990 लड़कियां रहीं।

# मल्लिकार्जुन खड़गे चुनेंगे कर्नाटक का नया मुख्यमंत्री

## बैठक में विधायकों ने लिया फैसला

AGENCY BENGALURU : कर्नाटक में धमाकेदार जीत के बाद कांग्रेस में मुख्यमंत्री पद को लेकर मंथन जारी है। इस पद के लिए नाम तय करने के लिए रविवार की शाम विधायक दल की बैठक हुई। जिसमें सर्वसम्मति से कांग्रेस विधायक दल के नेता के चयन को एआईसीसी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे के निर्णय पर छोड़ने का फैसला किया। बैठक के दौरान शिवकुमार-सिद्धारमैया के समर्थक होटल के बाहर नारेबाजी करते रहे। शिवकुमार ने कहा- कुछ लोग कहते हैं कि सिद्धारमैया के साथ मेरे मतभेद हैं, लेकिन हमारे बीच कोई मतभेद नहीं है। मैंने पार्टी के लिए कुबार्नी दी और सिद्धारमैयाजी के साथ खड़ा हुआ।

**मुख्यमंत्री पद की दौड़ में सिद्धारमैया और डीके शिवकुमार सबसे आगे**

कर्नाटक में मुख्यमंत्री पद की दौड़ में दो नाम सबसे आगे चल रहे हैं। एक प्रदेश अध्यक्ष डीके शिवकुमार और दूसरा सिद्धारमैया। बेंगलुरु में विधायक दल की बैठक से पहले कांग्रेस पर्यवेक्षकों ने दोनों नेताओं के साथ बैठक की। दिल्ली लौटने के बाद कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने दिल्ली लौटने के साथ ही कहा था कि अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी (एआईसीसी) के पर्यवेक्षक कर्नाटक में पार्टी विधायकों की राय से आलाकमान को अवगत करायेंगे और इसके बाद मुख्यमंत्री के चयन को लेकर फैसला किया जायेगा।

**शिवकुमार ने संकेत दिया कि वह मुख्यमंत्री पद की दौड़ में हैं**

कांग्रेस की कर्नाटक इकाई के अध्यक्ष डीके शिवकुमार ने संकेत दिया कि वह मुख्यमंत्री पद की दौड़ में हैं। उन्होंने कहा कि वह सभी को साथ लेकर चले और कभी भी अपने लिये कुछ नहीं मांगा। उन्होंने अपने और पूर्व मुख्यमंत्री सिद्धारमैया के बीच मतभेदों की खबरों को भी खारिज कर दिया। दूसरी ओर सिद्धारमैया को भी मुख्यमंत्री पद के लिए प्रबल दावेदार माना जा रहा है। दोनों नेताओं के समर्थक भी लगातार उनके समर्थन में नारेबाजी कर रहे हैं। दोनों दिग्गज नेताओं को लेकर पोस्टर भी जारी किया गया, जिसमें समर्थकों ने अपने-अपने नेता को अगला मुख्यमंत्री बताया।

### कर्नाटक में कांग्रेस की धमाकेदार जीत

कर्नाटक में 224-सदस्यीय विधानसभा के लिए 10 मई को हुए चुनाव में कांग्रेस ने शानदार जीत हासिल करते हुए 135 सीट जीतीं, जबकि सत्तारूढ़ भाजपा और पूर्व प्रधानमंत्री एच डी देवेगौड़ा की अगुवाई में जनता दल (सेक्युलर) ने क्रमश: 66 और 19 सीट जीतीं।

# तपती गर्मी के बीच आज से छायेंगे आंशिक बादल

PHOTON NEWS RANCHI : लगातार बढ़ती गर्मी के बाद आम जनजीवन अस्त व्यस्त दिख रहा है। रविवार को भी तेज धूप व उमस भरी गर्मी से लोग बेहाल दिखें। रविवार को 36.6 डिग्री सेल्सियस तापमान दर्ज किया गया। इस बीच दिन में सड़कों पर अधिकतर समय सन्नाटा छाया रहा, जबकि शाम होने के बाद लोग घरों से बाहर वीकेंड मनाने निकले। बीते दस दिन से हीट वेव का असर दिख रहा है, तापमान में तीन से चार डिग्री सेल्सियस तक बढ़ोतरी हुई है। सुबह 10 बजते ही तेज धूप का असर दिखने लगता है। गर्म पछुआ हवा के साथ तेज धूप ने लोगों का जीना मुहाल कर दिया है। हालांकि मौसम विज्ञान केंद्र रांची के पूवार्नुमान के अनुसार अगले चार पांच दिनों तक कहीं कहीं आंशिक बादल के छाए रहने की भी संभावना जताई गई है। लेकिन तापमान में कुछ खास बदलाव देखने को नहीं मिलेगा। वहीं दूसरी ओर बंगाल की दक्षिण पूर्व खाड़ी के ऊपर गहरा दबाव एक चक्रवाती तूफान मोचा में बदल गया है। मौसम विभाग के अनुसार सोमवार से गर्मी से थोड़ी राहत मिल सकती है, राजधानी रांची में 15 से 20 मई तक आंशिक बादल छाये रहेंगे। राज्य में अगले 24 घंटों के दौरान अधिकतम तापमान में कोई बड़े बदलाव की संभावना नहीं है। वहीं 16 मई को राज्य के उत्तर-पूर्वी भागों में कहीं-कहीं गर्जन के साथ हल्के दर्जे की वर्षा की संभावना है। 18 मई को राज्य के पूर्वी भागों में कहीं-कहीं गर्जन के साथ हल्के दर्जे की वर्षा की संभावना है।

## सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल ने 'बुल्स आई' को सफलतापूर्वक हिट किया, नौसेना की मारक क्षमता बढ़ी

# NAVY ने पहली बार GUIDED DESTROYER 'मोरमुगाओ' से दागी BRAHMOS MISSILE

AGENCY NEW DELHI : भारतीय नौसेना ने पहली बार गाइडेड मिसाइल डिस्ट्रॉयर आईएनएस मोरमुगाओ से ब्रह्मोस सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल की फायरिंग करके 'बुल्स आई' को सफलतापूर्वक हिट किया। स्वदेशी जहाज और शक्तिशाली ब्रह्मोस ने एक साथ प्रदर्शन करके समुद्र में भारत की आत्मनिर्भरता और भारतीय नौसेना की मारक क्षमता के एक और चमकदार प्रतीक को चिह्नित किया है। नौसेना प्रवक्ता कमांडर विवेक मधवाल ने बताया कि भारतीय नौसेना ने स्वदेशी बूस्टर के साथ ब्रह्मोस मिसाइल के एंटी-शिप वर्जन का सफल परीक्षण किया है, जो भारत की आत्मनिर्भरता के प्रति नौसेना की प्रतिबद्धता को मजबूत करता है। बयान में आगे कहा गया है कि मिसाइल का परीक्षण गाइडेड मिसाइल डिस्ट्रॉयर वारशिप आईएनएस मोरमुगाओ से किया गया है। मिसाइल में स्वदेशी सामग्री बढ़ाने पर ब्रह्मोस एयरोस्पेस लगातार काम कर रहा है। आईएनएस मोरमुगाओ की डिजाइन भारतीय नौसेना के स्वदेशी संगठन ने तैयार की है। इसका निर्माण मझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड मुंबई ने किया है। आधुनिक हथियारों से लैस परमाणु, जैविक और रासायनिक युद्ध में सक्षम 'मोरमुगाओ' जहाज भारतीय नौसेना की नई ताकत है, जिसे ब्रह्मोस सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल से लैस किया जाना है। इसे रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह की मौजूदगी में पिछले साल 18 दिसंबर को मुंबई के नौसेना डॉकयार्ड में नौसेना के बेड़े में शामिल किया गया था। यह प्रोजेक्ट 15बी के तहत बनाया गया स्टील्थ गाइडेड मिसाइल विध्वंसक का दूसरा जहाज है। इससे पहले भारतीय नौसेना ने 05 मार्च को आईएनएस कोलकाता से अरब सागर में स्वदेशी ब्रह्मोस मिसाइल का इसी जहाज से सफल परीक्षण किया था। उस समय भी इस मिसाइल ने सटीक निशाना लगाकर अपने लक्ष्य को सफलतापूर्वक निशाना बनाया था।

आईएनएस मोरमुगाओ से ब्रह्मोस सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल की फायरिंग का दृश्य

KHUNTI कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय में हुआ करियर काउंसिलिंग का आयोजन

# हर मुकाम तक पहुंचा सकती है मजबूत इच्छाशक्ति : अर्जुन मुंडा

PHOTON NEWS KHUNTI

बिरसा कॉलेज के बहुद्देशीय भवन में रविवार को जिले के सभी कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय की 8वीं, 9वीं 11वीं एवं 12 वीं की छात्राओं लिए कैरियर काउंसिलिंग का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि और केंद्रीय मंत्री अर्जुन मुंडा ने कहा कि जिले के छात्र-छात्राओं के लिए स्वर्णिम अवसर है। पैनल चर्चा सत्र में विशिष्ट वक्ताओं की उपस्थिति से बहुत नई बातें सीख सकते हैं। साथ ही आपकी जिज्ञासाओं का सही उत्तर मिल पाएगा। उन्होंने कहा कि खूंटी जिले को राष्ट्रीय स्तर पर सराहा जा रहा है। सपनों की उड़ान कार्यक्रम से जुड़ी 10 छात्राओं ने जेईई मेंस में सफलता पाई है। छात्राओं को प्रोत्साहित करते हुए अर्जुन मुंडा ने कहा कि मजबूत

कार्यक्रम को संबोधित करते केंद्रीय मंत्री अर्जुन मुंडा। ● द फोटोन न्यूज

इच्छाशक्ति हर मुकाम तक पहुंचा सकती है।

अर्जुन मुंडा की पत्नी मीरा मुंडा ने सभी माताओं को मातृ दिवस की शुभकामनाएं दी और कहा कि ऐसे आयोजन हर्षित करते हैं। उन्होंने कहा कि वर्तमान में आवश्यकता है कि हमारी छात्राएं अपनी प्रतिभा को समझें और अपने इच्छा अनुसार अपने करियर का चयन करें। यदि छात्राएं आत्मविश्वास जागृत करें, तो अपने उज्ज्वल भविष्य की ओर अग्रसर हो सकती हैं।

उपायुक्त ने छात्राओं से सीधी बात कर उन्हें बेहतर शिक्षा की दिशा में अग्रसर करने की बात कही। साथ ही सुझाव दिया कि अपना लक्ष्य निर्धारण करते हुए पढ़ाई करें। उन्होंने अपने जीवन की संघर्ष गाथा भी विद्यार्थियों से साझा की और कहा कि कैसे संघर्ष करते हुए छोटे से शहर से आगे बढ़े। पुलिस अधीक्षक ने कहा कि मेहनत के बल पर आप किसी भी क्षेत्र में ऊंचाईयों तक पहुंच सकते हैं। उन्होंने अपने जीवन के अनुभवों को छात्राओं को बताया।

कार्यक्रम के दौरान प्रतिभागी छात्र-छात्राओं की सिकल सेल अनीमिया की जांच की गई।

## कर्नाटक विभानसभा चुनाव में कांग्रेस की जीत पर भाकपा माले नेताओं ने दी बधाई

RAMGARH : भाकपा माले की रविवार को भुरकुंडा में बैठक हुई। बैठक में कर्नाटक विधानसभा चुनाव में कांग्रेस की जीत पर हर्ष जताते हुए जनता के प्रति आभार जताया गया। मौके पर भाकपा माले के वामपंथी युवा नेता सह ऑल झारखंड रैयत विस्थापित प्रभावित मोर्चा के केंद्रीय अध्यक्ष डॉ आशीष कुमार व केंद्रीय महासचिव नरेश नायक कांग्रेस की शानदार जीत पर कहा कि यह भाजपा-आरएसएस ताकत की करारी हार है। उन्होंने जीत के लिए राहुल गांधी, प्रियंका गांधी, कांग्रेस पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष मलिकार्जुन खड़गे और खास तौर पर कर्नाटक की जनता को बधाई देते हुए उनके प्रति आभार जताया है। मौके पर डॉ. आशीष कुमार ने कहा कि भाजपा के लिए यह एक ट्रेलर है। 2024 के लोकसभा चुनाव में भाजपा का पूरे देश से सूपड़ा साफ होगा। उन्होंने कहा कि केंद्र में कांग्रेस की सरकार बनना तय है। महागठबंधन की सरकार बनेगी।

## BRIEF NEWS

### भाजपा की महिला सांसदों को पत्र लिखेंगी धरनारत पहलवान

NEW DELHI : बृजभूषण शरण सिंह के खिलाफ पिछले 22 दिन से दिल्ली के जंतर मंतर पर धरनारत पहलवान अब भाजपा की महिला सांसदों को पत्र लिखकर समर्थन की मांग करेंगे। जंतर-मंतर पर पत्रकार वार्ता को संबोधित करते हुए पहलवानों की मुहिम का नेतृत्व कर रहीं विनेश फोगाट ने आज इसकी घोषणा की। उन्होंने कहा कि भाजपा की किसी महिला सांसद ने अभी तक उनसे ना बातचीत की है और ना ही उनके अभियान को समर्थन दिया है। इसी के चलते अब हमने योजना बनाई है कि महिला भाजपा नेताओं को पत्र लिखकर समर्थन की मांग करेंगे। उन्होंने कहा कि हम एक खुला पत्र उनको लिखने जा रहे हैं। इस पत्र को वह ईमेल और व्यक्तिगत तौर पर उन्हें सौंपेंगे। वहीं पहलवान साक्षी मलिक ने लोगों से अपील की कि वे समय निकालकर उनके समर्थन में आगे आएं।

### संजय राऊत के खिलाफ नासिक में मामला दर्ज

MUMBAI : शिवसेना (उद्धव बालासाहेब ठाकरे) पार्टी के नेता और राज्यसभा सदस्य संजय राऊत के खिलाफ नासिक जिले के मुंबई नाका पुलिस स्टेशन में राज्य सरकार के विरुद्ध बयान जारी करने का मामला दर्ज किया गया है। इस मामले की गहन छानबीन होने से इस मामले से संजय राऊत की मुसीबतें बढ़ सकती हैं। दरअसल, संजय राऊत पिछले सप्ताह नासिक के शासकीय गेस्ट हाउस में ठहरे थे। उसी समय सुप्रीम कोर्ट ने राज्य सरकार के बारे में अपना फैसला सुनाया था। संजय राऊत ने सुप्रीम कोर्ट के फैसले पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा था कि राज्य सरकार अपात्र विधायकों के बल पर है। सुप्रीम कोर्ट ने इन सभी पर कार्रवाई करने का आदेश विधानसभा अध्यक्ष को दिया है, इसलिए यह सरकार असंवैधानिक है। संजय राऊत ने उस समय अधिकारियों से अपील की थी कि वे इस असंवैधानिक सरकार की नियमावली का पालन न करें। संजय राऊत के इसी बयान पर नासिक के मुंबई नाका पुलिस स्टेशन में धारा 505 के तहत मामला दर्ज किया गया है। इस मामले की गहन छानबीन जारी है।

### अमित शाह विधायी प्रारूपण पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आज करेंगे उद्घाटन

NEW DELHI : केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह सोमवार यानी 15 मई को राजधानी में विधायी प्रारूपण पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन करेंगे। कार्यक्रम का आयोजन संवैधानिक और संसदीय अध्ययन संस्थान (आईसीपीएस) की ओर से लोकतंत्र के लिए संसदीय अनुसंधान और प्रशिक्षण संस्थान (प्राइड) के सहयोग से किया जा रहा है। कार्यक्रम का उद्देश्य संसद, राज्य विधानसभाओं, विभिन्न मंत्रालयों, वैधानिक निकायों और अन्य सरकारी विभागों के अधिकारियों के बीच विधायी प्रारूपण के सिद्धांतों और प्रथाओं की समझ पैदा करना है। विधायी प्रारूपण का समाज और राज्य के कल्याण के लिए लागू की गई नीतियों और विनियमों की व्याख्या पर एक बड़ा प्रभाव पड़ता है। चूंकि विधायी प्रारूपकार कानून बनाने के लिए उत्तरदायी होते हैं, जो लोकतांत्रिक शासन को बढ़ावा देता है और कानून के शासन को प्रभावी बनाता है, इसलिए यह आवश्यक है कि उन्हें अपने कौशल को तेज करने के लिए समय-समय पर प्रशिक्षण दिया जाए। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम उनकी क्षमता निर्माण में सहायता करेगा।

### 'मन की बात' के विषयों पर आधारित प्रदर्शनी देखने पहुंचे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी

NEW DELHI : प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी रविवार को राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय (एनजीएमए) में आयोजित एक दिलचस्प प्रदर्शनी जन शक्ति को देखने पहुंचे, जहां ह्यमन की बातह्ल में शामिल विषयों को भारत के शीर्ष कलाकारों की ओर से बनाई गई कलाकृतियां प्रदर्शित की गई हैं। मन की बात में शामिल विषयों जैसे स्वच्छता, जल संरक्षण, कृषि, अंतरिक्ष, पूर्वोत्तर, नारी शक्ति, योग, आयुर्वेद आदि पर भारत के शीर्ष कलाकारों द्वारा बनाई कलाकृतियों को जन शक्ति शीर्षक से आयोजित प्रदर्शनी में शामिल किया गया है। मनु और माधवी पारेख, अतुल डोडिया, परेश मैती, इरन्ना जीआर, जगन्नाथ पंडा समेत देश के शीर्ष कलाकारों ने इसमें अपना योगदान दिया है। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा, मैं उन सभी कलाकारों को बधाई देता हूं, जिन्होंने अपनी रचनात्मकता से प्रदर्शनी को समृद्ध किया है। प्रदर्शनी का आयोजन संस्कृति मंत्रालय ने मासिक रेडियो कार्यक्रम ह्यमन की बातह्ल की 100वीं कड़ी के मौके पर किया है। इसमें 12 प्रमुख कलाकारों की ओर से निर्मित कलाकृतियों की प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शनी राजधानी स्थित राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय में लगाई है। उल्लेखनीय है कि ह्यमन की बातह्ल कार्यक्रम तीन अक्टूबर 2014 को शुरू किया गया था और हर महीने के आखिरी रविवार को सुबह 11 बजे आकाशवाणी (एआईआर) और दूरदर्शन (डीडी) नेटवर्क पर प्रसारित किया जाता है। 30 मिनट के कार्यक्रम की 100वीं कड़ी 30 अप्रैल को प्रसारित की गई थी।

### 'श्री अन्न' प्रत्येक व्यक्ति की थाली में पहुंचे, इस सोच को साकार करना होगा : कैलाश चौधरी

DEHRADUN : केन्द्रीय कृषि राज्य मंत्री कैलाश चौधरी ने रविवार को यहां कहा कि प्रत्येक व्यक्ति के थाली में 'श्री अन्न' पहुंचे, इस सोच को साकार करने के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के विशेष प्रयासों से अंतरराष्ट्रीय मिलेट्स वर्ष मनाया जा रहा है। 'श्री अन्न' को मोटा अनाज कहकर उपहास उड़ाया गया, यह अन्न व्यक्ति को स्वस्थ करने के साथ किसानों और युवाओं को रोजगार देकर जीवन में खुशहाली लाएगा। रविवार को हाथीबड़कला स्थित सर्वे ऑफ इण्डिया, हाथीबड़कला, स्थित सर्वे ग्राउण्ड में चार दिवसीय 'श्री अन्न' महोत्सव के दूसरे दिन केन्द्रीय कृषि राज्य मंत्री कैलाश चौधरी ने बतौर मुख्य अतिथि यह बातें कहीं। इस दौरान उन्होंने कहा कि 'श्री अन्न' प्रत्येक व्यक्ति की थाली में पहुंचे। इसके लिए उत्तराखंड के कृषि मंत्री गणेश जोशी का प्रयास सराहनीय है। केन्द्रीय कृषि राज्य मंत्री चौधरी ने कहा कि प्रधानमंत्री विश्व कल्याण के उद्देश्य को लेकर काम कर रहे हैं। 'श्री अन्न' कुपोषण का समाधान के लिए पौष्टिक आहार है। प्रधानमंत्री मोदी के 2018 के प्रस्ताव का ही प्रभाव है कि 2023 को मिलेट्स वर्ष के रूप में घोषित किया गया है। आने वाले समय में हर व्यक्ति का स्वास्थ्य बेहतर होगा और किसानों को लाभ मिलेगा। मिलेट्स को। विश्व में सबसे ज्यादा उत्पादन हिन्दुस्तान में होता है। मिलेट्स अनाज से कई प्रकार की वस्तुएं बनाई जा रही हैं। पांच हजार स्टार्टअप में 2 हजार 'श्री अन्न' के उत्पाद बनाये जा रहे हैं। केन्द्रीय कृषि राज्य मंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के पक्षधर हैं। प्राकृतिक खेती का उत्तराखंड में रकबा बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति की थाली में जब 'श्री अन्न' पहुंचेगा तो स्वस्थ व्यक्ति के साथ किसानों को भी खेती से आर्थिक लाभ बढ़ेगा। उन्होंने कहा कि गाय के गोबर और गोमूत्र में औषधीय गुण हैं। केंद्रीय मंत्री ने राज्य के कृषि मंत्री से जिला और ब्लॉग में किसानों को लार्ज सर्टिफिकेट घोषित करने के लिए आग्रह किया, जिससे किसानों की आर्थिकी बढ़ाने में कारगर साबित होगा। पहले की सरकार किसानों का हित नहीं सोचा, अटल बिहारी ने सोचा, पहले खाली बात होती थीं। अब कृषि का बजट 1 लाख 25 हजार करोड़ और 60 हजार करोड़ किसान सम्मान निधि रखा गया है। किसान मंडी में फसल न बेचकर व्यापारी बने। यह प्रधानमंत्री की सोच है। पुरानी नहीं नई टेक्नोलॉजी से खेती में गति आई है। प्रधानमंत्री ने ड्रोन से खेती की छूट दी है। सरकार 40 फीसद सामान्य लोगों को सब्सिडी, महिला 50 और सरकारी संस्था 100 फीसद सब्सिडी मिलती है। किसान आज ड्रोन से छिड़काव कर रहा है। पौध में कहां-कहां कीड़ा लगा है। इसके लिए उसकी पहचान करने का झंझट नहीं रह गया है। साथ ही वह कम समय में खेती के कार्य को पूरा कर सकता है। आज अच्छे किसान की चर्चा नहीं होती, इसके चलते युवा साथी भटकाव की ओर चले जाते हैं। भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के लिए किसान को आत्मनिर्भर होना होगा। उन्होंने कहा कि हर कहानी में गरीब किसान जैसे शब्द की बात होती है, अब इसे समाप्त करना है।

## सावित्री बाई फुले किशोरी समृद्धि योजना में लूट की हो उच्चस्तरीय जांच : दीपक प्रकाश

PHOTON NEWS RANCHI

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष एवं सांसद दीपक प्रकाश ने रविवार को सावित्री बाई फुले किशोरी समृद्धि योजना में हुए व्यापक घोटाले को लेकर मुख्यमंत्री को कटघरे में खड़ा किया। प्रकाश ने कहा कि हेमंत सरकार में बच्चियों की न जान सुरक्षित है, न इज्जत और न ही उनके पैसे सुरक्षित हैं।

किशोरी समृद्धि योजना में राज्यभर में हुए घोटाले के संबंध में मीडिया में छपी रिपोर्ट पर प्रकाश ने कहा कि जहां की अनियमितताएं आज उजागर हुई हैं। यह मुख्यमंत्री के विधानसभा क्षेत्र का जिला है। जिस क्षेत्र की जनता ने हेमंत सोरेन को मुख्यमंत्री के लायक बनाया उस जिले,

मीडिया को संबोधित करते दीपक प्रकाश। ● द फोटोन न्यूज

विधानसभा क्षेत्र के पदाधिकारी इतने दुस्साहसी और भ्रष्ट हैं तो फिर पूरे राज्य की क्या स्थिति होगी।

उन्होंने कहा सावित्री बाई फुले किशोरी समृद्धि योजना की लूट में जिस पदाधिकारी का नाम आ रहा वो आज जमीन घोटाला मामले में ईडी की कार्रवाई के तहत जेल में है। प्रकाश ने कहा कि बिना सत्ता के संरक्षण के इस प्रकार के घोटाले नहीं हो सकते। किशोरी समृद्धि योजना का घोटाला केवल एक जिले में नही बल्कि सभी जिलों में हुए हैं। इसलिए इसकी उच्चस्तरीय जांच होनी चाहिए।

## BABULAL MARANDI ने जमीन घोटालों का खुलासा करने के लिए मुख्यमंत्री को लिखा पत्र

### भूमि घोटाले की सीबीआई या आयोग गठित कर जांच कराने की मांग

PHOTON NEWS RANCHI

भाजपा विधायक दल के नेता बाबूलाल मरांडी ने मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन को रविवार को पत्र लिखा है। उन्होंने राज्य में जमीन लूट पर चिंता जताई है। साथ ही कहा है कि राज्य गठन से लेकर अबतक हुए भूमि घोटाले की सीबीआई या फिर हाई कोर्ट के सीटिंग जज की अध्यक्षता में आयोग गठित कर जांच कराई जाए।

मरांडी ने कहा है कि जमीन घोटाले में ईडी की जांच लगातार आगे बढ़ रही है। इसमें हैरान करने वाली जानकारियां सामने आ रही हैं। रांची ही नहीं, बल्कि राज्य के कई जिलों में ऐसे कई

बाबूलाल मरांडी की फाईल फोटो।

जमीन माफिया सक्रिय हैं जिन्होंने सरकारी सिस्टम में कमी का फायदा उठाते हुए सिंडिकेट बनाकर इन कामों को अंजाम दिया है। साथ ही विरोध में उठने वाली हर आवाज को हर स्तर पर दबा दिया।

बाबूलाल मरांडी ने गिरिडीह का उदाहरण देते हुए कहा कि यहां तो जमीन माफिया ने विरोध करने वाले एक व्यक्ति को धारा 107 में चार महीने जेल में रखवा दिया। ऐसे में भला कौन दूसरा आदमी इनके खिलाफ आवाज उठाने की हिम्मत करेगा। झारखंड में इस महाघोटाला का पूरा पदार्फाश करना अकेले ईडी के बस की बात नहीं है। ऐसे में सीएम राज्य विभाजन से लेकर अबतक के सारे जमीन हस्तांतरण, म्यूटेशन और जमीन कब्जा करने-कराने के मामलों की जांच सीबीआई को सौंप दें या फिर आयोग बनाकर जांच कराने का आदेश दे।

## कर्नाटक से दिल्ली लौटे खड़गे, कहा- पहली कैबिनेट में ही पूरे करेंगे 5 वादे

AGENCY NEW DELHI

कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे रविवार को कर्नाटक में पार्टी को मिली जीत के बाद दिल्ली पहुंचे, जहां पार्टी कार्यकर्ताओं ने उनका भव्य स्वागत किया। उन्होंने कहा कि पार्टी राज्य में सुशासन लाएगी और उसे नंबर-वन राज्य बनाने के लिए काम करेगी। खड़गे ने आश्वासन दिया कि पार्टी अपने पांच वादों को सरकार बनते ही पूरा करेगी।

कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे दिल्ली स्थित अपने आवास पर पहुंचे, जहां बड़ी संख्या में पार्टी कार्यकताओं ने उनका स्वागत किया। इस दौरान कांग्रेस कार्यकताओं ने पार्टी, पार्टी अध्यक्ष और राहुल गांधी के समर्थन में नारे लगाए।

इसी बीच खड़गे ने पत्रकारों से बातचीत में कहा कि पार्टी ने तीन

मल्लिकार्जुन खड़गे का स्वागत करते पार्टी कार्यकर्ता।

केन्द्रीय पर्यवेक्षक भेजें हैं। वे बेंगलुरु में कांग्रेस विधायक दल की बैठक में शामिल होंगे। वहां होने वाले निर्णय के बारे में पर्यवेक्षक पार्टी नेतृत्व को जानकारी देंगे, जिसके बाद पार्टी नेतृत्व अपना निर्णय लेगा।

उन्होंने कहा कि पार्टी ने कर्नाटक में एकजुट होकर चुनाव लड़ा है। आगे भी एकजुटता के साथ सरकार बनेगी। इसमें भी सर्वसम्मति का ध्यान रखा जाएगा और ठीक से सरकार चलाई जायेगी।

कांग्रेस अध्यक्ष ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी को जनता ने नकार दिया है। राज्य की जनता महंगाई, बेरोजगारी और भ्रष्टाचार से त्रस्त थी। इस वजह से 35 साल बाद पार्टी को इनता बड़ा बहुमत मिला। पार्टी ने अपने अभियान के दौरान पांच गारंटी दी थी। हम इन पांचों गारंटी को पहले ही दिन राज्य कैबिनेट की बैठक में निर्णय लेकर पूरा करेंगे। यह पांच गारंटी थी- गृह ज्योति, गृह लक्ष्मी, अन्ना भाग्य, युवा निधि और शक्ति योजना।

उल्लेखनीय है कि गृह ज्योति योजना के तहत कर्नाटक के सभी घरों को 200 यूनिट फ्री बिजली दी जाएगी। गृह लक्ष्मी स्कीम के जरिए पार्टी सभी परिवार की महिला प्रमुखों को दो हजार हजार रुपये की मासिक सहायता प्रदान करेगी। अन्ना भाग्य योजना के जरिए बीपीएल परिवारों को हर महीने 10 किलो अनाज दिया जाएगा। बेरोजगार स्नातकों को दो साल के लिए 3,000 रुपये प्रति माह और बेरोजगार डिप्लोमा धारकों को 1,500 रुपये प्रति माह दिए जायेंगे।

## उपराष्ट्रपति ने किया नाथूराम मिर्धा की प्रतिमा का अनावरण

AGENCY NAAGAUR

उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने ग्रामीण किसान युवाओं में बढ़ती नशाखोरी और क्षणिक सरल लाभ के लिए कानून के उल्लंघन की प्रवृत्ति पर गहरी चिंता व्यक्त करते हुए आगाह किया कि कानून के साथ खिलवाड़ करना न सिर्फ उनके लिए महंगा पड़ेगा बल्कि ग्रामीण किसान समुदाय को भी बदनाम करेगा। उन्होंने कहा कि कानून से ऊपर कोई नहीं होता, देर सबेर कानून का शिकंजा अवश्य कसेगा।

उपराष्ट्रपति रविवार को नागौर के मेड़ता सिटी में स्वर्गीय नाथूराम मिर्धा की प्रतिमा के अनावरण के अवसर पर बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि किसान कौम के लिए आरक्षण की लड़ाई कठिन थी जिसमें स्वयं उनका भी योगदान रहा लेकिन आज उसके सकारात्मक परिणाम देखने को मिल रहे हैं।

उन्होंने कहा कि कृषि, ग्रामीण विकास और सरकारी योजनाओं का लाभ किसानों का अधिकार है। धनखड़ ने किसान युवाओं से कृषि और ग्रामीण विकास के मार्ग पर चलने का आव्हान किया।

कुछ वर्गों द्वारा पुराने ट्रैक्टरों को हटाए जाने का विरोध किए जाने का उल्लेख करते हुए उपराष्ट्रपति ने कहा कि किसानों ने सदैव परिवर्तन को आगे बढ़ कर अपनाया है। हमें चाहिए कि आज दुनिया में जो हो रहा है हम उससे भी आगे बढ़ें। भारत के आर्थिक विकास में कृषि के महत्व की चर्चा करते हुए उपराष्ट्रपति ने कहा कि विश्व में भारत की आर्थिक प्रगति का डंका किसानों के पसीने के कारण ही बज रहा है।

उपराष्ट्रपति और उनकी पत्नी डॉ. सुदेश धनखड़ आज सुबह राजस्थान की एक दिन की यात्रा पर जयपुर पहुंचे। वहां से उपराष्ट्रपति पुष्कर गए जहां उन्होंने ऐतिहासिक ब्रह्मा मंदिर, श्रीजाट शिव मंदिर के दर्शन किए तथा वहां स्वर्गीय नाथूराम मिर्धा की पहल पर बने विश्राम गृह का दौरा किया।

### जयंत पाटिल ने राकांपा नेताओं की बैठक के बाद संयुक्त पत्रकार वार्ता को किया संबोधित, कहा

# लोकसभा और विधानसभा चुनाव मिलकर लड़ेगी महाविकास आघाड़ी : JAYANT PATIL

AGENCY MUMBAI

राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) के प्रदेश अध्यक्ष जयंत पाटिल ने कहा कि महाराष्ट्र में आगामी लोकसभा और विधानसभा चुनाव महाविकास आघाड़ी एक साथ मिलकर लड़ेगी। इसके बहुत जल्द तीनों पार्टियों की बैठक होगी और सीटों का बंटवारा तय किया जाएगा।

जयंत पाटिल रविवार को मुंबई में राकांपा नेताओं की बैठक के बाद संयुक्त पत्रकार वार्ता को संबोधित कर रहे थे। इस मौके पर कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष नाना पटोले और शिवसेना नेता संजय राऊत भी उपस्थित थे। पाटिल ने बताया कि कर्नाटक चुनाव परिणाम के बाद महाविकास आघाड़ी के

कार्यक्रम में उपस्थित जयंत पाटिल व अन्य।

नेताओं की एक बैठक राकांपा अध्यक्ष शरद पवार की अध्यक्षता में हुई। इस बैठक में शिवसेना (उद्धव बालासाहेब ठाकरे) पार्टी के अध्यक्ष उद्धव ठाकरे, कांग्रेस नेता नाना पटोले, अशोक चव्हाण , जीतेंद्र आव्हाड, छगन भुजबल, अजीत पवार, सुप्रिया सुले, सुभाष देसाई आदि आला नेता उपस्थित थे। पाटिल ने बताया कि इस बैठक में कर्नाटक चुनाव, सुप्रीम कोर्ट के निर्णय के बाद विधानसभा अध्यक्ष के कामकाज, महाराष्ट्र में चल रहे भ्रष्टाचार सहित कई मुद्दों पर चर्चा की गई। तीनों मुख्य पार्टियों के नेताओं ने महाराष्ट्र में आगे होने वाले लोकसभा और विधानसभा एक साथ मिलकर लड? का निर्णय लिया है। उन्होंने कहा कि महाविकास आघाड़ी की होने वाली सभाओं को फिलहाल तेज गरमी की वजह स्थगित किया गया है। वह सभी सभाएं जून महीने में होंगी। जयंत पाटिल ने कहा कि कर्नाटक की जनता से ज्यादा महाराष्ट्र की जनता परेशान है। राज्य की जनता को सुप्रीम कोर्ट के निर्णय को स्पष्ट रूप से समझाया जाएगा।

इस मौके पर नाना पटोले ने कहा कि कर्नाटक की जनता ने मोदी-शाह को पूरी तरह नकार दिया है। कर्नाटक में सिर्फ 40 फीसदी कमीशन चलता था, लेकिन महाराष्ट्र में सौ फीसदी कमीशनखोरी हो रही है। सुप्रीम कोर्ट के स्पष्ट आदेश के बाद भी विधानसभा अध्यक्ष कार्रवाई नहीं कर रहे हैं। मुख्यमंत्री और उपमुख्यमंत्री ने भी कर्नाटक के जैसे ही विधायकों की तोडफोड़ कर सरकार बनाया है, जनता इसका करारा जवाब देने की तैयारी कर चुकी है।

पत्रकार वार्ता में शिवसेना नेता संजय राऊत ने कहा कि आज महाविकास आघाड़ी के नेताओं की ऐतिहासिक बैठक हुई है। कर्नाटक में कांग्रेस ही नहीं पूरा देश जीता है। यह जीत आगामी चुनाव तक चलती रहेगी। महाविकास आघाड़ी में नाराजगी की भ्रामक खबरें भाजपा की ओर से ही फैलाई जा रही हैं, जो पूरी तरह से गलत हैं। मीडिया को उन खबरों की छानबीन करना चाहिए।

BRIEF NEWS

## झारखंड के 72 पुलिसकर्मियों को एसीपी और एमएसीपी का मिलेगा लाभ

**RANCHI :** राज्य के 72 पुलिसकर्मियों को एश्योर्ड करियर प्रोग्रेस (एसीपी) और मॉडिफाइड एश्योर्ड करियर प्रोग्रेस (एमएसीपी) का लाभ मिलेगा। केंद्रीय चयन परिषद की बैठक में हवलदार रैंक के 89 पुलिसकर्मियों के नाम पर चर्चा हुई। इनमें राज्य के 72 पुलिसकर्मियों को एसीपी और एमएसीपी योजना के लाभ की स्वीकृति दी गयी। बाकी 17 पुलिसकर्मियों को अन्य कारणों के वजह से एसीपी और एमएसीपी योजना का लाभ नहीं मिला। उल्लेखनीय है कि पुलिसकर्मियों को प्रोन्नति के पूर्व अनिवार्य प्रोन्नति प्रशिक्षण कार्यक्रम में शामिल होने का प्रावधान किया गया है।

## 18 मई से 19 जून तक चलेगी कटिहार-रांची समर स्पेशल ट्रेन

**RANCHI :** गर्मी में रेल यात्रियों को सुविधा देने के लिए समर स्पेशल ट्रेन संख्या 05761 कटिहार से रांची के 18 मई से 29 जून तक प्रत्येक गुरुवार को चलेगी। ट्रेन कटिहार से दोपहर दो बजे खुलेगी। बेगूसराय, जसीडीह, धनबाद, बोकारो, मुरी होते हुए ट्रेन सुबह 3.40 बजे रांची स्टेशन पहुंचेगी। रांची-कटिहार समर स्पेशल चलायी जायेगी। उल्लेखनीय है कि इसके पहले मालदा डिविजन ने एक मई से छह जोड़ी समर स्पेशल ट्रेनों की सूची जारी की थी।

## हटिया-झारसुगुड़ा एक्सप्रेस ट्रेन 15 से 18 मई तक रद्द रहेगी

**RANCHI :** पश्चिमी सिंहभूम जिले के चक्रधरपुर मंडल के नुआगां स्टेशन पर नॉन इंटरलॉकिंग कार्य किया जायेगा। इस कारण कई ट्रेनों का परिचालन प्रभावित रहेगा। ट्रेन संख्या 18175/18176 हटिया-झारसुगुड़ा-हटिया एक्सप्रेस 15 से 18 मई तक रद्द रहेगी। वहीं, ट्रेन संख्या 18106 जयनगर-राउरकेला 14 और 17 मई को राउरकेला के स्थान पर हटिया तक ही आयेगी। वहीं, ट्रेन संख्या 18105 राउरकेला-जयनगर एक्सप्रेस 16 एवं 18 मई को राउरकेला के स्थान पर हटिया से प्रस्थान करेगी। ट्रेन संख्या 22845 पुणे-हटिया एक्सप्रेस 14 एवं 17 मई को अपने निर्धारित समय से दो घंटे विलंब से पुणे से प्रस्थान करेगी। वहीं, ट्रेन संख्या 13426 सूरत-मालदा टाउन एक्सप्रेस 15 मई को अपने निर्धारित समय से एक घंटा विलंब से सूरत से प्रस्थान करेगी। ट्रेन संख्या 18309 संबलपुर-जम्मूतवी एक्सप्रेस 15, 16 व 18 मई को अपने निर्धारित समय से दो घंटे विलंब से संबलपुर से प्रस्थान करेगी। ट्रेन संख्या 18310 जम्मूतवी-संबलपुर एक्सप्रेस 14 और 16 मई को अपने निर्धारित समय से चार घंटे विलंब से जम्मूतवी से प्रस्थान करेगी। रांची रेल मंडल ने यात्रियों की सुविधा के लिए ट्रेन संख्या 18626/18625 हटिया-पूर्णिया कोर्ट- हटिया एक्सप्रेस व ट्रेन संख्या 13304/13303 रांची-धनबाद इंटरसिटी एक्सप्रेस का ठहराव झालदा स्टेशन पर दिया है।

## लू लगने से बीमार शिक्षक की रिम्स में मौत

**RANCHI :** सिमडेगा जिला के बानो प्रखंड के सोय पंचायत के जीईएल मध्य विद्यालय एल्ला के शिक्षक सुखलाल साहू की रविवार को रिम्स में इलाज के दौरान मौत हो गई। उनकी बेटी स्नेहा ने बताया कि शनिवार की सुबह स्कूल जाने के दौराल लू लगने से वह मूर्छित हुए थे। इलाज के लिए रिम्स लाया गया था, लेकिन पापा का निधन हो गया।

atomy
ATOMY
INDIA
RANCHI TEAM
WARRIOR CENTRE
4th Floor, Shop No. 22, 23, 24
Roshpa Roshpa Tower,
Main Road, Ranchi - 834001
Mob. 9334495776

# ATS की छापेमारी में हत्या में शामिल दो बदमाश गिरफ्तार

**CRIME REPORTER RANCHI:** झारखंड आतंकवाद निरोधक दस्ता (एटीएस) ने रविवार को भोला पांडेय गिरोह के दो शातिर बदमाशों पुंदाग ओपी क्षेत्र के पतरातू निवासी सुभाष कुमार सिंह उर्फ बाघा और मोहम्मद इरशाद को गिरफ्तार किया है। दोनों बीते महीने रामगढ़ जिले के पतरातू में कांग्रेस विधायक अंबा प्रसाद के विधायक प्रतिनिधि राजकिशोर बिदिका बाउरी की हत्या और हर-देव निर्माण फायरिंग मामले में

पुंदाग इलाके में स्थित मकान जहां किराए पर रह रहे थे बदमाश। • फोटोन न्यूज

शामिल थे। एटीएस को गुप्त सूचना मिली थी कि पुंदाग इलाके में गिरोह के दो अपराधी किसी बड़ी घटना को अंजाम देने की फिराक में हैं। जानकारी के अनुसार अब तक की छापेमारी में दो लाख नकदी, सात मोबाइल बरामद किया गया है। इस संबंध में एटीएस की टीम ने दो युवकों और युवती से पूछताछ की। पूछताछ के बाद दोनों युवकों को साथ ले गई है जबकि युवती को छोड़ दिया गया। ये लोग पुंदाग इलाके में स्थित एक मकान में किराये पर रह रहे थे। मकान मालिक का नाम उमेश बताया जा रहा है, जो बिहार के पटना में नगर निगम से रिटायर्ड अधिकारी बताए जा रहे हैं।

उल्लेखनीय है कि रामगढ़ जिले के भुरकुंडा ओपी क्षेत्र के सौंदा बस्ती में बीते 25 फरवरी की रात अज्ञात अपराधियों ने बड़कागांव के विधायक अंबा प्रसाद के विधायक प्रतिनिधि बितका बाउरी की गोली मारकर हत्या कर दी थी।

# नक्सलियों के आज उत्तर भारत बंद को लेकर झारखंड पुलिस अलर्ट पर

**CRIME REPORTER RANCHI:** चतरा में पांच नक्सलियों के मारे जाने के विरोध में भाकपा माओवादी संगठन ने 15 मई को उत्तर भारत बंद का ऐलान किया है। रविवार आधी रात से शुरू होने वाले बंद को देखते हुए पूरे झारखंड में अलर्ट जारी कर दिया गया है। झारखंड पुलिस मुख्यालय ने नक्सल प्रभावित जिलों में विशेष सतर्कता बरतने की हिदायत दी है।

भाकपा माओवादियों के पूर्वी रीजनल ब्यूरो के प्रवक्ता संकेत ने एक बयान जारी कर 15 मई को उत्तर भारत बंद का ऐलान किया है। खुफिया विभाग को सूचना मिली है कि बंद के दौरान माओवादियों ने पुलिस बल पर हमला करने की साजिश रची है। राज्य पुलिस की विशेष शाखा के स्पेशल इंटेलीजेंस ब्यूरो (एसआईबी) के एसपी ने पूरे मामले में राज्य के सभी जिलों के एसपी को विशेष सतर्कता बरतने का निर्देश दिया है। इसे देखते हुए लोहरदगा, चतरा, लातेहार, चाईबासा, खूंटी, पलामू और गढ़वा में विशेष चौकसी बरती जा रही है। उल्लेखनीय है कि भाकपा माओवादियों ने एक बयान जारी कर कहा है कि झारखंड के चतरा के जंगल में नशीला पदार्थ खिलाकर उनके पांच साथियों की हत्या की गई। छत्तीसगढ़ में ड्रोन से बमबारी कर उनके साथियों को मारने के विरोध में 15 मई को संपूर्ण उत्तर भारत में बंद का ऐलान किया गया है।

# मदर्स डे पर कलाकृति स्कूल ऑफ आर्ट्स में प्रतियोगिताएं

अपनी पेंटिंग दिखाते बच्चे। • फोटोन न्यूज

**PHOTON NEWS RANCHI :** कलाकृति स्कूल ऑफ आर्ट्स एवं कलाकृति आर्ट फाउंडेशन द्वारा रविवार को डोरंडा कन्या पाठशाला प्रांगण में मदर्स डे का आयोजन किया गया। इस अवसर पर माताओं के लिए विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गयीं। माताओं ने अपने बच्चों के साथ मिल कर भाग लिया। मोस्ट क्रिएटिव मदर के लिए चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। सुपर मदर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया एवं बेस्ट मदर, बेस्ट ड्रेस्ड, मोस्ट टैलेंटेड माताओं का चयन किया गया। इस अवसर पर माताओं ने रैंप पर चल कर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। नृत्य -संगीत का प्रदर्शन कर सबको मंत्र मुग्ध कर दिया। इस अवसर में संस्था के निदेशक धनंजय कुमार ने कहा कि सभी बच्चों के अपनी मां का आदर सम्मान करना चाहिए। कार्यक्रम को सफल बनाने में संस्था की उपनिदेशक रजनी कुमारी, कलाकृति आर्ट फाउंडेशन के उपाध्यक्ष अजय कुमार, आरती, शिखा मनस्वी आदि का सहयोग रहा।

# प्रथम झारखंड राज्य आत्या पात्या कोच रेफरी ऑफिशियल कोर्स संपन्न

अपने-अपने प्रमाण पत्र के साथ प्रशिक्षण लेने आये छात्र-छात्राएं व प्रशिक्षक। • फोटोन न्यूज

**PHOTON NEWS RANCHI :** झारखंड राज्य आत्या पात्या संघ द्वारा रांची जिला आत्या पात्या संघ की मेजबानी में प्रथम राज्य स्तरीय आत्या पात्या कोच रेफरी/ऑफिशियल कोर्स 2023 का बंगीय सांस्कृतिक परिषद विद्यालय सेक्टर-2 रांची में समापन हुआ। इसमें राज्य भर के 40 शारीरिक शिक्षा शिक्षक और खेल कोच ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। लिखित, मौखिक और प्रायोगिक परीक्षा भी ली गई, जिसमें 22 प्रशिक्षुओं ने ग्रेड ए से प्रथम झारखंड राज्य आत्या पात्या कोच रेफरी/ऑफिशियल कोर्स 2023 में उत्तीर्ण हुए।

**खेल मैदान के मार्किंग का प्रशिक्षण दिया :** इसके पूर्व दूसरे दिन के पहले सेशन में रांची जिला आत्या पात्या संघ के महासचिव एम।मोदस्सर ने आत्या पात्या खेल मैदान के मार्किंग का प्रशिक्षण दिया। वहीं दूसरे सेशन में आत्या पात्या फेडरेशन ऑफ इंडिया के संयुक्त सचिव सह झारखंड राज्य आत्या-पात्या संघ के महासचिव डॉ अजय झा ने आत्या पात्या खेल के सभी कौशलों का प्रशिक्षण दिया साथ ही रेफरी हैंड सिग्नल का अभ्यास कराया।

**ग्रेड ए से पास करने वाले अभ्यर्थी :** ग्रेड ए से पास करने वाले अभ्यर्थी में मो जावेद अंसारी, दयानंद लकड़ा, इम्तियाज हुसैन, अनामिका तिर्की, शिखा किस्पोट्टा, अनुज उरांव, पूनम एक्का, प्रीति रानी, अनीशा डुंगडुंग और सौम्या सेजल वर्मा (रांची), तारा कांत पटेल (रामगढ़), शाहरुख नवाज, अनिता कुमारी और नीलम कुमारी (लोहरदगा), जयंती होरो (खूंटी), निरंजन तिर्की, मीना बारला, दुर्गेश बेसरा (गुमला), कुलदीप सोरेंग (सिमडेगा), संतोष कुमार तिवारी (पूर्वी सिंहभूम), सूरज कुमार पासवान (जामताड़ा), अशोक कुमार दास (कोडरमा) हैं। सभी पास अभ्यार्थी विद्यालयों में अधिकृत रूप से आत्या पात्या खेल के प्रशिक्षक तथा जिला व राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में तकनीकि अधिकारी के रूप में कार्य करेंगे। वहीं राष्ट्रीय कोच और रेफरी/ऑफिशियल कोर्स में भी भाग ले सकेंगे।

**प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण पत्र दिया :** कार्यक्रम के समापन समारोह के मुख्य अतिथि के रूप में झारखंड राज्य आत्या-पात्या संघ के अध्यक्ष सह रांची विश्वविद्यालय के खेल कोर्डिनेटर डॉ राजेश कुमार गुप्ता, विशिष्ट अतिथि बीएसपी विद्यालय सचिव सजल बनर्जी एवं भाजपा रांची महानगर कला एवं खेल प्रकोष्ठ के संयोजक आशुतोष द्विवेदी ने संयुक्त रूप से सभी प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण पत्र प्रदान किए। कार्यक्रम को सफल बनाने में संघ के वरीय सदस्य जफर इमाम, सुभाष गांगुली, संजय कुमार, विवेक कुमार, सरिता कुमारी, कौशल कुमार ने पूर्ण रूप से सहयोग किया। इस अवसर पर खेल प्रेमी मुन्ना कुमार, निखिल कुमार, रोहण कुमार, शिवम कुमार, शनि कुमार एवं कई खेल प्रेमी उपस्थित थे। कार्यक्रम एवं मंच का संचालन झारखंड राज्य आत्या-पात्या संघ के महासचिव अजय झा व धन्यवाद ज्ञापन जिला सचिव एम। मोदस्सर ने किया।

# मनरेगा कर्मियों के मानदेय में कटौती पर संघ ने जताई नाराजगी

मनरेगा कर्मियों के हित में कर्मचारी संघ जुलूस निकालते हुए। • फोटोन न्यूज

**PHOTON NEWS RANCHI :** झारखंड राज्य मनरेगा कर्मचारी संघ के प्रदेश अध्यक्ष जॉन पीटर बागे ने रविवार को कहा कि मनरेगा कर्मियों के प्रति सरकार का रवैया सही नहीं है। उन्होंने कहा कि एक मई से तीन दिनों तक पदयात्रा के बाद सरकार ने मनरेगा कर्मियों के हित में कोई कदम उठाने के बजाय पत्र जारी कर तीन दिनों का मानदेय कटौती करने का आदेश जारी किया है। मानदेय कटौती से सरकार की मंशा उजागर हो गई।

मनरेगा कर्मियों ने कहा कि सरकार के इस कदम से मनरेगा कर्मियों के प्रति सरकार की मंशा स्पष्ट हो गई है। 18 अप्रैल को संघ ने एक मई से तीन मई तक तीन दिवसीय पदयात्रा का फैसला लिया था। इसकी जानकारी भी विभागीय अधिकारियों को 18 अप्रैल को दे दी गई थी। संघ की ओर से पदयात्रा की सूचना सरकार को देते समय अनुरोध किया गया था कि सरकार की ओर से वार्ता की पहल कर मनरेगा कर्मियों के समस्याओं का समाधान करें लेकिन सरकार की ओर से किसी तरह की कोई वार्ता की पहल नहीं की गई और उल्टे पदयात्रा में शामिल मनरेगा कर्मियों का मानदेय कटौती करने का आदेश जारी कर दिया।

इधर, सरकार का कहना है कि लाइफ इंश्योरेंस और हेल्थ इंश्योरेंस इत्यादि मांग सरकार स्तर पर विचाराधीन है। ऐसे में मनरेगा कर्मियों का आंदोलन किसी भी तरह से सही नहीं है। मनरेगा संघ के अध्यक्ष ने कहा कि पदयात्रा करने पर बर्बरता पूर्ण तरीके से सरकार द्वारा तुगलकी फरमान जारी कर मनरेगा कर्मियों को अनिश्चितकालीन हड़ताल की ओर धकेल रही है। सरकार हमारे आंदोलन को दबाना चाहती है। इसलिए दमनकारी नीति अपनायी जा रही है लेकिन मनरेगा कर्मी डरेंगे नहीं बल्कि डटेंगे और डटकर सरकार के हर जुल्म का सामना करेंगे। समस्याओं का समाधान जल्द नहीं किया गया तो निश्चित रूप से मनरेगा कर्मी अनिश्चितकालीन हड़ताल पर चले जाएंगे।

# जैप-10 में योग और आर्ट ऑफ लिविंग का प्रशिक्षण

**PHOTON NEWS RANCHI :** झारखंड सशस्त्र पुलिस बल (जैप-10) होटवार में योग सह आर्ट ऑफ लिविंग कार्यक्रम का रविवार को आयोजन किया गया। इसमें मुख्य प्रशिक्षक की भूमिका में आर्ट ऑफ लिविंग के अंतरराष्ट्रीय प्रशिक्षक तारिक खान और रविन्द्र वर्मा रहे।

कार्यक्रम में मुख्य रूप से एडीजी अभियान संजय आनंद लाठकर, डॉ अनल सिन्हा, सीएम चुग, डॉ राजीव, रुपाली मणि सहित अन्य ने भाग लिया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम से करीब 300 पीटीसी प्रशिक्षु और जैप 10 के पदाधिकारी एवं कर्मी लाभान्वित हुए। इस दौरान एडीजी अभियान ने पौधरोपण भी किया।

आर्ट ऑफ लिविंग का प्रशिक्षण देते प्रशिक्षक। • फोटोन न्यूज

कार्यक्रम में जैप 10 के समादेष्टा धनन्जय कुमार सिंह, डीएसपी सुमन गिनी नाग, डीएसपी तारामणि बाखला, डीएसपी हेलेन सोय सहित अन्य पदाधिकारियों और कर्मियों ने की प्रमुख भूमिका रही।

## शिक्षाविद करमा उरांव का मेदांता अस्पताल में निधन

**RANCHI :** आदिवासी समाज के प्रख्यात मानवशास्त्री और शिक्षाविद डॉक्टर करमा उरांव (72) का निधन रविवार सुबह मेदांता हॉस्पिटल में हो गया। वह बीते कुछ दिनों से बीमार चल रहे थे। इलाज के दौरान आईसीयू में उन्होंने अंतिम सांस ली। सरना धर्म कोड सहित झारखंड के कई मुद्दों पर वह अपना पक्ष मजबूती के रखते थे। वह मानवशास्त्र के पूर्व विभागाध्यक्ष, रांची विवि के पूर्व डीन, एकीकृत बिहार में बीपीएससी के सदस्य भी थे।

# Ranchi Nagar Nigam में 30 मई तक त्रुटि का निराकरण करा लें जन्म प्रमाण पत्र के आवेदक

**PHOTON NEWS RANCHI :** रांची नगर निगम ने जन्म प्रमाण पत्र के संबंध में कहा है कि 18 से 29 अप्रैल की अवधि के बीच एक वर्ष से अधिक आयु के जन्म प्रमाण पत्र निर्गत करने को आवेदकों ने आवेदन किया था। ये ऐसे संबंधित बच्चों के प्रमाण पत्र से संबंधित आवेदन हैं, जिनका एक साल की अवधि के भीतर प्रमाण पत्र नहीं बनाया जा सका है।

अब ऐसे में इन आवेदन पत्रों को कार्यपालक दंडाधिकारी, सदर, रांची से अनुमोदन के बाद निबंधित कराया जाना है लेकिन ऐसे आवेदन पत्र किन्हीं त्रुटियों और अन्य कारणों से बगैर अनुमोदन के ही निगम के पास वापस आ गया है। ऐसे में इसके आवेदक 30 मई तक अपने आवेदन को निगम कार्यालय आकर संबंधित कर्मचारी के सहयोग से त्रुटि का निराकरण करा लें। ऐसा नहीं किए जाने पर 30 मई के बाद इस प्रकार के आवेदन पर किसी भी प्रकार का कोई विचार नहीं किया जायेगा।

## निर्वाचन नियमावली से मॉडल अंजुमन चुनाव करा ग्रामीणों ने चुना सदर-सेक्रेटरी

# कोकदोरो में लोकतंत्र का महापर्व : मजीद अंसारी बने सदर, तबारक हुसैन सेक्रेटरी

**PHOTON NEWS KANKE :** कांके प्रखंड का कोकदोरो गांव, यहां चुनाव की घोषणा हुई। निर्वाचन आयोग का गठन हुआ। निर्वाचन आयुक्त बने, आदर्श आचार संहिता बनी। पूरे चुनाव प्रक्रिया की नियमावली बनी, शर्तें रखी गई। फिर नामांकन पर्चा भरा गया। नाम वापसी से लेकर चुनाव चुनाव चिन्ह बंटा। फिर मॉडल बूथ तैयार कर पूरे सिस्टम से मतदान हुआ। निष्पक्ष तरीके से मतगणना के बाद सदर और सेक्रेटरी निर्वाचित हुए। इस पूरे मतदान प्रक्रिया को मॉडल तरीके से अंजुमन इस्लामियां जैसी एक सामाजिक संगठन के लिए अपनाया गया। बकायदा, चुनाव आयोग के हर निदेर्शों का प्रत्याशियों और मतदाताओं ने अनुपालन भी किया। इस सिस्टमेटिक चुनाव का नतीजा

कोकदोरो अंजुमन कमेटी के निर्वाचित सदर-सेक्रेटरी व अन्य

मतदान के लिए पहुंचे मतदाता

हुआ कि 95 फीसद से ज्यादा मतदान हुआ। पूरे गांव वालों की एकटक रूचि दिखी। हर कोई इसे लोकतंत्र के महापर्व के रूप में लिया और मतदान संपन्न किया। इसके बाद सदर और सेक्रेटरी चुने गए। मो0 मजीद अंसारी सदर चुने गए। जबकि तबारक हुसैन सेक्रेटरी के रूप में निर्वाचित हुए। गांव स्तर पर, हुए इस तरह की चुनाव का हर कोई कायल है। दूर-दूर की अंजुमन कमेटियां और ग्रामीण इसकी सराहना कर रहे हैं।

**ये था मॉडल चुनाव बूथ :** मतदान और मतगणना के लिए मदरसा इस्लामिया को केंद्र बनाया गया था, जो अपने आप में एक मॉडल बूथ थी। यहां पर्ची की वेरिफिकेशन, लिस्ट का मिलान, बैलेट पेपर की ऑफिस कॉपी का कतरन रख मतदाता को दी जा रही थी। जहां मुहार लगाकर मतदाता मतपेटी में डाल रहे थे। मतदान का निर्धारित समय समाप्त होने के बाद स्ट्रांग रूम भी बनी, जहां मतगणना हुई। इसके बाद परिणाम घोषित किया गया। इस पूरे चुनाव प्रक्रिया में पिठोरिया थाना प्रभारी अभय कुमार की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही। उन्होंने पूख्ता सुरक्षा व्यवस्था कर रखी थी। पर्याप्त संख्या में पूरे मतदान केंद्र में सुरक्षाकर्मियों की तैनाती की गई थी।

**ये हैं चुनाव आयोग के सदस्य :** चुनाव सम्पन्न कराने के लिए मुख्य निर्वाचन आयुक्त अफरोज आलम, सहायक निर्वाचन पदाधिकारी अली ईमाम अंसारी बनाए गए। जबकि चुनाव संपन्न कराने में मोहम्मद अफरोज आलम, रुहुल अमीन, अजहर अंसारी, रिजवान अहमद, रेयाज अहमद, फिरोज आलम, इम्तियाज, खेमचन्द्र पहान, मुखिया उज्जवल पहान, कासीम अंसारी, महताब आलम, तस्लीम अहमद, सुल्तान आदिल सहित दर्जनों वोलेंटियर्स ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

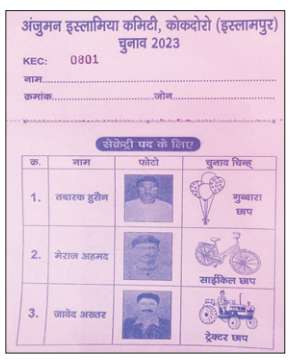


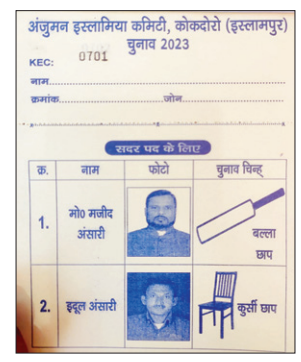


**चौथी बार सदर बने मो मजीद अंसारी :** इस चुनाव प्रक्रिया के साथ सदर पद पर जीतकर आए मो. मजीद अंसारी सदर के रूप में चैथी बार निर्वाचित हुए। इस चुनाव में उन्हें 449 मत प्राप्त हुए। प्रतिद्वंदी प्रत्याशी ईदुल अंसारी को 358 मत मिले। जबकि सेक्रेट्री पद के लिए तबारक हुसैन को 409 वोट प्राप्त हुए। इनके प्रतिद्वंद्वी जावेद अख्तर 160 मतों के साथ दूसरे स्थान पर रहे। जबकि इनके अलावा नायब सदर के पद पर हजरत अंसारी, नायब सेक्रेट्री परवेज आलम, खजांची अफजल हुसैन व ऑडिटर के पद पर फिरदौश आलम निर्विरोध निर्वाचित घोषित किये गए।

BRIEF NEWS

### कोडरमा में नाबालिग लड़की से दुष्कर्म के आरोपी को भेजा जेल

**KODARMA :** जिले की तिलैया पुलिस ने रविवार को पॉक्सो एक्ट के तहत एक युवक को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है। आरोप है कि कुशाग्र पाठक उर्फ गोलू ने शहर के पानी टंकी रोड स्थित पिता के कोचिंग सेंटर में एक नाबालिग छात्रा के साथ 13 मई को दुष्कर्म किया। पीड़ित के पिता ने थाना में मामला दर्ज कराया था। पुलिस ने तिलैया थाना कांड संख्या 122/23, भादवि की धारा 377 एवं पॉक्सो एक्ट 4 के तहत मामला दर्ज कर युवक को जेल भेज दिया। छात्रा का कोर्ट में बयान दर्ज कराकर एवं मेडिकल कराकर परिजनों के सुपुर्द कर दिया गया।

### बोकारो में बड़े भाई की हत्या, आरोपी गिरफ्तार

**BOKARO :** चंदनकियारी प्रखंड के अन्तर्गत बाटविनोर पंचायत के तेलीटोला में रविवार को आपसी विवाद में छोटे भाई बबलू धीवर ने बड़े भाई किसन धीवर (45) की कुल्हाड़ी मारकर हत्या कर दी। पुलिस ने हत्यारोपित को गिरफ्तार कर लिया है। मृतक की पत्नी चिन्ता देवी ने बनगोडिया ओपी में लिखित शिकायत दर्ज कराई है। इस संबंध में ओपी प्रभारी प्रशान्त कुमार ने बताया कि सूचना मिलने पर आरोपित को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया है। शव का पोस्टमार्टम कराया जा रहा है। पुलिस मामले की जांच-पड़ताल कर रही है।

### संदिग्ध हालात में मिला नाबालिग का शव

**LOHARDAGA :** कुडू थाना क्षेत्र के हमीदनगर ब्लॉक मैदान के पास रविवार को संदिग्ध हालत में अन्नु अंसारी उर्फ मोटू (13) का शव मिला। शक के आधार पर पुलिस ने उसके सौतेले पिता हकीम अंसारी और मां को हिरासत में लिया है। पुलिस को पहले सूचना मिली थी कि हमीदनगर निवासी हकीम अंसारी के पुत्र अन्नु अंसारी ने घर में फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली है। हालांकि, नाबालिग ने फांसी लगाई या फिर रस्सी से गला दबाकर उसकी हत्या की गयी है, इसका पता पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद होगा। थाना प्रभारी विश्वजीत कुमार सिंह ने बताया कि शव को पोस्टमार्टम के के बाद दफना दिया गया है। सौतेले पिता तथा मां असमीना खातुन को हिरासत में लिया गया है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट के बाद खुलासा होगा कि नाबालिग ने आत्महत्या किया है या फिर रस्सी के सहारे गला दबाकर हत्या की गई है। पुलिस मामले की जांच-पड़ताल कर रही है।

### रेल अधिकारियों ने विशेष जांच अभियान चलाकर पकड़े 267 बेटिकट यात्री

**PALAMU :** धनबाद रेलखंड के वरीय अधिकारियों के निर्देश पर सीआईटी बीएम पांडेय के नेतृत्व में डालटनगंज रेलवे स्टेशन से रेनुकूट के बीच लंबी दूरी के विभिन्न एक्सप्रेस ट्रेनों में विशेष चेकिंग अभियान चलाया गया। इस दौरान रिकॉर्ड 267 बेटिकट यात्रियों को पकड़ा गया। साथ ही अबतक का सबसे बड़ा राजस्व एक लाख 50 हजार 900 रुपये बतौर जुमार्ना वसूला गया। रेलवे के पदाधिकारी बीएम पांडेय ने बताया कि विशेष चेकिंग अभियान के सभी ऊजार्वान साथियों के अथक प्रयास से अबतक का सबसे बड़ा टारगेट एचीव करने में सफलता हासिल हुई है। उन्होंने बताया कि इसके पहले अभी तक न तो इतने बेटिकट यात्रियों को पकड़ा गया था और न ही इतनी बड़ी राशि (राजस्व) की वसूली हो पाई थी। आलाधिकारियों के दिशा-निर्देश पर शनिवार रात और रविवार दोपहर तक लंबी दूरी की विभिन्न एक्सप्रेस ट्रेनों में गहनता से जांच की गई।

### रोमा पहाड़ी जंगल में मिला क्षत-विक्षत शव

**WEST SINGHBHUM :** जिले के तांतनगर ओपी क्षेत्र के टांगर पोखरिया स्थित रोमा पहाड़ी जंगल में क्षत-विक्षत शव मिला। उसका सिर, हाथ और पैर कटा हुआ था। पुलिस ने रविवार को शव को पोस्टमार्टम के लिए अस्पताल भेज दिया। आशंका जताई जा रही है कि अज्ञात अपराधियों ने हत्या कर शव को छिपाने के लिए रोमा पहाड़ी के जंगल में फेंक दिया। व्यक्ति की उम्र 30 से 40 वर्ष के बीच बतायी जा रही है। चाईबासा एसपी आशुतोष शेखर ने बताया कि कहीं दूसरे जगह से लाकर शव को फेंका गया है।

# KHUNTI : ढुकू प्रथा में वर्षों से साथ रह रहे 501 जोड़े परिणय सूत्र में बंधे

PHOTON NEWS KHUNTI

जिले के कर्रा प्रखंड के चौला पतरा में स्वयंसेवी संस्था वृष्टि ग्रीन फार्मर्स खूंटी के सौजन्य से ढुकू प्रथा में वर्षों से साथ रह रहे 501 जोड़े परिणय सूत्र में बंध गये। समारोह के मुख्य अतिथि जनजातीय मामलों के केंद्रीय मंत्री अर्जुन मुंडा, उनकी धर्मपत्नी मीरा मुंडा, विशिष्ट अतिथि विधायक कोचे मुंडा उनकी धर्मपत्नी मोनिका मुंडा, समाजसेवी और खूंटी के उद्योगपति रोशनलाल शर्मा और वीणा शर्मा ने कन्यादान और विवाह की रस्म अदा की। इसमें हिंदू, सरना आदिवासी और ईसाई जोड़ों की शादी कराई गई।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए केंद्रीय मंत्री अर्जुन मुंडा ने कहा कि ऐसे आयोजनों से सामाजिक एकता मजबूत होती है। अब इन नव दंपतियों को सामाजिक और कानूनी मान्यता मिलेगी। इससे संपत्ति सहित अन्य पारिवारिक मामलों में इन जोड़ों को कानूनी हक मिलेगा। उन्होंने कहा कि वैवाहिक बंधन में बंधने वाले सभी जोड़ों को विवाह का प्रमाण पत्र और पंजीयन दिया जाएगा।

परिणय सूत्र में बंधे 501 जोड़े। ● द फोटोन न्यूज

केंद्रीय मंत्री ने कहा कि भविष्य में शिक्षित और स्वस्थ बच्चों की जरूरत आपको और समाज को भी होगी। उन्होंने लोगों का आह्वान किया कि वे अपने बच्चों को स्वस्थ रखें, शिक्षित करें और जागरूक बनाएं। साथ ही समाज को जागरूक करें।

कार्यक्रम में जिला सांसद प्रतिनिधि मनोज कुमार, अनूप साहू, आनंद राम, भाजपा के जिलाध्यक्ष चंद्रशेखर गुप्ता, गोविंदपुर मंडल रामध्यान सिंह, डीएवी स्कूल के प्राचार्य विवेकानंद घोष, मुखिया मीना देवी सहित बड़ी संख्या में ग्रामीण मौजूद थे।

# झारखंड विधानसभा की पुस्तकालय विकास समिति की टीम पहुंची खूंटी

PHOTON NEWS KHUNTI

झारखंड विधानसभा की पुस्तकालय विकास समिति की टीम रविवार को खूंटी पहुंची। समिति की सभापति सह निरसा विधायक अपर्णा सेन गुप्ता की अध्यक्षता में परिसदन के सभाकक्ष में जिले के पदाधिकारियों के साथ बैठक हुई। इस दौरान राज्य सरकार की वित्त संपोषित योजनाओं की अद्यतन प्रगति की समीक्षा की गई।

समीक्षा बैठक के दौरान अपर्णा सेन ने जिला शिक्षा अधीक्षक से जिले में पिछले तीन सालों के दौरान पुस्तकालयों के विकास में किये कार्यों की जानकारी प्राप्त की। साथ ही उन्होंने जिले में संचालित पुस्तकालयों एवं उपलब्ध सुविधाओं की जानकारी ली। उन्होंने कहा कि पुस्तकालयों में कोर्स की किताबों, प्रतियोगिता परीक्षा से संबंधित किताबों के साथ बच्चों की रुचि के अनुसार ज्ञानवर्द्धक किताबों की व्यवस्था होनी चाहिए, ताकि बच्चों के पढ़ने की इच्छा जागृत हो।

बैठक के दौरान राजस्व, भूमि सुधार, पेयजल एवं स्वच्छता, स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता, कल्याण, आपूर्ति, खेल विभाग, पथ निर्माण, पशुपालन, स्वास्थ्य सहित अन्य विभागों द्वारा संचालित कार्यों, कार्य प्रगति एवं पूर्ण होने के संबंध में विस्तार से समीक्षा की। सभी विभागों के पदाधिकारियों को कार्य को गति देने एवं कल्याणकारी योजनाओं से अधिक से अधिक लोगों आच्छादित करने का निर्देश दिया गया। इस मौके पर बाघमारा विधायक ढुल्लू महतो सहित अन्य मौजूद थे।

# भदानीनगर के जंगल में घायल अवस्था में मिला हिरण

PHOTON NEWS RAMGARH

जिले के भदानीनगर के जंगल में ग्रामीणों को एक झाड़ियों में घायल अवस्था में हिरन मिला है। रविवार को ग्रामीणों ने घायल हिरण को झाड़ियों से बाहर निकाला और फिर उसका प्राथमिक उपचार किया। इस मामले की जानकारी पतरातू वन प्रमंडल के पदाधिकारियों को भी दे दी गई है। इस पूरे मामले की जानकारी देते हुए वनरक्षी अनिल कुमार ने बताया कि भदानी नगर ओपी क्षेत्र के कुर्से गांव के पास जंगल में हिरण घायल अवस्था में फंसा हुआ था।

ग्रामीणों की नजर जब उस हिरण पर पड़ी तो उन लोगों ने उसे मुक्त कराया। बाद में हिरण का प्राथमिक उपचार किया। कुर्से गांव में पहुंचे वन विभाग के पदाधिकारियों ने उसे घायल हिरण को बेहतर इलाज के लिए पशु चिकित्सक के पास भेज दिया है। वन विभाग के अधिकारियों का कहना है कि जब हिरन ठीक होगा तो उसे दोबारा जंगल में ही छोड़ दिया जाएगा। वन विभाग के पदाधिकारियों के अनुसार हिरण पानी की तलाश में भटकता हुआ गांव की तरफ आया होगा और झाड़ियों में फस गया होगा। उन्होंने यह भी संभावना जताई है कि लकड़बग्घों से बचने के लिए भी कई बार हिरन भागते हुए गांव की तरफ आ जाते हैं। उस वक्त भी वह झाड़ियों में फंस सकता है।

घायल अवस्था में पड़ा हिरण। ● द फोटोन न्यूज

### खंडोली जाने के क्रम में स्कॉर्पियो पलटी, चार घायल

**GIRIDIH :** गिरिडीह-बेंगाबाद मुख्य मार्ग पर सोनबाद में रविवार एक तेज रफ्तार स्कॉर्पियो वाहन अनियंत्रित होकर पलट गई। इस घटना में वाहन में सवार चार युवक घायल हो गए। सभी घायलों को स्थानीय लोगों के सहयोग से इलाज के लिए सदर अस्पताल पहुंचाया गया। इस घटना में वाहन की चपेट में आने से दो मवेशियों की भी मौत हो गयी, कई अन्य लोग बाल-बाल बच गए। बताया जाता है कि सुबह गिरिडीह शहर से एक परिवार के चार युवक स्कॉर्पियो में सवार होकर खंडोली घूमने जा रहे थे। इसी दौरान सोनबाद के पास स्कॉर्पियो अनियंत्रित होकर पलट गई और गाड़ी में सवार चारों युवक घायल हो गए। इधर घटना की सूचना मिलने के बाद बेंगाबाद थाना पुलिस मौके पर पहुंची और दुर्घटना ग्रस्त गाड़ी को सड़क से हटवा कर मामले की छानबीन में जुट गई।

# कोलकाता से भागलपुर जा रही बस पलटी, मां बेटे सहित तीन घायल

PHOTON NEWS DUMKA

जामा थाना क्षेत्र के बारापलासी गांव के समीप रविवार की सुबह करीब पांच बजे कोलकाता से भागलपुर जा रही राजा बस पलट गई। हादसे में भागलपुर की काजल सरदार, उसका बेटा और जेठ चक्रधर सरदार घायल हो गया। पुलिस की मदद से तीनों को मेडिकल कालेज अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

चक्रधर ने बताया कि यात्रियों से भरी बस कोलकाता से भागलपुर जा रही थी। चालक ने बस की छत पर क्षमता से अधिक सामान भर रखा था। बारापलासी के समीप तेज गति के कारण पहले बस डगमगाई। जब चालक ने गति कम की तो हिचकोले खाती हुई पलट गई। हादसे में एक ही परिवार के तीन सदस्य घायल हो गए। वहीं कुछ यात्रियों को मामूली खरोच आई।

हादसे की सूचना मिलते ही जामा थाना प्रभारी जितेंद्र साहू मौके पर पहुंचे और स्थानीय लोगों की मदद से तीनों को अस्पताल में भर्ती कराया। हादसे के बाद बस का चालक गाड़ी छोड़कर फरार हो गया। पुलिस ने बस को जब्त कर लिया है। थाना प्रभारी का कहना है कि बस की गति कम होने के कारण अधिकांश यात्री बाल-बाल बच गए।

अस्पताल में इलाजरत चक्रधर सरदार। ● द फोटोन न्यूज

# सड़क हादसे में युवक की मौत

PHOTON NEWS BOKARO

बोकारो थर्मल थाना क्षेत्र के गोमिया-कथारा मुख्य सड़क पर रविवार की सुबह बाइक सवार रूपेश यादव की वाहन की चपेट में आकर मौत हो गई। पड़रिया निवासी रूपेश यादव (25) सुबह पल्सर 220 बाइक पर सवार होकर अपने नानी के घर कथारा के बोडिया बस्ती जा रहा था। लेकिन अज्ञात वाहन ने उसके बाइक को जोरदार टक्कर मार दी। इस दुर्घटना में घटनास्थल पर ही उसकी मौत हो गई। वहीं घटना की सूचना मिलते ही परिजन एवं ग्रामीणों ने मुआवजे की मांग को लेकर गोमिया-कथारा मुख्य सड़क को जाम कर दिया है। जाम के कारण सड़क के दोनों ओर गाड़ियों की लंबी कतार लग गई है।

सूचना मिलते ही बोकारो थर्मल एवं गोमिया पुलिस सदल-बल घटना स्थल पर पहुंचकर लोगों को समझा कर लगभग पांच घण्टे की कड़ी मशक्कत के बाद जाम हटवाया।साथ ही पुलिस ने शव को अंत्यपरीक्षण के लिए अनुमंडलीय अस्पताल तेनुघाट भेज दिया।

घटना की सूचना मिलते ही गोमिया के पूर्व विधायक सह दर्जा प्राप्त मंत्री योगेंद्र प्रसाद, जिप सदस्य सुरेंद्र राज, पूर्व जिप सदस्य प्रकाशलाल सिंह घटनास्थल पर पहुंचकर मृतक के परिजनों को ढाढस बंधाया। साथ ही संबंधित अधिकारियों से बात कर उचित मुआवजा दिलाने की बात कही। मौके पर गोमिया थाना प्रभारी राजेश रंजन, बोकारो थर्मल थाना के सअनि आशीष कुमार, गोमिया अंचल निरीक्षक लालमोहन दास, कर्मचारी कैलाश यादव, मुखिया बलराम रजक, पूर्व मुखिया धनन्जय सिंह, बबलू यादव, शंकर पासवान आदि मौजूद थे।

घटना स्थल पर जुटी परिजनों व ग्रामीणों की भीड़। ● द फोटोन न्यूज

# डीएवी रजरप्पा में वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ सात दिवसीय समर कैंप का आयोजन शुरू

PHOTON NEWS RAMGARH

सीसीएल द्वारा संचालित डीएवी रजरप्पा के प्रांगण में सात दिवसीय समर कैंप की शुरूआत रविवार को विद्यालय के प्राचार्य बीपी रॉय ने झंडा दिखाकर किया। शिविर का उद्घाटन विद्यालय के सम्मानित प्राचार्य बीपी रॉय ने शांत और आध्यात्मिक रूप से समृद्ध वैदिक मंत्रोच्चारण और हवन के साथ की। प्राचार्य श्री रॉय शिविर समन्वयक डी मुखोपाध्याय, मनीष कुमार और अन्य शिक्षकों के साथ पारंपरिक अनुष्ठान में शामिल हुए। यज्ञझहवन के माध्यम से शिविर को आगामी दिनों के लिए सकारात्मक ऊर्जा और सद्भाव का रूप देना है। समर कैंप 14 मई से 20 मई 2023 तक चलेगा. जिसमें लगभग 300 बच्चों को वॉलीबॉल, बास्केटबॉल, एथलेटिक्स, ललित कला, खो-खो, संगीत के सात सुरों का ज्ञान, नैतिक शिक्षा, योगा आदि का ज्ञान विद्यालय के खेल शिक्षक डी मुखोपाध्याय, मनीष कुमार, सत्यकाम आर्य, रजनीश पाठक, श्यामलकांति मिश्रा, अर्णव मन्ना, आदि शिक्षकझशिक्षिकाएँ देंगे।

अपने उद्घाटन भाषण में विद्यालय प्राचार्य ने एक छात्र के समग्र विकास में पाठ्येत्तर गतिविधियों के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने पूर्ण विकसित व्यक्तियों को आकार देने में खेल, कला संगीत और नैतिक शिक्षा के महत्व पर भी प्रकाश डाला।

प्रधानाचार्य ने भाग लेने वाले छात्रों की विभिन्न रुचियों और प्रतिभाओं को पूरा करने वाली गतिविधियों को एक प्लेटफॉर्म देने के लिए आयोजन समिति के सदस्यों के प्रयास की सराहना की. समर कैंप छात्रों को अपनी प्रतिभा को निखारने, कौशल को विकसित करने का अवसर प्रदान करता है। इस तरह के आयोजन से बच्चों में पढ़ाई के साथझसाथ मानसिक, शारीरिक और बौद्धिक विकास भी होता है।

शिविर का उद्घाटन करते प्राचार्य.। ● द फोटोन न्यूज

## MOTHERS DAY पर सिद्धार्थ पब्लिक स्कूल में कार्यक्रम आयोजित

# मां की ममता की छांव में होता है बच्चों का सर्वांगीण विकास : सांत्वना शरण

PHOTON NEWS RAMGARH

मां की ममता की छांव में बच्चों का सर्वांगीण विकास होता है। यही वजह है कि आज तक मां की जगह कोई नहीं ले पाया है। यह बातें मदर्स डे के अवसर पर रामगढ़ शहर के सिद्धार्थ पब्लिक स्कूल में आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में डॉक्टर सांत्वना शरण ने कही।

उन्होंने कहा कि मां कभी भी अपने बच्चों को गलत शिक्षा नहीं देती। वह न सिर्फ पढ़ाई लिखाई बल्कि जीवन के हर मूल्यों को उजागर करती है। हर बच्चे की सफलता के पीछे उसकी मां का बहुत बड़ा योगदान रहता है। मां की कुर्बानी का कोई भी मोल नहीं है। डॉ सांत्वना शरण ने स्कूल में आए सभी माताओं को शुभकामनाएं दी और कहा कि वे अपने बच्चियों को स्कूली शिक्षा के साथ-साथ सार्वजनिक जीवन में कैसे आगे बढ़ना है इस पर जरूर ध्यान दें।

कार्यक्रम में स्कूल की प्राचार्य केसी मर्लीन ने बताया कि मां हर सुख दुख में बच्चों के साथ रहती हैं। बच्चा अच्छा कर रहा है तो उसको प्रोत्साहित करती है और अगर बच्चा कहीं पिछड़ता हुआ नजर आता है तो वह उसे बेहतर तरीके से समझाती भी हैं। अभिभावक और शिक्षकों का मुख्य उद्देश्य यह है कि बच्चे हमेशा बेहतर करें और उनको जीवन के हर मूल्यों के बारे में बताएं।

मौके पर स्कूल की एडीएम केसी सर्ली ने बताया कि बच्चों का सही विकास तभी संभव है जब वे घर में बेहतर माहौल पाएंगे। जब तक बच्चे स्कूल में होते हैं शिक्षक उन्हें एक बेहतर माहौल देने की कोशिश करते हैं। लेकिन बच्चों का अधिकतर समय अपने अभिभावकों और खासकर माताओं के साथ गुजरता है। मां के साथ ही बच्चे सब कुछ सीखते हैं। यही वजह है कि हर इंसान की पहली शिक्षक उसकी मां ही होती है। मां की शिक्षा के बाद ही शिक्षक कच्चे घड़े को एक बेहतर आकार देने का प्रयास करते हैं।

मदर्स डे के मौके पर स्कूली बच्चों ने नृत्य और संगीत प्रस्तुत कर यह बताने की कोशिश की कि उनकी मां कितनी स्पेशल है। कार्यक्रम के अंत में स्कूल के सभी बच्चों ने मदर्स डे पर बनाए हुए कार्ड को अपनी माताओं के समक्ष प्रस्तुत किया। कार्ड में लिखे हुए संदेशों को पढ़कर माताएं भाव विह्वल हो गई।

मदर्स डे के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में नृत्य प्रस्तुत करते बच्चे। ● द फोटोन न्यूज

# जाली नोट का धंधा करने वाले दो धंधेबाज गिरफ्तार

PHOTON NEWS GIRIDIH

सरिया थाना पुलिस ने जाली नोटों का धंध करने वाले एक धंधेबाज के साथ दो लोगों को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है। दोनों को सरिया थाना क्षेत्र के दो अलग-अलग ममलों में पुलिस ने गिरफ्तार किया है। इस संबंध में रविवार को थाना प्रभारी संतोष कुमार मौर्य ने बताया कि धनवार ओपी क्षेत्र के पूरनपतारी निवासी रितु महतो के पुत्र भातो महतो पर सरिया के पवित्र तीर्थ स्थल राजदह में जाली नोट खपाने का मामला दर्ज था । दूसरा आरोपित सरिया थाना का अशोक पासवान शामिल है। उसे कोरियाटांड से गिरफ्तार कर जेल भेजा गया है।

# गुमला : जमीन विवाद में टांगी से काटकर दंपति की हत्या

PHOTON NEWS GUMLA

जिले के पालकोट स्थित बाजरा गांव में जमीन विवाद में एक दंपति की टांगी से काटकर हत्या कर दी गई है। मृत की पहचान राजू खड़िया और पत्नी आशा देवी के रूप में की गई है।

जानकारी के अनुसार शनिवार को गर्मी के कारण पति-पत्नी घर के आंगन में सोए थे। इसी दौरान अपराधियों ने टांगी से वार कर हत्या कर फरार हो गया। घटना की जानकारी रविवार सुबह घर के लोगों को हुई। इसकी जानकारी पुलिस को दी गई।

बताया जाता है कि राजू खड़िया करीब एक सप्ताह पहले बाजरा स्थित घर पहुंचा था। वह पंजाब में रहकर काम करता था। पुलिस के अनुसार जमीन विवाद में घटना को अंजाम दिया गया है। बीते गुरुवार को राजू का भाई लियुस खड़िया के साथ विवाद हुआ था। विवाद इतना बढ़ गया था कि लियुस खड़िया ने राजू खड़िया को टांगी लेकर दौड़ाया था। उस वक्त राजू वहां से भाग निकला था। पुलिस हर बिंदु से मामले की जांच कर रही है। आसपास के लोगों से पूछताछ हो रही है।

# बागेश्वर दरबार में Lalu की बेटी ने लगाई पर्ची

**AGENCY PATNA:**

बागेश्वर धाम के पंडित धीरेंद्र शास्त्री पटना में हनुमंत कथा कह रहे हैं। कथा के दूसरे दिन बागेश्वर बाबा नौबतपुर के तरेत पाली मठ प्रांगण में सुंदरकांड की कथा कह रहे हैं। कल बागेश्वर बाबा का देव दरबार सजने वाला है। इससे पहले आरजेडी सुप्रीमो लालू यादव की बेटी रोहिणी आचार्य ने सिंगापुर से बागेश्वर दरबार में ओपन पर्ची लगाई है। लालू-राबड़ी की बेटी ने बागेश्वर सरकार से महत्वपूर्ण मांग की है।

बिहार के पटना में पंडित धीरेंद्र शास्त्री के धार्मिक प्रवचन कार्यक्रम का आरजेडी खेमे ने खुलकर विरोध किया। बागेश्वर बाबा को लेकर नेताओं ने कई तरह की बातें कहीं। लालू यादव के बड़े लाल और बिहार सरकार के मंत्री तेज प्रताप यादव ने उन्हें एयरपोर्ट पर घेर लेने की धमकी दी तो प्रदेश अध्यक्ष जगदानंद सिंह ने उन्हें जेल भेज देने की मांग कर डाली। अन्य नेताओं ने भी बाबा पर अपमानजनक टीका टिप्पणी की। इस बीच लालू यादव की सिंगापुर में रहने वाली बेटी रोहिणी आचार्य ने बागेश्वर दरबार में अपनी खुली पर्ची दाखिल कर दी है।

बड़ी बात यह है कि पर्ची में रोहिणी ने अपने लिए या लालू परिवार के लिए कुछ नहीं मांगा है।

रोहिणी आचार्य ने नीतीश कुमार के लिए बाबा से कुछ मांगा है। पूरे बिहार के लिए बाबा के सामने झोली फैलाई है। बिहार की भलाई के लिए बाबा से गुहार लगाई है। अपने ट्विटर हैंडल पर बाबा के

नाम खुली पर्ची में रोहिणी आचार्य ने कहा है-

*परची वाले बाबा से*
*यही हमारी विनती है*
*बिहार के विशेष राज्य के दर्जे की मांग*
*हमारी करनी पूर्ति है...*

बागेश्वर धाम के प्रति रोहिणी आचार्य की आस्था उन राजनेताओं के लिए आईना है जिन्होंने उनके बारे में गलत शब्दों के प्रयोग किए। सहकारिता मंत्री सुरेंद्र यादव ने कहा कि बागेश्वर धाम के पंडित धीरेंद्र शास्त्री अपने दरबार में भूत प्रेत के नाम पर हमारी मां, बहन, बेटियों को नचाते हैं। उन्होंने यहां तक कह दिया कि जो लोग बागेश्वर सरकार के प्रचार में लगे हैं उनके घर के महिलाएं नहीं जाती हैं। हमारे अपने घर की महिलाएं उनके झांसे में आ जाती हैं। उन्होंने यह भी कहा था कि बागेश्वर के दरबार में जाने से अच्छा है डूब मरना चाहिए।

रोहिणी आचार्य का ट्वीट सहकारिता मंत्री सुरेंद्र यादव के लिए कितना मायने रखता है इसे वही समझें तो बेहतर है। देखना है उनका क्या जवाब आता है। इससे पहले नीतीश सरकार के मंत्री सुरेंद्र राम ने भी बागेश्वर बाबा को ढोंगी कहा था। भाई वीरेंद्र ने भी उनके खिलाफ आपत्तिजनक टिप्पणी की थी।

इससे पहले एक ट्वीट में रोहिणी ने बीजेपी पर निशाना साधा था। रोहिणी ने बागेश्वर बाबा के मंच पर आरती करते बीजेपी के बड़े नेताओं का वीडियो शेयर करते हुए ट्वीट किया था और बीजेपी की मंशा पर सवाल उठाए थे।

## बिहार में सूरज के तेवर नरम लेकिन फिर करवट लेगा मौसम

**AGENCY PATNA :**

बिहार का मौसम आंखमिचौली खेल रहा है। मौसम विभाग ने हाल में ही अनुमान लगाया कि तूफान मोचा के कारण मौसमी परिवर्तन का हल्का असर देखा जा सकता है और बिहार में ये तूफान अपना असर तो नहीं दिखा पाएगा लेकिन कुछ क्षेत्रों में इससे मौसम प्रभावित हो सकता है। हल्की बूंदाबांदी के आसार जताए गए थे लेकिन मौसम सख्त ही रहा। हालाकि कई हिस्सों में पछिया के बाद पुरवा हवा का प्रवाह है जिससे चिलचिलाती धूप से थोड़ी राहत है।

### पुरवा हवा सक्रिय

मीडिया रिपोर्ट के अनुसार, बिहार का मौसम अभी आंख मिचौली खेल रहा है। मैदान में पुरवा हवा सक्रिय है और बंगाल की खाड़ी से आ रही इस हवा के साथ नमी भी आ रही है। इससे चिलचिलाती धूप वाली स्थिति नहीं बन रही है। हीट वेब वाली बला फिलहाल टली है। आइएमडी पटना के अनुसार, राजधानी पटना का अधिकतम तापमान 40 डिग्री के नीचे गया है।

### पटना का मौसम

आइएमडी पटना के अनुसार, पिछले 24 घंटे के अंदर सबसे कम न्यूनतम तापमान किशनगंज का दर्ज किया गया जहां 21.5 डिग्री तापमान रहा। वहीं सबसे अधिक पारा औरंगाबाद का रहा जहां 40.3 डिग्री अधिकतम तापमान दर्ज किया गया। पटना में आज आसमान साफ रहा। वहीं कल से दो दिनों तक आसमान साफ रहेगा जबकि दोपहर से हल्के बाद हो सकते हैं। वहीं 17 और 18 मई को आसमान में हल्के बादल छाए रहेंगे।

### करवट लेगा मौसम

मौसम मामलों के जानकारों का कहना है कि अभी तीन दिनों तक भागलपुर समेत बिहार के कई जिलों में पूरवा हवा बहेगी। इस दौरान तापमान में कमी दर्ज की जाएगी और हल्की बूंदाबांदी भी हो सकती है। दो से तीन दिन अधिकतम तापमान पिछले दिनों की तुलना से कम रहेगा। उसके बाद तापमान में वृद्धि हो सकती है। 17 मई के बाद से मौसम फिर करवट ले सकता है। बता दें कि बिहार में अभी भी कालवैशाखी सक्रिय है।

### कालवैशाखी सक्रिय

अप्रैल के आखिरी सप्ताह से लेकर जून के पहले सप्ताह तक कालवैशाखी की सक्रियता रहती है। इसे उस हवा के रूप में जानते हैं जो बिहार के मैदान में निम्नदाब को भरने के लिए बंगाल की खाड़ी से आती है। इसमें होने वाली बारिश आम को आकार देने और पकाने में मददगार होती है इसलिए इस बारिश को आम्रवर्षा भी कहा जाता है।

## संत पॉल की अक्षरा व संत जोसेफ की नयोनिता बिहार टॉपर, बेटियों का रहा सबसे बेहतर प्रदर्शन

**AGENCY PATNA :**

काउंसिल फॉर दी इंडियन स्कूल सर्टिफिकेट एग्जामिनेशन (सीआइएससीइ) ने रविवार को इंडियन सर्टिफिकेट ऑफ सेकेंडरी एजुकेशन (आइसीएसइ) यानि 10वीं का रिजल्ट रविवार को जारी कर दिया। बिहार का रिजल्ट पिछले साल की तुलना में कम रहा। इस बार बिहार का रिजल्ट 99.50 प्रतिशत रहा, जो पिछले साल से 0.50 प्रतिशत कम रहा। पिछले साल 10वीं में राज्य का रिजल्ट सौ प्रतिशत रहा था। इस बार स्टेट के स्टूडेंट्स ने देशभर में टॉप स्थान पर काबिज नहीं कर पायें।

**पिछले साल की तुलना में कम रहा बिहार का रिजल्ट :** पिछली बार राज्य के दो विद्यार्थियों ने देशभर के टॉप तीन में जगह बनायी थी। इस बार 99.40 प्रतिशत अंक हासिल कर संत पॉल हाइ स्कूल दीघा पटना की अक्षरा सिंह व संत जोसेफ कॉन्वेंट हाइ स्कूल जेठुली पटना की नयोनिका प्रसाद बिहार टॉपर बनी है। दूसरे स्थान पर 99.20 प्रतिशत अंक प्राप्त कर माउंट एसेस स्कूल भागलपुर के अक्षत शुभम, कार्मेल हाई स्कूल पटना की आशि अस्मित व इसी स्कूल की कृतिका श्री रही हैं। फर्स्ट, सेकेंड व थर्ड रैंक में 12 स्टूडेंट्स शामिल हुए हैं, जिसमें से नौ लड़की व तीन लड़के शामिल हैं। तीसरे स्थान पर संयुक्त रूप से सात स्टूडेंट्स शामिल हैं। इस बार के रिजल्ट में लड़कियों का प्रदर्शन बेहतर रहा ह। 99.53 प्रतिशत लड़की व 99.47 प्रतिशत लड़के सफल हुए हैं। 10वीं में 16 लड़के व मात्र 12 लड़कियां फेल हुई है।

**39 स्कूलों के 5577 परीक्षार्थी हुए शामिल :** इस परीक्षा में पूरे बिहार से 39 स्कूलों के 5577 परीक्षार्थी शामिल हुए। इनमें 3022 छात्र और 2555 छात्राएं शामिल थीं। बोर्ड की मानें तो विशेष कोटि यानी एससी के 258 स्टूडेंट्स शामिल हुए थे। इसमें से 98.84 प्रतिशत स्टूडेंट्स सफल हुए हैं। एसटी के 80 स्टूडेंट्स शामिल हुए थे। इसमें सभी स्टूडेंट्स सफल हुए हैं। वहीं, ओबीसी से 2173 स्टूडेंट्स शामिल हुए थे। इनका पास प्रतिशत 99.40 प्रतिशत रहा है। पूरे देश में बिहार का रिजल्ट बेहतर रहा है।

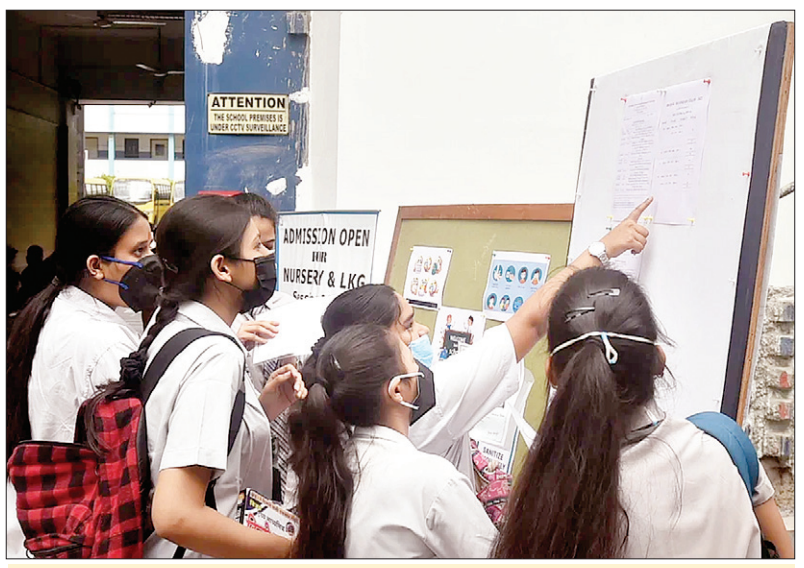


### आंकड़े : शामिल हुए 5577 स्टूडेंट्स

**लड़के :** 3022 (54.19 प्रतिशत) शामिल हुए। 3006 पास हुए (99.47%), फेल हुए 16 (0.53%)
**लड़की :** 2555 (45.81 प्रतिशत) शामिल हुए। पास हुई 2543 (99.53%), फेल हुए 12 (0.47%) पास प्रतिशत : 99.50%
लड़कियों का पास प्रतिशत : 99.53%, लड़कों का पास प्रतिशतः 99.47%

### 10वीं के स्टेट टॉपर

| रैंक | नाम | | स्कूल |
|---|---|---|---|
| 1. | अक्षरा सिंह | (99.40%) | संत पॉल हाइ स्कूल दीघा |
| 1. | नयोनिता प्रसाद | (99.40%) | संत जोसेफ कॉन्वेंट हाइ स्कूल जेठुली पटना |
| 2. | अक्षत शुभम | (99.20%) | माउंट एसिसी स्कूल, भागलपुर |
| 2. | आशि अस्मिता | (99.20%) | कार्मेल हाइ स्कूल पटना |
| 2. | कृतिका श्री | (99.20%) | कार्मेल हाइ स्कूल पटना |
| 3. | मन्नत सिंघानिया | (99%) | नॉर्थ प्वाइंट चिल्ड्रेन स्कूल मुजफ्फरपुर |
| 3. | प्रतिक्षा प्रसाद | (99%) | डॉन बास्को एकेडमी दीघा |
| 3. | आदित्य सेतु | (99%) | माउंट एसिसी स्कूल भागलपुर |
| 3. | पार्थ केशरी | (99%) | माउंट एसिसी स्कूल भागलपुर |
| 3. | ग्रेसी कुमारी | (99%) | संत पॉल हाइ स्कूल बेगुसराय |
| 3. | अनुकृति धनधानिया | (99%) | संत जोसेफ स्कूल भागलपुर |
| 3. | रिसिता भारती | (99%) | संत जेवियर हाइ स्कूल पटना |

बोर्ड ने तीन बजते ही रिजल्ट जारी कर दिया था। स्टूडेंट्स की सुविधा के लिए एसएमएस के अलावा कैरियर पोर्टल, डिजि लॉकर पर रिजल्ट जारी किया गया। इसके अलावा बोर्ड वेबसाइट http:// www.cisce.org पर भी रिजल्ट जारी किया।

## पूर्व मंत्री के पति पर धर्मकांटा मालिक पिता-पुत्र को पीटने का आरोप, 40-50 लोग हथियार लेकर पहुंचे थे

**AGENCY PURNIYA:**

पूर्व में कई बार विवादों के चलते सुर्खियों में रहने वाले रुपौली की विधायक सह पूर्व मंत्री बीमा भारती के पति अवधेश मंडल चर्चा में आ गए हैं।

इस बार भवानीपुर बाजार में एक धर्मकांटा मालिक व उनके पुत्र की सरेआम पिटाई की चर्चा थाना तक पहुंची है। पुलिस मामले की जांच में जुट गई है। जांच के बाद इस मामले में प्राथमिकी दर्ज की जाएगी।

इधर, जख्मी पिता-पुत्र ने थाना में आवेदन देते हुए पुलिस से प्राथमिकी दर्ज कराने की गुहार लगाई है। थाना में दिए आवेदन में पीड़ित पिता माधव महतो व पुत्र पंकज कुमार उर्फ रिक्की ने कार्रवाई नहीं होने पर जान पर खतरा बताया है।

थाना में दिए आवेदन में पीड़ित ने कहा है कि दोपहर लगभग साढ़े 12 बजे अवधेश

मंडल हरवे हथियार से लेस तकरीबन 40-50 लोगों के साथ उनके धर्मकांटा पर आए और कांटा करा रहे उनके पुत्र को गाली-गलौज करने लगे।

इसी बीच सभी से जान लेने की नियत से डंडे व हथियार के बट आदि से मारपीट शुरू कर दी। इस दौरान उसका पुत्र जख्मी हो गया। इधर, शोर सुन जब वे अपने पुत्र को बचाने पहुंचे तो उन लोगों ने उनके साथ मारपीट शुरू कर दी और हाथ भी तोड़ दिया। दोनों का उपचार भवानीपुर पीएचसी में हुआ है।

> पूर्व मंत्री के पति अवधेश मंडल व उनके साथ आए बदमाशों ने खुलेआम मेरी व मेरे पिता की पिटाई की है। सभी आरोपित हथियार से लेस थे। कुछ ने हाथ में डंडे आदि भी लिये हुए थे। उन लोगों ने जाते-जाते दो दिन दिनों में अंजाम भुगतने के लिए तैयार रहने की बात कही है। धर्मकांटा में मेरे एक पार्टनर को खोजने सभी यहां पहुंचे थे।
> – **पंकज कुमार उर्फ रिक्की,** धर्मकांटा मालिक का जख्मी पुत्र

घटना की मौखिक सूचना मिली है। वे मीटिंग में मुख्यालय आए हैं। थाना में आवेदन दिया गया है, उस आवेदन के आधार पर मामले की जांच कर उचित कार्रवाई की जाएगी।
– **सुजीत कुमार,** थानाध्यक्ष, भवानीपुर

घटना की जानकारी फिलहाल नहीं मिली है। पूरे मामले की जानकारी लेकर इसकी जांच कराएंगे और घटना सही पाए जाने पर कानून सम्मत कार्रवाई की जाएगी।
– **आमिर जावेद,** पुलिस अधीक्षक, पूर्णिया

**शराब ढूंढने वाला 60 लाख का ड्रोन लापता बीजेपी ने कसा तंज, कहा**

## महागठबंधन सरकार में कुछ भी असंभव नहीं

**AGENCY PATNA :**

विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष विजय कुमार सिन्हा ने शराबबंदी मुहिम में सरकार द्वारा उपयोग किये जाने वाले ड्रोन के गायब हो जाने पर तंज कसा है। उन्होंने कहा कि महागठबंधन सरकार में सब कुछ संभव है। रविवार को जारी बयान में उन्होंने कहा कि हाल के दिनों में रेल इंजन,मोबाइल टावर और रेल की पटरी के गायब होने की घटना हुई है।

विजय सिन्हा ने कहा कि पहले भी पशुओं का चारा गायब हो गया था और सड़क में काम आने वाला अलकतरा भी गायब हो चुका है।

चारा और अलकतरा मामले में तो सजा भी हुई थी। शराबबंदी सरकार की प्रमुख योजना है परन्तु इसमें भी पकड़े गए और जमा की गई शराब की बोतलें पुलिस थानों से गायब हो जाती हैं। नेता प्रतिपक्ष ने आरोप लगाया कि राज्य में प्रशासनिक अराजकता चरम पर है। अधिकारी मनमर्जी काम कर रहे हैं। लोकहित के सभी मुद्दे पीछे छूट चुके हैं।

**राष्ट्रीय लोक जनता दल के सुप्रीम उपेंद्र कुशवाहा ने किया सावधान, पूछा**

# किस नशे में चूर हैं बिहार के CM नीतीश कुमार

**AGENCY PATNA:**

राष्ट्रीय लोक जनता दल के सुप्रीम उपेंद्र कुशवाहा ने बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार पर एक बार फिर जुबानी हमला किया है। कुशवाहा ने कहा है कि सीएम नशे में चूर हैं। लेकिन, उन्हें पता नहीं है कि उनकी कुर्सी मद्य निषेध विभाग के ड्रोन की तरह लापता हो सकती है। उपेंद्र कुशवाहा ने मुख्यमंत्री पर गरीबों पर जुल्म करने का आरोप लगाया है।

शराबबंदी को लेकर नीतीश कुमार पर कई नेता हमलावर हैं। उन नेताओं का आरोप है कि बिहार में शराबबंदी को लागू कराने में मुख्यमंत्री विफल रहे शराब तो बंद नहीं हुआ लेकिन माफिया का सरकार के समानांतर शराब कारोबार का तंत्र विकसित हो गया। नए-नए अपराधी पैदा हो गए। सरकार के खाते में राजस्व का आना बंद हो गया क्योंकि अब हम होम डिलीवरी शराब मिल रही है। उपेंद्र कुशवाहा ने शराबबंदी को लेकर नीतीश कुमार पर प्रहार किया है। खासकर मद्य निषेध विभाग का ड्रोन लापता हो जाने

की खबरों को लेकर उन्होंने तंज कसा है।

ट्विटर पर अपने संदेश में उपेंद्र कुशवाहा ने लिखा है कि

शराब खोजने के चक्कर में पुलिस और अन्य एजेंसियों का करोड़ों का बजट लापता होते जा रहा है। बस लापता नहीं हो रही है तो आप की जिद और शराब तथा शराबबंदी के नाम पर गरीबों पर चल रही बर्बरता।

कुशवाहा ने कहा है कि सावधान हो जाइए सर। वरना जो शराब है ना वो आपकी कुर्सी को लापता किए बिना नहीं मानेगी क्योंकि, शराब के नशे से बड़ा नशा है गरीबों पर जुल्म करने की जिद।

दरअसल उत्पाद विभाग का खोजी ड्रोन लापता हो गया है। इसकी कीमत 60 लाख है। पटना से निकला ड्रोन छपरा में लापता हो गया। इसका कोई ट्रेस नहीं मिल रहा है। 4 मई को उत्पाद विभाग का ड्रोन पटना से निकला था। उसका आखिरी ट्रेस छपरा के तेलपा दियारा इलाके में मिला। उसके बाद से इसका कोई अता पता नहीं है। उत्पाद विभाग के अधिकारियों ने मामले को दबाए रखा। खोजने में सफलता नहीं मिलने पर शनिवार को इसे सार्वजनिक किया गया। यह हवाई जहाज जैसा दिखता है। इसके गायब होने से विपक्षी दल सीएम पर हमलावर हैं।

**BRIEF NEWS**

### गंगा नदी में डूबे एक ही परिवार के चार युवक SDRF की टीम तलाश में जुटी

**PATNA :** बिहार की राजधानी पटना में बड़ा हादसा हुआ है। दरअसल, यहां दीघा थाना क्षेत्र में चार युवक गंगा नदी में डूब गए है। इसके बाद इनके परिजनों में कोहराम मच गया है। यह सभी युवक फिलहाल नदी में लापता है। इसके बाद एसडीआरएफ की टीम इनकी तलाश में जुट गई है। बताया जा रहा है कि यह सभी नदी में नहाने गए थे। इसके बाद यह बड़ा हादसा हो गया। वहीं, युवकों के नदी में डूबने के बाद गंगा किनारे लोगों की भारी भीड़ जमा हो गई। यहां जैसे-जैसे लोगों को खबर मिल रही है, भीड़ जुट रही है। दरअसल, युवकों के डूबने की खबर फैलते ही इलाके में हड़कंप मच गया है।

**लापता युवकों की तलाश लगातार जारी :** बताया जा रहा है कि नदी में पहले एक युवक डूबा था। इसके बाद इसे बचाने के चक्कर में तीन और युवक नदी में डूब गए। फिलहाल, यह चारों युवक लापता है। इनकी तलाश जारी है। बता दें कि परिवार में बरसी के मौके पर यह गंगा नदी में स्नान करने गए थे। लेकिन इस दौरान यहां बड़ा हादसा हो गया। एसडीआरएफ की टीम युवकों के शवों को खोज रही है। गौरतलब है कि मौके पर एसडीआरएफ के साथ पुलिस की टीम की भी मौजूदगी है।

**परिजनों में मचा कोहराम :** एसडीआरएफ और पुलिस की टीम के साथ भारी भीड़ भी गंगा यहां मौजूद है। बता दें कि डूबने वाले चारों युवक आपस में रिश्तेदार थे। यह जिले के नौबतपुर के रहने वाले है और अपने परिवार के यहां बरसी पर आए थे। इस घटना के बाद परिजनों का रो रोकर बुरा हाल है। दूसरी ओर एसडीआरएफ की टीम इनकी तलाश लगातार कर रही है।

### मुजफ्फरपुर में हथियारबंद बदमाशों ने पेट्रोल पंप के मैनेजर से की चार लाख की लूट

**MUZAFFARPUR :** मुजफ्फरपुर जिले के सरैया थाना क्षेत्र के छितरी रोड में शनिवार की देर शाम पेट्रोल पंप पर दो बाइक से पहुंचे छह बदमाशों ने हथियार के बल पर करीब चार लाख रुपये की बड़ी लूट की घटना को अंजाम दिया है। वहीं, इस दौरान विरोध करने पर बदमाशों ने फायरिंग भी की। बदमाशों ने दहशत पैदा करने के उद्देश्य से हवाई फायरिंग कर मौके से फरार हो गए।

### मोतिहारी में दिनदहाड़े मर्डर, युवक के सीने में बदमाशों ने घोंपा खंजर

**MOTIHARI :** मोतिहारी शहर के द्वार देवी मंदिर के समीप आठ हजार रुपये बकाया मांगने पर युवक आयुष कुमार (19) के सीने में खंजर घोंपकर दिनदहाड़े हत्या कर दी गई। आयुष कुमार मिस्कॉट मोहल्ले का रहने वाला था। हत्या के आरोप में पुलिस ने मिस्कॉट मोहल्ले के ही शिवम कुमार को गिरफ्तार कर लिया है। उसके पास से खंजर बरामद किया गया है। सहायक पुलिस अधीक्षक राज ने बताया कि आरोपित को गिरफ्तार कर उससे पूछताछ की जा रही है। मृतक के पिता मनोज प्रसाद के बयान पर एफआईआर दर्ज की गयी है। बैंक आफ बड़ौदा में डेली वेजेज पर काम करने वाले मनोज प्रसाद ने बताया कि उसका पुत्र एसएनएस कॉलेज में बीए का छात्र था। उसके बेटे की मोहल्ले के शिवम ने हत्या कर दी है। वे लगातार पुलिस से आरोपी को कठोर सजा दिलाने की गुहार लगा रहे थे। आयुष इकलौता संतान था। पिता के अनुसार, आयुष से आरोपी शिवम ने आठ हजार रुपये उधार लिया था। रुपये लौटाने को लेकर दोनों में पहले भी झड़प हुई थी। रविवार को फिर रुपये की मांग की तो खंजर से हमला कर दिया। वहीं, मोहल्ले के लोगों का कहना था कि आरोपित स्मैकर है, जिसके साथ कई अन्य लड़कों का मोहल्ले के एक मंदिर के समीप जमावड़ा होता है। स्मैकरों के खिलाफ ठोस कार्रवाई नहीं होती है। वे लोग बराबर अवैध हथियार लेकर घुमते हैं। वहां मारपीट तो रोज की दिनचर्या बन गयी है। सिगरेट में गांजा भरकर पीना तो आम बात है।

**घर का था इकलौता संतान :** आयुष कुमार घर का इकलौता संतान था। वह एक भाई व एक बहन था। वह तो मारा गया। बहन का नाम मालती कुमारी है जो अभी अविवाहित है। पिता मनोज प्रसाद व मां का नाम आरती देवी है। घर के इकलौता चिराग की हत्या से परिवार के लोगों का रो रोकर बुरा हाल है।

### मद्य निषेध सिपाही भर्ती परीक्षा में बड़ी कार्रवाई पटना व जमुई में दर्जनों मुन्नाभाई पकड़ाए

**PATNA :** बिहार में रविवार को मद्य निषेध सिपाही भर्ती परीक्षा का आयोजन किया गया। इसमें बड़ी कार्रवाई की गई। आपको बता दें कि पटना पुलिस ने दर्जनों मुन्ना भाई को हिरासत में लिया। बताया जा रहा है कि यह एक छात्रावास में बैठकर आंसर तैयार कर रहे थे। जबकि, जमुई में आठ मुन्नाभाई पकड़े गए है। जानकारी के अनुसार झाझा में नकल करते महिला सहित तीन लोग पकड़े गए है। जबकि, बरहट में तीन अलग-अलग केंद्रों में ब्लूटूथ लगातार एग्जाम देते हुए तीन लोग पकड़े गए है।

**17 परीक्षार्थी हुए निष्कासित :** सासाराम में कदाचार के आरोप में अलग-अलग केंद्रों से 17 परीक्षार्थियों को निष्कासित किया गया। मालूम हो कि पुलिस और प्रशासन के बड़े अधिकारियों ने अलग-अलग केंद्रों पर जाकर परीक्षा का जायजा लिया। इसके बाद यह बड़ी कार्रवाई की गई है। रविवार को मद्य निषेध सिपाही भर्ती परीक्षा आयोजित की गई थी। इसमें पुलिस की ओर से बड़ी कार्रवाई की गई है।

**नालंदा में परीक्षा केंद्र के बाहर हंगामा :** वहीं, नालंदा में परीक्षा केंद्र के बाहर परीक्षार्थियों ने जमकर हंगामा किया। जिले के बिहारशरीफ के 29 केंद्रों पर मद्य निषेध सिपाही भर्ती की परीक्षा आयोजित हुई। बताया जा रहा है कि रविवार को कुछ परीक्षा केंद्रों पर परीक्षार्थी विलंब से पहुंचे। इस वक्त कई सेंटर का गेट बंद हो चुका था। इसके बाद छात्रों ने जमकर हंगामा किया। नगर थाना क्षेत्र के एक स्कूल के पास छात्रों का जमकर हंगामा किया है। जब हंगामे के बाद भा गेट नहीं खुला, तो यह छात्र बीच रोड पर आ गए। इन्होंने बीच रोड पर यातायात को बाधित किया। सूचना पर पहुंची पुलिस ने छात्रों को खदेरा। साथ ही कुछ को हिरासत में लिया।

### बिहार के डिप्टी सीएम तेजस्वी यादव का मां के लिए खास तोहफा

**PATNA :** मदर्स डे सभी के लिए खास होता है। ऐसे में बिहार के उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव के लिए भी यह दिन बहुत ही खास है। वह अपनी मां से बहुत प्यार करते हैं। डिप्टी सीएम बिहार की पूर्व मुख्यमंत्री को स्पेशल भी महसूस कराना चाहते हैं। इसलिए, वह अपनी मां को एक सुंदर सा गिफ्ट देने जा रहे है। यह भेंट उनकी बचपन की यादों से जुड़ा है। दरअसल, राज्य के पूर्णियां जिले में स्थित ग्लोबल ब्रांड हाउस ऑफ मैथिली ने साड़ी पर राबड़ी देवी और तेजस्वी यादव की तस्वीर को बनाया है।

**हाउस ऑफ मैथिली की खास पेशकश है ये साड़ी :** हाउस ऑफ मैथिली की ओर से मदर्स डे के मौके पर खास तरीके की पेशकश की गई है। इस साड़ी के जरिए बिहार के डिप्टी सीएम और उनकी मां के बीच का प्रेम खास तौर देखा जा सकता है। यह बात सभी को याद रखनी चाहिए कि मां और एक बच्चे के बीच का प्रेम बहुत ही खास होता है। यह तोहफा उस प्रेम को बयां करने में अपनी भूमिका भी निभा रहा है। क्योंकि, तस्वीर यादों को ताजा कर देती है। जबकि, साड़ी महिलाओं को बहुत प्यारी होती है। वहीं, तोहफा जब बेटे के हाथों मिले तो बात ही कुछ और होती है।

**साड़ी के आंचल पर तेजस्वी और राबड़ी की तस्वीर :** इस साड़ी के आंचल पर बिहार के डिप्टी सीएम और पूर्व सीएम की तस्वीर है। इसमें वह बेटे को गले लगातार प्यार करती दिखाई दे रही है। बताया जाता है कि इस साड़ी पर 22 अलग-अलग भाषाओं में मां शब्द को भी लिखा गया है। फिलहाल, इसकी हर कोई चर्चा कर रहा है। यह देखने में काफी सुंदर भी है। यह कहना गलत नहीं होगा कि डिप्टी सीएम ने अपनी मां को एक खास तोहफा दिया है।

# पाकिस्तान में अस्थिरता

पाकिस्तान में इन दिनों सियासत गर्म है। पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान की गिरफ्तारी के बाद कई जगहों पर हिंसक प्रदर्शन हुए। हालांकि हाई कोर्ट ने इमरान को दो हफ्ते की जमानत दे दी। लेकिन अभी भी वहां स्थिति नियंत्रण में नहीं है। माना जा रहा है कि आने वाले वक्त में टकराव बढ़ सकता है। इस्लामाबाद हाई कोर्ट से दो हफ्ते की जमानत और 17 मई तक गिरफ्तारी से सुरक्षा पाकर पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान ने भले ही थोड़े समय के लिए राहत की सांस ली हो, लेकिन इस पूरे प्रकरण ने पाकिस्तान में जिस तरह के हालात पैदा कर दिए हैं, उनसे उसका तुरंत निकलना मुश्किल दिख रहा है। बेशक, पाकिस्तान के सुप्रीम कोर्ट ने तत्काल दखल देकर हालात को संभालने की एक कोशिश की। गुरुवार को उसने हाईकोर्ट परिसर से हुई इमरान खान की गिरफ्तारी को अवैध घोषित कर दिया। अगले दिन उन्हें इस्लामाबाद हाई कोर्ट से बेल मिल गई। लेकिन इस दौरान आ रही खबरें बताती रहीं कि हालात किस कदर विस्फोटक बने हुए हैं। सरकार में शामिल पीएमएल (एन) की सीनियर वाइस प्रेजिडेंट और पूर्व प्रधानमंत्री नवाज शरीफ की बेटी मरियम शरीफ ने न सिर्फ सुप्रीम कोर्ट के फैसले को गलत और खतरनाक बताया बल्कि फैसला देने वाले चीफ जस्टिस पर सीधा कॉमेंट करते हुए कहा कि बेहतर होगा वह अपने पद से इस्तीफा देकर इमरान खान की पार्टी में शामिल हो जाएं। इससे स्पष्ट है कि पाकिस्तान की मौजूदा सरकार इमरान को किसी भी तरह की रियायत देने के मूड में नहीं है। वहां की सेना भी यही चाहती है। मगर देश के आम लोगों के बीच इमरान खान की लोकप्रियता बनी हुई है। इसी वजह से उनकी गिरफ्तारी के बाद देश के कई इलाकों में प्रदर्शन हुए, जो बेकाबू भी हो गए। ऐसे माहौल में जो संभावनाएं उभरती हैं, वे डराने वाली हैं। चूंकि तीनों में से कोई भी पक्ष झुकने के लिए तैयार नहीं है, इसलिए टकराव बढ़ने की आशंका है। न्यायपालिका के दोफाड़ होने की बात पहले से कही जा रही है। मौजूदा चीफ जस्टिस पर मरियम शरीफ की टिप्पणी ने एक तरह से उसकी पुष्टि कर दी। अगर सेना भी इमरान खान के पक्ष और विरोध वाले दो गुटों में बंट गई तो क्या होगा? यह कोई दूर की कौड़ी नहीं है। पाकिस्तान की सेना में पंजाब प्रांत के लोग अच्छी संख्या में हैं। इमरान की गिरफ्तारी के बाद पंजाब प्रांत में जिस तरह से लोग सेना मुख्यालय में घुस गए, वह कोई छोटी बात नहीं है। ऐसी घटनाएं पाकिस्तान में पहले नहीं देखी गईं। इससे जहां पाकिस्तान के लोगों के मन में सेना की इज्जत कम होने के संकेत मिलते हैं वहीं, यह सवाल भी उठता है कि क्या सेना के भी एक हिस्से की मिलीभगत के बगैर ऐसी घटनाएं हो सकती थीं। कुछ सैन्य अधिकारियों के खिलाफ की गई कार्रवाई इस संदेह को बल प्रदान करती है। ऐसे में बड़ा डर यह है कि कहीं पाकिस्तान में गृहयुद्ध के हालात न बन जाएं। कहने की जरूरत नहीं कि इस परमाणु शक्ति संपन्न पड़ोसी देश का ऐसी किसी स्थिति में फंसना भारत के लिए भी गंभीर चिंता की बात होगी।

# स्वागत योग्य पहल

एक स्वागत योग्य कदम के रूप में, आयुष मंत्रालय और भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद (आईसीएमआर) ने राष्ट्रीय महत्व की कुछ बीमारियों के उपचार में आधुनिक चिकित्सा (साक्ष्य-आधारित चिकित्सा) के साथ-साथ आयुर्वेद के इस्तेमाल से होने वाले लाभों के बारे में साक्ष्य हासिल करने के लिए गुणवत्तापूर्ण मानव नैदानिक परीक्षण करने के लिए आपस में हाथ मिलाया है। मानव नैदानिक परीक्षण करने के क्षेत्र में आईसीएमआर के दशकों के अनुभव को देखते हुए, इन परीक्षणों को डिजाइन करने और उन्हें अंजाम देने के काम में इस शीर्ष संस्था को शामिल करना उचित है। शुरूआत में, यह सहयोग आयुर्वेद तक ही सीमित रहेगा। जब आयुष की अन्य प्रणालियों - योग, यूनानी, सिद्ध और होम्योपैथी झ से जुड़ी केंद्रीय परिषदें आईसीएमआर के साथ काम करने के लिए राजी हो जायेंगी, तो उन्हें इस कवायद में शामिल किया जा जाएगा और प्रत्येक प्रणाली का आधुनिक चिकित्सा के साथ परीक्षण किया जाएगा। एक विशेषज्ञ समिति जल्द ही आयुर्वेद और आधुनिक चिकित्सा, दोनों का इस्तेमाल करके विस्तृत नैदानिक परीक्षण में शामिल किए जाने वाले क्षेत्र / रोग के बारे में तय करेगी। शुरूआती दौर में, प्रत्येक रोग के लिए किए जाने वाले नैदानिक परीक्षण के दो अंग होंगे - देखभाल के मानक के तौर पर आधुनिक चिकित्सा और इसके साथ-साथ आधुनिक चिकित्सा और आयुर्वेद का संयोजन। अगर आयुर्वेद और आधुनिक चिकित्सा दोनों का इस्तेमाल करने वाला कोई अंग हो, तो सिर्फ वही बेहतर नतीजों के लिए इन दोनों के संयोजन की श्रेष्ठता को सत्यापित करने में सक्षम होगा। आयुर्वेद और आधुनिक चिकित्सा का इस्तेमाल करके संयुक्त उपचार की इस पद्धति के बेहतर नतीजों का वैज्ञानिक सत्यापन वह आधार बनेगा जिसके मद्देनजर रोगियों को एकीकृत दवा दी जाएगी। परीक्षण के इन नतीजों को प्रोत्साहित करना शायद आयुर्वेद का इस्तेमाल करके उनकी प्रभावशीलता का मूल्यांकन करने और अभिक्रिया के तंत्र को समझने की दिशा में आगे का परीक्षण करने का एक प्रस्थान बिंदु साबित हो सकता है। फिलहाल यह समझौते के दायरे में नहीं है। भले ही तुरंत यह पहल बीमारी के इलाज में अकेले इस्तेमाल किए जाने पर आयुर्वेद की उपयोगिता को वैज्ञानिक मान्यता प्रदान न कर पाए, लेकिन यह चिकित्सीय उपायों को मान्य करने के साक्ष्य-आधारित दृष्टिकोण के मामले में पहला बड़ा कदम है।

# सुरक्षित भारत, शक्तिशाली भारत

ANALYSIS

प्रो. संजय द्विवेदी

**एक दशक पहले, जब से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाली राजग सरकार सत्ता में आई, तो कुछ ही समय बाद उसने दिखा दिया कि वह देश की सुरक्षा को लेकर किसी प्रकार की ढिलाई देने के मूड में नहीं है। इस क्रम में वर्ष 2018 में राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार की अध्यक्षता में शीर्ष स्तरीय रक्षा योजना समिति (डीपीसी) का गठन एक अच्छी शुरूआत रही है। इसे राष्ट्रीय सुरक्षा नीति और राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति बनाने के लिए गठित किया गया था। भारत सरकार द्वारा जारी अधिसूचना के अनुसार, राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति के अलावा डीपीसी के प्रमुख उद्देश्यों में क्षमता संवर्द्धन योजना का विकास, रक्षा रणनीति से संबंधित विभिन्न मुद्दों पर काम करना और भारत में रक्षा उत्पादन और ईको सिस्टम को उन्नत बनाना आदि शामिल हैं। एक राष्ट्र का सम्मान, प्रभुत्व और शक्ति इसमें निहित है कि वह भीतरी और बाहरी चुनौतियों से निपटने में कितना सक्षम है और किसी भी संभावित खतरे से कितना सुरक्षित है।**

किसी विचारक का कहना है कि तुम्हारा अच्छे से अच्छा सिद्धांत व्यर्थ है, अगर तुम उसे अमल में नहीं लाते। हमारी सुरक्षा चिंताओं से संबंधित कानूनों की भी एक दशक पहले तक यही स्थिति रही है। वर्ष 1947 में तैयार राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति को अभी तक ठीक से परिभाषित नहीं किया जा सका है, वहीं राष्ट्रीय सुरक्षा अधिनियम, 1980 सुरक्षा से ज्यादा राजनीतिक विरोधियों के खिलाफ इस्तेमाल के लिए ज्यादा जाना जाता रहा है। देश को भीतरी-बाहरी खतरों से सुरक्षित रखने के लिए बने ऐसे तमाम कानून कभी उन उद्देश्यों की पूर्ति में सफल नहीं हो पाए, जिनके लिए उनका निर्माण किया गया था। इसके पीछे ईमानदार प्रयासों की कमी रही हो या इच्छाशक्ति की, या फिर दोनों की, देश ने आजादी के बाद के छह दशकों में बहुत कुछ सहा है। सीमाओं के भीतर भी और सीमाओं पर भी। एक दशक पहले, जब से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाली राजग सरकार सत्ता में आई, तो कुछ ही समय बाद उसने दिखा दिया कि वह देश की सुरक्षा को लेकर किसी प्रकार की ढिलाई देने के मूड में नहीं है। इस क्रम में वर्ष 2018 में राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार की अध्यक्षता में शीर्ष स्तरीय रक्षा योजना समिति (डीपीसी) का गठन एक अच्छी शुरूआत रही है। इसे राष्ट्रीय सुरक्षा नीति और राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति बनाने के लिए गठित किया गया था। भारत सरकार द्वारा जारी अधिसूचना के अनुसार, राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति के अलावा डीपीसी के प्रमुख उद्देश्यों में क्षमता संवर्द्धन योजना का विकास, रक्षा रणनीति से संबंधित विभिन्न मुद्दों पर काम करना और भारत में रक्षा उत्पादन और ईको सिस्टम को उन्नत बनाना आदि शामिल हैं। एक राष्ट्र का सम्मान, प्रभुत्व और शक्ति इसमें निहित है कि वह भीतरी और बाहरी चुनौतियों से निपटने में कितना सक्षम है और किसी भी संभावित खतरे से कितना सुरक्षित है। महान कूटनीतिज्ञ चाणक्य ने एक राष्ट्र की सम्प्रभुता के लिए खतरा साबित होने वाली इन चुनौतियों की चार श्रेणियां निर्धारित की थीं। भीतरी खतरे, बाहरी खतरे, बाहरी सहायता से पनपने वाले भीतरी खतरे और भीतर से सहायता पाकर मजबूत होने वाले बाहरी खतरे। लगभग यही खतरे आज भी नक्सलवाद, अलगाववाद, सीमा पर चलने वाली चीन-पाकिस्तान की गतिविधियों, आतंकवाद, स्लीपर सेल आदि के रूप में सिर उठाते रहते हैं। नए दौर में इनके अलावा भी और कई सुरक्षा चुनौतियां हैं, जो परोक्ष या प्रत्यक्ष रूप से राष्ट्रीय सुरक्षा से संबंधित हैं। इनमें आर्थिक सुरक्षा, ऊर्जा सुरक्षा, पर्यावरण सुरक्षा, साइबर सुरक्षा जैसे और भी कई मुद्दे शामिल हो चुके हैं, जिनके तार भीतर ही भीतर एक-दूसरे से जुड़े हैं। लेकिन, दैवयोग से वर्ष 2014 में भारत के राजनीतिक परिदृश्य में एक जबरदस्त बदलाव हुआ और देश को एक मजबूत इरादों वाली मजबूत सरकार मिली, जिसका नेतृत्व 21वीं सदी के विश्व के सबसे शक्तिशाली नेताओं में से एक नरेन्द्र मोदी कर रहे हैं। और फिर राष्ट्रीय सुरक्षा के परिप्रेक्ष्य में देश में चीजें तेजी से बदलना शुरू हुईं। प्रधानमंत्री की दूरदर्शिता और अथक प्रयासों के नतीजे हम लगभग हर क्षेत्र में गुणात्मक परिवर्तनों के रूप में देख रहे हैं। अगर हम एक दशक पहले की परिस्थितियों से तुलना करें तो आज भारत की एकता, अखंडता और सम्प्रभुता को चुनौती देने वाले तमाम तत्व निःशक्त और सहमे-सहमे से नजर आते हैं। आतंकवाद और सीमापार से होने वाली राष्ट्रविरोधी गतिविधियों को मुंहतोड़ जवाब मिला है, तो देश के भीतर चलने वाली नक्सलवादी/वामसमर्थित अलगाववादी गतिविधियों पर भी लगाम लगी है। यही नहीं, पूर्ववर्ती सरकारों की गलत नीतियों और उपेक्षापूर्ण रवैये के कारण देश के विभिन्न भागों, खासकर कुछ पूर्वोत्तर राज्यों, के भीतर दशकों से पनप रहे असंतोष के स्वरों को भी शांतिपूर्ण और स्वीकार्य उपायों से समाधान उपलब्ध कराने में हमें उल्लेखनीय सफलता मिली है। इसका पूरा श्रेय जाता है हमारे कुशल, सक्षम और दूरदर्शी नेतृत्व को, जिसमें सही समय पर सही फैसले लेने की सामर्थ्य ही नहीं, बल्कि उन्हें पूरी दृढ़ता के साथ लागू करने की इच्छाशक्ति भी मौजूद है। चाहे वह अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत के सुरक्षा हितों पर प्रतिकूल असर डालने वाली एकतरफा कार्रवाइयों के विरुद्ध मजबूती से खड़े होने का मामला हो या शक्ति संतुलनों के नए समीकरणों में भारत के प्रति मानसिकता और पुरातन सोच में बदलाव लाने का। आज न सिर्फ हम एकध्रुवीय दुनिया में अपने हितों की रक्षा में सफल रहे हैं, बल्कि पूरा विश्व, इस तेजी से बदलती व्यवस्था में भारत की नई सशक्त और निर्णायक भूमिका को स्वीकार कर रहा है। भारत की भीतरी मजबूती और सुरक्षा पर विशेष ध्यान देते हुए अपनी सख्ती और जीरो टॉलरेंस अप्रोच के साथ हम अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत की 'सॉफ्ट स्टेट' वाली छवि को तोड़ने में सफल रहे हैं। रणनीतिक स्पष्टता और त्वरित निर्णय लेने की सामर्थ्य के साथ, भारत ने सिर्फ सैन्य मोर्चे पर ही अपनी मजबूती और बढ़त बनाई है, बल्कि वर्तमान और भावी सुरक्षा चुनौतियों से निपटने के लिए भी भरपूर तैयारियां की हैं। इनमें इन्फ्रॉस्ट्रक्चर का विकास, क्षमता निर्माण आदि शामिल है। राष्ट्रीय हित में राजनीति से ऊपर उठकर हमने निष्पक्ष पेशेवरों और विशेषज्ञों की मदद से योजनाओं का निर्माण और क्रियान्वयन किया है। इन्फ्रॉस्ट्रक्चर का इस्तेमाल कर विकास को गति देने के लिए हमने प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना आरंभ की, जिसके अंतर्गत 2019-20 के दौरान 11,400 किलोमीटर सड़कें बनाई गईं और सीमावर्ती क्षेत्रों में छह पुलों का उद्घाटन किया गया। इसके अलावा नागरिक-सैन्य सहयोग को प्रोत्साहित करने के लिए दोहरे इस्तेमाल वाला इन्फ्रॉस्ट्रक्चर विकसित किया गया। रक्षा मंत्रालय और भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण के समन्वय से चिह्नित राजमार्गों के 29 हिस्सों को आपात एयर-वे के रूप में इस्तेमाल किए जा सकने योग्य बनाया। 30 सैन्य हवाई क्षेत्रों में सात एडवांस लैंडिंग ग्राउंड तैयार किए गए। इसी प्रकार स्वतंत्र और समन्वित राष्ट्रीय सुरक्षा तंत्र का विकास और एक इंटेलीजेंस ग्रिड का निर्माण कर हमने अपने इंटेलीजेंस आधारित अभियानों में तेजी लाई है। आज आशंकाओं को वास्तविकता में बदलने से पहले , सूचना मिलते ही तुरंत उन पर कार्रवाई की जाती है। सुरक्षा एजेंसियों में बेहतर तालमेल, सुव्यवस्थित सुधारों और कैपेसिटी बिल्डिंग के माध्यम से आतंकवाद से निपटा गया है। अगर हम मोदी के देश की बागडोर संभालने से पहले के दस साल की बात करें, तो पाएंगे कि वर्ष 2004 से 2014 के बीच देश में 25 बड़े आतंकवादी हमले हुए, जिनमें एक हजार से अधिक मौतें हुईं और करीब तीन हजार लोग घायल हुए। लेकिन, 2014 के बाद से नागरिक क्षेत्रों में कोई भी बडी आतंकवादी वारदात नहीं हुई है। देश भर में अभियान चलाकर 100 से अधिक आतंकवादियों को पकड़ा गया। उन्हें आर्थिक सहायता उपलब्ध कराने वाले संस्थानों पर रोक लगाई गई और देश में भारत विरोधी गतिविधियां चला रहे सिमी, जेएमबी, एसएफजे, इस्लामिक फ्रंट और इंडियन मुजाहिदीन जैसे संगठनों के वित्तीय स्रोत खत्म कर उनकी रीढ़ तोड़ी गई। इसके अलावा मित्र देशों के समर्थन का विस्तार करते हुए इन संगठनों के नेटवर्क पर प्रहार कर इसे कमजोर किया गया। यह हमारे खुफिया तंत्र की एक बड़ी सफलता थी कि हमने अलकायदा मॉड्यूल को समय रहते पहचान कर, भारत में उसकी जड़ें जमने ही नहीं दीं। सेना को स्थानीय स्तर पर निर्णय लेने की स्वतंत्रता दी गई तो उनका मनोबल बढ़ा और उनके अभियानों में तेजी आई। इसी क्रम में केंद्रीय बलों और राज्य पुलिस के बीच बेहतर इंटेलीजेंस बेस्ड कोऑर्डिनेशन स्थापित कर वामपंथ समर्थित अतिवादियों और भारत विरोधी प्रोपगंडा चला रहे अर्बन नक्सलियों के विरुद्ध सैन्य व वैचारिक अभियान चलाकर उनके हौसले पस्त किए गए और प्रोपेगंडा को कमजोर करने के लिए प्रभावित क्षेत्रों में बिजली, पानी, सड़क, शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधाओं और इन्फ्रास्ट्रक्चर का विस्तार कर उन्हें मुख्यधारा में लाने का प्रयास किया गया। अशांत पूर्वोत्तर राज्यों में 2019 में त्रिपुरा समझौता, जनवरी 2020 में त्रिपुरा-मिजोरम सीमा विवाद का निपटारा, इसी साल असम समझौता कर और मेघालय व अरुणाचल प्रदेश के कुछ जिलों में अफसा हटाकर वहाँ शांति स्थापित की गई।

**(लेखक, भारतीय जन संचार संस्थान, नई दिल्ली के महानिदेशक हैं।)**

# सृष्टि का आधार है परिवार, इसे बिखरने न दें

पूरी दुनिया 15 मई को विश्व परिवार दिवस मनाएगी। संयुक्त राष्ट्र संघ की पहल पर यह सहमति बनी थी कि साल में एक दिन विश्व परिवार दिवस मनाया जाए। वर्ष 1994 में पहली बार अंतरराष्ट्रीय परिवार दिवस मनाया गया था। तब से अब तक यह सिलसिला बदस्तूर जारी है। हालांकि विश्व परिवार दिवस मनाने का प्रस्ताव तो संयुक्त राष्ट्र संघ में 1989 में ही पारित हो गया था लेकिन इसे व्यावहारिक धरातल पर उतरने में पांच साल लग गए। खैर, देर आयद-दुरुस्त आयद। परिवार को जोड़े रखने का, उससे जुड़े रहने की पहल का ही नतीजा है कि दुनिया भर में हर साल अलग-अलग थीम पर विश्व परिवार दिवस मनाया जाता है। लेकिन, इस तरह के नवोन्मेष की जरूरत क्यों पड़ी, यह अपने आप में विचार का विषय है। भारत तो सदियों से पूरी धरती को अपना परिवार मानता रहा है। उसने वसुधैव कुटुम्बकम का मंत्र यूं ही नहीं दिया था। कोलंबस और वास्को डिगामा की खोज से पहले भी भारत की अपनी विस्तृत सीमाएं थीं। दुनिया भर से उसके रिश्ते-नाते थे। दोस्ती-यारी थी। पुराणों और धर्म ग्रंथों में इसका जिक्र मिलता है। माता पृथ्वी पुत्रोहम पृथिव्याः या माता च पार्वती देवी पिता देवो महेश्वरः । बांधवाः शिवभक्ताश्च स्वदेशोभुवनस्त्रयं की बात भारत में अरसे से कही जाती रही है और आज भी कही जाती है। अगर दुनिया के देशों ने इसी भारतीय सूत्र पर अमल किया होता तो उनकी सीमाओं पर युद्ध के हालात ही क्यों बनते? अगर विश्व परिवार दिवस को मनाने की जरूरत पड़ी है तो हो न हो इसके कारण और निवारण दोनों पक्षों पर विचार करना होगा। जिस तरह से दुनिया भर में परिवार नाम की संस्था बिखर रही है। संयुक्त परिवार टूट रहे हैं और उनकी जगह एकल परिवार ले रहे हैं। पति-पत्नी बच्चों को भी नहीं पाल पा रहे हैं। उन्हें पालनाघर और हॉस्टलों में डाल रहे हैं। उससे बच्चों का विकास बाधित हो रहा है। वे कुंठित, अवसादग्रस्त और चिड़चिड़े हो रहे हैं। ऐसे में आदर्श परिवार और आदर्श समाज की कल्पना कोई करे भी तो किस तरह? परिवार प्रतीकों से नहीं, प्यार और सहकार से चलते हैं। बच्चे को विलायत भेजकर उच्च शिक्षा तो दिलाई जा सकती है लेकिन आदर्शों, सिद्धांतों और संस्कारों की दीक्षा तो परिवार में रहकर ही संभव है। दादा-दादी, नाना-नानी की गोद में कहानियों को सुनते हुए, हंसते, खिलखिलाते हुए बढ़ना बचपन को एक नई ताजगी, नई ऊर्जा और नई संचेतना देता है। रिश्तों की गोद में बैठा बच्चा नए-नए अनुभव प्राप्त करता है। बच्चे को कठिनाइयों से जूझने की जो समझ परिवार से मिलती है, वह दुनिया के किसी भी मैनेजमेंट कॉलेज या विश्वविद्यालय में नहीं मिल सकती। परिवार एक ऐसी खदान है, जहां से मानव रत्न निकलते हैं। वह ऐसी टकसाल है, जहां से हीरे, मोती, जवाहरात निकलते हैं। लेकिन भौतिकता के व्यामोह में फंसकर हम खुद को परिवार से अलग करते जा रहे हैं। व्यक्ति तब और एकाकी हो जाता है, जब वह अपनों से, अपने परिवार से अलग रहने की सलाह दूसरों से लेने लगता है और अपने विवेक को गिरवी रख देता है। भारतीय चिंतकों की बातों पर गौर करें तो यहां हर व्यक्ति के 16 संस्कार किए जाते हैं। यह कुछ उसी तरह का है जैसे कोई नवविवाहिता सोलह शृंगार कर रही हो। नीति भी कहती है कि संस्कारहीन व्यक्ति पशु से भी गया-गुजरा होता है। आचार्य भवभूति अगर उत्तरराम चरितम में तिर्यंगगता वरममी न परम मनुष्याः लिखते हैं तो यहां उनका इशारा मनुष्य की चालबाजियों और शरारतों की ओर है। पशु-पक्षी भी अपने परिवार के साथ सुखपूर्वक रहते हैं लेकिन मनुष्य है कि परिवार के साथ रहने में परेशानी महसूस कर रहा है। यह जानते हुए भी कि मां के गर्भ में आने से बच्चे के तीन साल तक का होने तक उसकी 80 प्रतिशत शिक्षा पूरी हो जाती है, पारिवारिक मूल्यों, परंपराओं, आदर्शों और संस्कारों की उपेक्षा इस देश और विश्व को कहां ले जाएगी, इस पर गहन आत्ममंथन की जरूरत है । पहले परिवार भावना प्रधान होते थे। संवेदना प्रधान होते थे लेकिन अब वे वासना प्रधान हो गए हैं। स्वार्थ प्रधान हो गए हैं। समस्या की जड़ यहां है। ऐसे में परिवार को संजीवनी देने वाला नेह जल सूख रहा है। जब तक परिवार धर्म से जुड़े थे, कर्तव्य बोध से जुड़े थे, तब तक वे धरती के स्वर्ग थे लेकिन अब वह बात नहीं रही। अगर एक दिन के जागृति अभियान चलाने भर से परिवारों को मजबूत होना होता तो वे कब के मजबूत हो चुके होते। आर्थिक तौर पर भी और नैतिक व सांस्कृतिक तौर पर भी । जब तक हम लार्ड मैकाले की शिक्षा पद्धति से विमुख नहीं होते, अपनी मूल गुरुकुल परंपरा की ओर नहीं लौटते, तब तक परिवार, समाज, देश और प्रदेश को विकसित नहीं कर सकते । मन, वाणी और कर्म के मिलन के बिना त्रिवेणी स्नान का वैसे भी क्या मतलब है? परिवार बनता है त्याग और तपस्या से। बड़े-छोटे की भावनाओं के समादर से। एक देशी कहावत है कि दस-पांच की लाठी और एक का बोझ। एक सुलझा हुआ परिवार बड़े से बड़े दायित्व मिल-बांटकर पूरे कर लेता है।लेकिन एकल परिवार के लिए वही जी का जंजाल बन जाता है। मानसकार ने भी लिखा है कि जहां सुमति तंह सम्पति नाना। जहां कुमति तंह विपति निधाना। अब यह हमें तय करना है कि हम सामाजिक, पारिवारिक जीवन चाहते हैं, मन, वाणी और कर्म के मिलन की त्रिवेणी में स्नान कर शक्तिपुंज बनना चाहते हैं या अपने में ही खोया हुआ कमजोर इंसान बनने में गौरव की अनुभूति करना चाहते हैं। हमें अपनी शिक्षा का, संस्कार का, जीवन व्यवहार का सांचा ठीक करना होगा। इसके बिना हम मधुरिम भविष्य के बेहतरीन खिलौने बना ही नहीं सकते। धर्म जीवात्मा की भूख है।

# शिकायत और समाधान

विशाखा कानून के तहत यह प्रावधान इसलिए किया गया था कि अगर किसी संस्थान में किसी महिला के यौन उत्पीड़न का प्रयास किया जाता है, तो वह उस समिति के पास अपनी शिकायत दर्ज करा सके। उस कुश्ती महासंघ में यौन उत्पीड़न को लेकर चल रहे आंदोलन के बीच यह चिंताजनक तथ्य उजागर हुआ कि तीस में से पंद्रह खेल महासंघों में व्यवस्थित आंतरिक शिकायत समिति नहीं है। कुश्ती महासंघ समेत पांच खेल महासंघों में आंतरिक शिकायत समिति गठित ही नहीं है। कुछ खेल संघों में समिति तो है, पर उनमें कोई कोई योग्य सदस्य नहीं है। कुछ में कोई बाहरी सदस्य नहीं है। इस पर राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग ने खेल संघों से जवाब तलब किया है। यौन उत्पीड़न कानून के तहत हर संस्थान में आंतरिक शिकायत समिति का गठन अनिवार्य है। विशाखा कानून के तहत यह प्रावधान इसलिए किया गया था कि अगर किसी संस्थान में किसी महिला के यौन उत्पीड़न का प्रयास किया जाता है, तो वह उस समिति के पास अपनी शिकायत दर्ज करा सके। उस समिति को अधिकार दिए गए हैं कि वह दोषी व्यक्ति के खिलाफ दंडात्मक कार्रवाई कर सके। इस व्यवस्था की वजह से संस्थानों, निजी कंपनियों आदि में महिलाओं के साथ पुरुषों के व्यवहार में बदलाव भी देखा गया। कई मामलों में दोषी पाए जाने वाले कर्मचारियों के खिलाफ कठोर दंडात्मक कार्रवाई की गई। कइयों को अपनी नौकरी तक गंवानी पड़ी। मगर हमारे देश में संस्थानों का स्वरूप भी हमारे समाज की तरह का ही है, इसलिए वहां भी पुरुष मानसिकता आड़े आती है। खेल महासंघों में आंतरिक शिकायत समिति गठित न किए जाने के पीछे भी यही मानसिकता काम करती देखी जा सकती है। इन समितियों में संस्थान के भीतर के कुछ ऐसे कर्मचारियों को सदस्य बनाया जाता है, जो यौन उत्पीड़न को रोकने में मददगार साबित हो सकते हैं। उनमें महिला कर्मचारियों को तरजीह दी जाती है। फिर कानून में यह भी प्रावधान किया गया है कि उन समितियों में कुछ योग्य बाहरी लोगों को भी सदस्य बनाया जाना चाहिए। ऐसा इसलिए कि संस्थानों के भीतर किसी प्रकार के पक्षपात आदि के चलते शिकायतकर्ता को अन्याय का शिकार न होना पड़े। मगर इन नियमों का पूरी तरह पालन करना तो दूर, कई संस्थान आंतरिक समिति गठित करने की अनिवार्यता को ही धता बताते नजर आते हैं। इसके पीछे का मकसद जाहिर है। न समिति रहेगी, न कोई महिला शिकायत दर्ज कराएगी। फिर यह भी किसी से छिपी बात नहीं है कि कार्यालयों में अपने खिलाफ होने वाले दुर्व्यवहार की शिकायत लेकर महिलाएं अदालत का रुख करने में हिचकती हैं। हालांकि जिन संस्थानों में आंतरिक शिकायत समिति का गठन किया भी गया है, उनमें से बहुतों में पक्षपात की शिकायतें मिलती हैं। चूंकि समिति में उसी संस्थान के कर्मचारी सदस्य होते हैं, इसलिए उनमें किसी एक के प्रति झुकाव स्वाभाविक है। फिर ये समितियां समझा-बुझा कर दोनों पक्षों के बीच समझौता कराने का प्रयास करती हैं। इस तरह मामला तो दब जाता है, पर प्रवृत्ति नहीं खत्म हो पाती। पर इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि आंतरिक शिकायत समिति होने से कमार्चारियों पर एक मनोवैज्ञानिक दबाव काम करता है। अगर कुश्ती महासंघ में सशक्त आंतरिक शिकायत समिति गठित होती, तो महिला खिलाड़ियों को शायद इस तरह अपने उत्पीड़न की पीड़ा को सिसक-सिसक कर सहन न करना पड़ता। उन्हें अपने प्रति हुए दुर्व्यवहार की शिकायत लेकर सड़क पर न उतरना पड़ता। वह समिति मामले को कानूनी ढंग से निपटाने का प्रयास करती। देखने की बात है कि खेल महासंघ राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के सवाल पर क्या जवाब देते और इस मसले पर कितनी गंभीरता दिखाते हैं।

# बेहतरी की उम्मीद

केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड यानी सीबीएसई के तहत इस साल हुई दसवीं और बारहवीं की परीक्षाओं के नतीजे घोषित होने के साथ एक बार फिर इसके आधार पर स्कूली शिक्षा के सकारात्मक और नकारात्मक पहलुओं पर चर्चा स्वाभाविक ही है। गौरतलब है कि इस बार दसवीं कक्षा के नतीजों में 93.12 फीसद और बारहवीं में 87.33 फीसद विद्यार्थियों ने कामयाबी हासिल की है। पिछले कई सालों की तरह इस साल फिर दोनों ही कक्षाओं में लड़कों के मुकाबले लड़कियों ने बेहतर प्रदर्शन किया। दसवीं में लड़कियों की सफलता का प्रतिशत 94.25 रहा, जबकि लड़कों की तादाद इससे करीब दो फीसद कम रही। दूसरी ओर, बारहवीं के नतीजों में लड़कियों की उपलब्धि लड़कों के सामने छह फीसद ज्यादा अच्छी रही। इस कक्षा में 84.67 फीसद लड़के सफल रहे, जबकि 90.68 फीसद लड़कियों ने बाजी मारी। स्वाभाविक ही इन नतीजों के बाद अब इससे आगे के सफर के लिए कामयाब हुए विद्यार्थी नया रास्ता तलाशेंगे और अब तक हासिल दक्षता और ज्ञान के जरिए नई ऊंचाई की ओर बढ़ेंगे। लेकिन साथ ही इन परिणामों ने समाज से लेकर सरकार तक के लिए कुछ अन्य समस्याओं पर गौर करने का मौका भी मुहैया कराया है। दरअसल, इस साल बारहवीं कक्षा के नतीजों में उल्लेखनीय कमी दर्ज की गई, वहीं दसवीं के परिणाम का भी यही रुख रहा। बारहवीं में इस बार पिछले साल के मुकाबले 5.38 फीसद कम विद्यार्थी कामयाब हुए, जबकि दसवीं में यह गिरावट 1.28 फीसद रही। दसवीं में कम विद्यार्थियों के पास होने के आंकड़े को अगर बड़ा न भी मानें तो बारहवीं में लगभग साढ़े पांच फीसद की कमी चिंता का कारण होना चाहिए। हालांकि पहले के मुकाबले कमतर नतीजे किसी भी रूप में स्वागतयोग्य नहीं माने जाते, आंकड़े या अनुपात में अंतर चाहे जो हो।

## Social Media Corner

सच के हक में...

महान शिक्षाविद तथा आदिवासी उत्थान के प्रति हमेशा सजग रहने और चिंतन करने वाले डॉ करमा उरांव जी के निधन का दुःखद समाचार मिला। डॉ करमा उरांव जी से कई विषयों पर मार्गदर्शन मिलता था। उनके निधन से आज मुझे व्यक्तिगत क्षति हुई है। परमात्मा दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान कर शोकाकुल परिवारजनों को दुःख की यह विकट घड़ी सहन करने की शक्ति दे।

**(सीएम हेमंत सोरेन के ट्विटर अकाउंट से)**

झारखंड में माफियाओं के द्वारा सिस्टम के लूप होल्स का फायदा उठाकर सरकारी, गैर सरकारी, गरीब, पिछड़े और आदिवासियों के जमीन लूट के संबंध में आज मैनें मुख्यमंत्री @HEMANTSORENJMM जी को पत्र लिखा है। राज्य गठन के बाद से ऐसे सभी जमीन के हस्तांतरण और म्यूटेशन की सीबीआई या सिटिंग जज की अध्यक्षता में न्यायिक आयोग बनाकर जांच कराइए, ताकि इस महालूट पर विराम लगे और दोषियों को सजा मिले।

**(पूर्व सीएम बाबूलाल मरांडी के ट्विटर अकाउंट से)**

Printed and Published by Fahim Akhtar on behalf of MAA MEDIA VENTURE and Printed at SHIVA SAI PUBLICATION PRIVATE LIMITED, Kathitand, Near Tender Bagicha, P.O.+P.S.- Ratu, Dist.-Ranchi, Jharkhand-835222, and Published at Roshpa Tower, 5th Floor, Main Road, Ranchi, Jharkhand-834001.Editor-Fahim Akhtar. E-mail : thephotonnewsjharkhand@gmail.com

# प्लेऑफ में जगह सुरक्षित करने के लिए सनराइजर्स से भिड़ेगा गुजरात टाइटंस

**अहमदाबाद (एजेंसी)।** अमूमन अपने प्रदर्शन में निरंतरता बनाए रखने वाली गुजरात टाइटंस की टीम पिछले मैच की नाकामी को भुलाकर सनराइजर्स हैदराबाद के खिलाफ सोमवार को यहां ठोस प्रदर्शन करके इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) के प्लेऑफ में अपनी जगह सुरक्षित करने की कोशिश करेगी। मौजूदा चैंपियन गुजरात टाइटंस के लिए प्लेऑफ में जगह बनाने के लिए एक और जीत पर्याप्त होगी जबकि सनराइजर्स के 11 मैचों में चार जीत से आठ अंक हैं और वह अगले दौर में जगह बनाने की दौड़ से लगभग बाहर हो चुका है। गुजरात को पिछले मैच में मुंबई इंडियंस से हार का सामना करना पड़ा था जिसमें राशिद खान ने बल्ले और गेंद दोनों से अच्छा प्रदर्शन किया था लेकिन उसके अन्य खिलाड़ी नहीं चल पाए थे।

उसके गेंदबाज सूर्यकुमार यादव पर अंकुश लगाने में नाकाम रहे थे जबकि उसके प्रमुख बल्लेबाज भी नहीं चल पाए थे। गुजरात 12 मैचों में 16 अंक लेकर अब भी अंक तालिका में शीर्ष पर काबिज है लेकिन उसे अगर मगर की परिस्थितियों से बचने के लिए अगले दोनों मैचों में गलतियों में सुधार करके बेहतर प्रदर्शन करना होगा। कप्तान हार्दिक पंड्या ने भी टीम की 12 मैचों में चौथी हार के बाद कहा था,'' हम एक समूह के रूप में अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाए। हमारी गेंदबाजी भी अच्छी नहीं रही। हमारी या तो स्पष्ट रणनीति नहीं थी या फिर हम उस पर अमल नहीं कर पाए।'' बल्लेबाजी में शीर्ष क्रम के बल्लेबाज नहीं चल पाए और राशिद खान की तूफानी अर्धशतकीय पारी के बावजूद टीम को इस मैच में हार का सामना करना पड़ा था।

इस स्टार स्पिनर ने गेंदबाजी में भी अच्छा प्रदर्शन किया था। अनुभवी तेज गेंदबाज मोहम्मद शमी भी उस मैच में नहीं चल पाए थे लेकिन वह नई गेंद से अपना जादू बिखेरने के लिए फिर से तैयार होंगे। मोहित शर्मा को पूर्व के मैचों में बीच के ओवरों में उपयोग किया गया था लेकिन मुंबई के खिलाफ उन्हें नई गेंद सौंपी गई थी। गुजरात टाइटंस का यह दांव हालांकि नहीं चल पाया था। दूसरी तरफ सनराइजर्स की टीम अगर मगर की कठिन डगर में फंसी हुई है तथा उसे अपने बाकी बचे

तीनों मैच जीतने के अलावा अन्य टीमों से भी अनुकूल परिणाम के लिए प्रार्थना करनी होगी। सनराइजर्स की टीम अपनी गलतियों से ही ऐसी परिस्थिति में पहुंची है। लखनऊ सुपरजाइंट्स के खिलाफ एक समय वह जीत की स्थिति में थी लेकिन उसके गेंदबाज अंतिम छह ओवरों में 80 रन का बचाव नहीं कर पाए थे।

लखनऊ की तरफ से निकोलस पूरन ने मैच का पासा पलटने वाली पारी खेली थी। शीर्ष क्रम के बल्लेबाजों की नाकामी और प्रमुख गेंदबाजों के नहीं चल पाने से सनराइजर्स को इस सत्र में बड़ा नुकसान हुआ है। शीर्ष क्रम में मयंक अग्रवाल की जगह अनमोलप्रीत सिंह को रखा गया लेकिन वह भी अभी तक प्रभाव नहीं छोड़ पाए हैं। राहुल त्रिपाठी की नाकामी भी टीम को भारी पड़ रही है। उन्होंने अब तक 11 मैचों में केवल 199 रन बनाए हैं। कप्तान एडेन मार्कराम भी आगे बढ़कर नेतृत्व नहीं कर पाए हैं। उन्होंने 10 मैचों में 207 रन बनाए हैं। टीम तेज गेंदबाज उमरान मलिक का भी सही उपयोग नहीं कर पाई है जिन्होंने अपना अंतिम मैच 29 अप्रैल को खेला था। अब्दुल समद का फॉर्म में वापसी करना हालांकि टीम के लिए सकारात्मक संकेत है।

### दोनो ही टीमें इस प्रकार हैं-

**सनराइजर्स हैदराबाद:** एडेन मार्कराम (कप्तान), अब्दुल समद, राहुल त्रिपाठी, ग्लेन फिलिप्स, अभिषेक शर्मा, मार्को यानसन, फजलहक फारूकी, कार्तिक त्यागी, भुवनेश्वर कुमार, टी. नटराजन, उमरान मलिक, हैरी ब्रूक, मयंक अग्रवाल, हेनरिक क्लासेन, आदिल राशिद, मयंक मारकंडे, विवरांत शर्मा, समर्थ व्यास, संवीर सिंह, उपेंद्र यादव, मयंक डागर, नीतीश कुमार रेड्डी, अकील होसेन और अनमोलप्रीत सिंह।

**गुजरात टाइटन्स:** हार्दिक पंड्या (कप्तान), शुभमन गिल, डेविड मिलर, अभिनव मनोहर, साईं सुदर्शन, रिद्धिमान साहा, मैथ्यू वेड, राशिद खान, राहुल तेवतिया, विजय शंकर, मोहम्मद शमी, अल्जारी जोसेफ, यश दयाल, प्रदीप सांगवान, दर्शन नलकंडे , जयंत यादव, आर. साई किशोर, नूर अहमद, दासुन शनाका, ओडियन स्मिथ, केएस भरत, शिवम मावी, उर्विल पटेल, जोशुआ लिटिल और मोहित शर्मा।

## इटालियन ओपन में पहला मैच जीतकर फिर से दुनिया के नंबर एक खिलाड़ी बने अल्कराज

**रोम। (एजेंसी)।** कार्लोस अल्कराज ने इटालियन ओपन टेनिस टूर्नामेंट में अपने पदार्पण मैच में जीत दर्ज करके विश्व रैंकिंग में फिर से नंबर एक स्थान हासिल कर लिया है। अल्कराज ने अल्बर्ट रामोस विनोलास को 6-4, 6-1 से हराकर नोवाक जोकोविच की जगह शीर्ष स्थान हासिल किया। इससे उन्होंने यह भी सुनिश्चित किया कि 28 मई से शुरू होने वाले फ्रेंच ओपन में उन्हें पहली वरीयता मिलेगी। बार्सिलोना और मैड्रिड में खिताब जीतकर यहां पहुंचे अल्कराज ने अपने विजय अभियान को 12 मैच तक पहुंचा दिया है। इस साल क्ले कोर्ट पर उनका रिकॉर्ड 20-1 हो गया है। अल्कराज का अगला मुकाबला जिरी लेहेका या हंगरी के क्वालीफायर फैबियन मरोज़सन से होगा।

पुरुष वर्ग में दूसरे दौर के अन्य मैचों में छठी वरीयता प्राप्त आंद्रे रुबलेव ने एलेक्स मोल्केन को 6-3, 6-4 से,लोरेंजो सोनेगो ने योशीहितो निशिओका को 7-5, 6-3 से, जेजे वोल्फ ने 14वीं वरीयता प्राप्त ह्यूबर्ट हर्कज को 6-3, 6-4 से और बोर्ना कॉरिच ने थियागो मोंटेइरो को 4-6, 7-6 (8), 7-6 (5) से हराया। महिला वर्ग के तीसरे दौर के मैचों में कोलंबिया की क्वालीफायर कैमिला ओसोरियो ने पांचवीं वरीयता प्राप्त कैरोलिन गार्सिया को 6-4, 6-4 से, एंहेलिना कलिनिना ने सोफिया केनिन को 6-4, 6-2 से और वांग जयिू ने टेलर टाउनसेंड को 6-2, 0-6, 7-5 से पराजित किया।

## यशस्वी बीसीसीआई चयनकर्ता के लिए अच्छे सिरदर्द साबित होंगे: स्मिथ

**नई दिल्ली (एजेंसी)।** साउथ अफ्रीका के पूर्व कप्तान ग्रीम स्मिथ ने राजस्थान रॉयल्स (आरआर) के सलामी बल्लेबाज यशस्वी जायसवाल की मौजूदा आईपीएल 2023 में उनके शानदार प्रदर्शन की जमकर प्रशंसा की। जायसवाल के शानदार प्रदर्शन ने सभी का दिल जीत लिया है, क्योंकि उन्होंने 12 मैचों में शानदार प्रदर्शन करते हुए 52.27 औसत से 572 रन बनाए हैं। इसके अलावा जायसवाल ऑरेंज कैप हासिल करने के लिए निश्चित रूप से रेस में है। उनकी प्रभावशाली पारियों से खुश होकर, ग्रीम स्मिथ ने कहा कि जायसवाल, इशान किशन और शुभमन गिल की पसंद को छोड़कर, युवा प्रतिभाओं का चयन करने के मामले में बीसीसीआई के लिए सिरदर्द होगा। स्मिथ ने कहा, चयन के मामले में जायसवाल निश्चित रूप से दरवाजे पर दस्तक दे रहे हैं। फिलहाल वह इतना ही कर सकते हैं। उन्होंने उस पर काबू पा लिया है। भारतीय क्रिकेट को रोहित शर्मा, विराट कोहली और केएल राहुल के रूप में सीनियर क्रिकेटरों जैसे कई विकल्प मिले हैं, जो अब चोटिल हैं। आपके पास ईशान किशन और शुभमन गिल भी हैं। चयनकर्ताओं के पास निश्चित रूप से कुछ अच्छे सिरदर्द हैं, लेकिन यशस्वी ने निश्चित रूप से चयनकर्ताओं की चर्चा में अपना नाम रखा है।

## आरसीबी के आगे आरआर ने टेक दिए घुटने

### - 112 रनों के बड़े अंतर से हासिल की जीत, सीजन के सबसे न्यूनतम स्कोर पर ऑलआउट हुई टीम

**जयपुर (एजेंसी)।** इंडियन प्रीमियर लीग में प्लेऑफ की रेस में रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु अब भी बनी हुई है। राजस्थान रॉयल्स को 112 रन के बड़े अंतर से मात देकर आरसीबी ने प्लेऑफ की उम्मीदों को बरकरार रखा है। जयपुर में खेले गए इस मुकाबले में रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु के कप्तान फाफ डु प्लेसिस ने टॉस जीतकर पहले बैटिंग करने का फैसला किया जो उनके लिए काफी उपयोगी साबित हुआ। इस मुकाबले में पहले बल्लेबाजी करते हुए आरसीबी ने 171 रन बनाए और मेजबान टीम को 172 रनों का टारगेट दिया।

## मेस्सी की पीएसजी की टीम में वापसी लेकिन एमबापे ने जीता दिल

पेरिस। लियोनेल मेस्सी ने संक्षिप्त निलंबन झेलने के बाद पेरिस सेंट जर्मेन (पीएसजी) की टीम में वापसी की लेकिन वह काइलन एमबापे थे जिन्होंने फ्रांसीसी फुटबॉल लीग के मैच में अपनी टीम की अजाशियो पर 5-0 के जीत में दर्शकों का दिल लूटा। पीएसजी ने इस जीत से दूसरे स्थान पर काबिज लेंस पर छह अंक की बढ़त बना दी है और वह फ्रांसीसी लीग में रिकॉर्ड 11वां खिताब जीतने के करीब पहुंच गया है। अब जबकि तीन दौर के मैच खेले जाने बाकी हैं तब पीएसजी के 35 मैचों में 81 अंक हो गए हैं। लेंस के इतने ही मैचों में 75 अंक हैं। दूसरी तरफ इस मैच में हार से अजाशियो 18वें स्थान पर खिसक गया है। एमबापे ने इस मैच में दो गोल किये जिससे उनके लीग में सर्वाधिक 26 गोल हो गए हैं और वह लेंस के स्ट्राइकर एलेक्जेंडर लैकाज़ेट से दो गोल आगे हो गए हैं। मेस्सी को क्लब की अनुमति लिए बिना सऊदी अरब की यात्रा करने पर पीएसजी ने निलंबित कर दिया था जिसके कारण वह पिछले मैच में नहीं खेल पाए।

## धोनी अभी खेलते रहें: हरभजन

### मिताली ने भी प्रेरणादायी कप्तान बताया

चेन्नई। टीम इंडिया के पूर्व दिग्गज स्पिनर हरभजन सिंह ने कहा है कि महेन्द्र सिंह धोनी को अभी आईपीएल में खेलते रहना चाहिये। हरभजन के अनुसार धोनी से प्रशंसकों की उम्मीदें जुड़ी हुई हैं। साथ ही कहा कि अभी उनमें काफी क्रिकेट बचा है। इससे पहले भी कई पूर्व क्रिकेटरों माइकल वॉन, सुरेश रैना आदि ने कहा था कि धोनी की फिटनेस अभी काफी अच्छी है और इसलिए उन्हें खेलते रहना चाहिये। धोनी ने इस सत्र में अब तक 204.25 के शानदार स्ट्राइक रेट के साथ 12 मैचों में 96 रन बनाए हैं। हरभजन ने कहा, धोनी ने समय रोक दिया है। वह अभी भी वही पुराने धोनी लगते हैं। वह बड़े शॉट्स को आसानी से खेल रहे हैं। वह आसानी से छक्के लगाते हुए बल्लेबाजी में खतरनाक दिख रहे हैं। साथ ही कहा कि धोनी हमारी भावनाओं को ठेस नहीं पहुंचाएं और खेलते रहे। वहीं भारतीय टीम की पूर्व क्रिकेटर मिताली राज ने भी कहा कि धोनी जिस प्रकार बाहर की बातों पर ध्यान दिये बिना सीएसके टीम की सहायता कर रहे हैं वह प्रेरणादायी है। मिताली ने कहा, जब कोई खिलाड़ी अपने करियर के अंतिम छोर पर पहुंचता है तो बहुत सारी बातें होती हैं। धोनी ने इस प्रकार की बातों पर ध्यान न देते हुए अपनी टीम का मार्गदर्शन किया। उन्होंने सीएसके को अब तक शीर्ष दो स्थानों की तलाश में रहने में सहायता की है। उनकी कप्तानी, बल्कि उनके द्वारा बनाई गई मैदानी रणनीतियों ने सीएसके को अच्छा प्रदर्शन करने में मदद की है। मिताली ने कहा, टूर्नामेंट में उन्होंने कई स्मार्ट चालें चलीं हैं। अजिंक्य रहाणे का चयन यह साबित करता है।

## प्रभसिमरन ने पंजाब किंग्स प्रबंधन का आधार व्यक्त किया, कम उम्र में शतक लगाने वाले पांचवे खिलाड़ी बने

**नई दिल्ली (एजेंसी)।** दिल्ली कैपिटल्स के खिलाफ आईपीएल लीग मुकाबले में शानदार शतक लगाने वाले पंजाब किंग्स के प्रभसिमरन सिंह इसके बाद भावुक हो गये। उन्होंने अवसर और सहयोग देने के लिए पंजाब किंग्स प्रबंधन का आभार जताया है। उन्होंने कहा, मैं काफी समय से टीम के साथ हूं और ऐसे में जब लगातार अवसर मिलते हैं तो हमें उसका लाभ उठाना चाहिये। साथ ही कहा कि शुरुआत में विकेट थोड़ा कठिन था पर हमारी योजना कुछ साझेदारी बनाने और उसके बाद आक्रामक खेलने की थी जिसमें बाद में हमें सफलता मिली। मैं अनुभवी खिलाडियों से भी बात करता हूं, जो मुझसे कहते रहते हैं कि मैं अच्छी शुरुआत का लाभ उठाते हुए खेल को आगे ले जाऊं। जिसमें मुझे अब तक सफलता मिली है। साथ ही कहा कि अवसर देने के लिए मैं प्रबंधन का आभारी हूं।

प्रभसिमरन ने इस सत्र में अब तक शानदार बल्लेबाजी करते हुए 334 रन बना लिए हैं। वह सबसे कम उम्र में शतक लगाने वाले खिलाड़ी की सूची में अब पांचवे नंबर पर आ गये हैं। इस सूची में पहले नंबर पर मनीष पांडे हैं। मनीष ने 19 साल 253 दिन की उम्र में शतक लगाया था जबकि

प्रभसिमरन ने 22 साल 276 दिन में शतक लगाया है। सबसे कम उम्र में शतक लगाने वाले अन्य बल्लेबाज हैं ऋषभ पंत 20 साल, 218 दिन में शतक, देवदत्त पडिक्कल 20 वर्ष, 289 दिन, यशस्वी जायसवाल 21 वर्ष, 123 दिन, संजू सैमसन 22 साल, 151 दिन !

65 गेंदों पर 10 चौके और 6 छक्कों की मदद से 103 रन बनाए और अपनी टीम को सम्मानजनक स्कोर तक पहुंचाया।

वहीं दिल्ली की टीम पंजाब से मिले 168 रन के लक्ष्य को मजबूत शुरूआत के बावजूद नहीं पा सकी। लक्ष्य का पीछा करते हुए दिल्ली ने कप्तान डेविड वार्नर के 54 और सॉल्ट के 17 गेंदों पर 21 रन से तेज शुरूआत की थी पर मध्यक्रम के विफल होने से वह लक्ष्य हासिल करने में नाकाम रही।

## चैंपियंस लीग : रियाल मैड्रिड ने गेटाफे को हराया, करीम बेनजेमा को दिया विश्राम

बार्सिलोना। रियाल मैड्रिड ने मैनचेस्टर सिटी के खिलाफ अगले सप्ताह होने वाले चैंपियंस लीग सेमीफाइनल के निर्णायक मुकाबले को देखते हुए अपने स्टार स्ट्राइकर करीम बेनजेमा सहित चोटी के खिलाड़ियों को विश्राम दिया लेकिन इसके बावजूद उसकी टीम गेटाफे को 1-0 से हराकर स्पेनिश लीग फुटबाल टूर्नामेंट ला लिगा में दूसरे स्थान पर पहुंचने में सफल रही। मैच का एकमात्र गोल मार्को असेंसियो ने 70वें मिनट में किया। इस जीत से रियाल मैड्रिड के 34 मैचों में 71 अंक हो गए हैं और वह एटलेटिको मैड्रिड से दो अंक आगे हो गया है। एटलेटिको के 33 मैचों में 69 अंक हैं। बार्सिलोना 33 मैचों में 82 अंक लेकर शीर्ष पर काबिज है। बार्सिलोना रविवार को अगर एस्पेनयोल को पराजित कर देता है तो वह स्पेनिश लीग का खिताब अपने नाम कर लेगा और यही वजह है कि रियाल मैड्रिड चैंपियंस लीग पर ध्यान केंद्रित कर रहा है। रियाल मैड्रिड और मैनचेस्टर सिटी के बीच चैंपियंस लीग सेमीफाइनल का पहला चरण1-1 से बराबर छूटा था और ऐसे में अगले सप्ताह होने वाला दूसरे चरण का मैच निर्णायक बन गया है।

## नीदरलैंड में चार जून को एफबीके खेलों में भाग लेंगे नीरज चोपड़ा

**नई दिल्ली (एजेंसी)।** इस महीने के शुरू में सत्र की अपनी पहली प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक जीतने वाले ओलंपिक चैंपियन भाला फेंक खिलाड़ी नीरज चोपड़ा चार जून को नीदरलैंड के हेंगेलो में होने वाले फैनी ब्लैंकर्स कोएन (एफबीके) खेलों में हिस्सा लेंगे। भारत के इस 25 वर्षीय खिलाड़ी ने पांच मई को डायमंड लीग सीरीज के दोहा चरण में 88.67 मीटर भाला फेंक कर स्वर्ण पदक जीता था। एफबीके के आयोजकों ने अपने सोशल मीडिया हैंडल पर चोपड़ा की इस

प्रतियोगिता में भागीदारी की जानकारी देते हुए कहा,'' एक अन्य ओलंपिक चैंपियन हेंगेलो आ रहा है।

जिनका सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन 89.64 है और जो ओलंपिक चैंपियन है, वह नीरज चोपड़ा हमेशा नए लक्ष्य हासिल करते हैं।'' एफबीके खेल विश्व एथलेटिक्स की महाद्वीपीय गोल्ड स्तर की प्रतियोगिता है जिसका नाम फैनी ब्लैंकर्स कोएन के नाम पर रखा गया है जिन्होंने लंदन में 1948 के ओलंपिक खेलों में चार स्वर्ण पदक जीते थे। मौजूदा डायमंड लीग चैंपियन चोपड़ा एफबीके खेलों में फिर से मौजूदा विश्व चैंपियन एंडरसन पीटर्स का सामना करेंगे जो दोहा में 85.88 मीटर भाला फेंक कर तीसरे स्थान पर रहे थे।

## अब युवा खिलाड़ियों को अवसर देगी दिल्ली कैपिटल्स : होप्स

नई दिल्ली। दिल्ली कैपिटल्स की टीम आईपीएल के 16 वें सत्र में खराब प्रदर्शन के साथ ही प्लेऑफ की दौड़ से बाहर हो गयी है। पंजाब किंग्स के खिलाफ मिली हार के बाद उसकी सभी संभावनाएं समाप्त हो गयीं। ऐसे में अब टीम के तेज गेंदबाजी कोच जेम्स होप्स ने कहा है कि अंतिम मैच में युवा खिलाड़ियों को अवसर मिलेंगे। कोच के अनुसार अनुभवी खिलाड़ियों का प्रदर्शन निराशाजनक रहा है जिससे टीम इस प्रकार के खराब हाल में पहुंची है। पंजाब के सात विकेट पर 167 रन के जवाब में अच्छी शुरूआत के बावजूद दिल्ली की टीम आठ विकेट पर 136 रन ही बना पायी। टीम के छह बल्लेबाज केवल 19 रन ही बना पाये। होप्स ने मैच के बाद कहा, ''इतनी अच्छी शुरूआत के बाद बल्लेबाजों का जिस तरह से खराब प्रदर्शन रहा, उसे स्वीकार नहीं किया जा सकता। कोई भी खिलाड़ी पारी संवारने की भूमिका नहीं निभा पाया। पूरे टूर्नामेंट में कुछ मैचों को छोड़कर बल्लेबाजों ने निराश किया है। दिल्ली ने युवा यश धुल और सरफराज खान को अब तक अधिक अवसर नहीं दिये थे। इन दोनो के ही अगल दो मैचों में उनके खेलने की संभावना पर होप्स ने कहा, ''चयन के मामलो पर मैं नहीं बोल सकता पर उम्मीद है कि अगले दो मैचों में युवा खिलाड़ियों को अवसर मिलेगा। हम जीत के साथ टूर्नामेंट से बाहर होना चाहेंगे। वहीं पंजाब किंग्स के स्पिन गेंदबाजी कोच सुनील जोशी ने 65 गेंद में 103 रन बनाने वाले सलामी बल्लेबाज प्रभसिमरन सिंह की तारीफ करते हुए कहा, ''उसकी प्रतिभा की वजह से हमने उसका साथ दिया और अब मैच दर मैच उसके खेल में परिपक्वता आ रही है पर यह महज एक शुरूआत है। उन्होंने कहा, ''उसकी खूबी यह है कि वह 360 डिग्री शॉट्स खेल सकता है। अगर सलामी बल्लेबाज इस तरह मैदान के चारों ओर मार पाता है तो विरोधी गेंदबाजों पर दबाव बन जाता है। वह इससे पहले अच्छी शुरूआत को बड़ी पारी में बदल नहीं पा रहा था पर इस मैच में वह सफल हो गया।

## प्लेऑफ में जगह बनाने वाली पहली टीम बन सकती है गुजरात

**नयी दिल्ली (एजेंसी)।** आईपीएल के 16 वें सत्र में सभी टीमों ने अब 11 मैच खेल लिए हैं। ऐसे में प्लेऑफ की भी तस्वीर सामने आने लगी है। पंजाब किंग्स के खिलाफ हार के साथ ही दिल्ली कैपिटल्स प्लेऑफ की रेस से बाहर होने वाली पहली टीम बनी है। अभी तक कोई भी टीम प्लेऑफ में नहीं पहुंच पायी है। इसके लिए नौ टीमें दौड़ में हैं। जिसमें गुजरात अंक तालिका में सबसे ऊपर आने के साथ ही प्लेऑफ में जगह बनाने के करीब है। टीम के अभी 12 मैचों में 16 अंक हैं। उसे प्लेऑफ में जगह पक्की करने के लिए केवल एक जीत चाहिये। वहीं दूसरी बड़ी दावेदार चेन्नई सुपर किंग्स (सीएसके) के ने 12 मैचों में 15 अंक हैं और वह दूसरे स्थान पर है। प्लेऑफ में पहुंचने के लिए सीएसके को दो में से किसी एक मैच को जीतना होगा। वहीं तीसरी टीम मुंबई इंडियंस भी 14 अंकों के साथ फिलहाल तीसरे पायदान पर है। आसानी से प्लेऑफ में पहुंचने के लिए मुंबई इंडियंस को बाकी दो मैच जीतने होंगे। वह 16 अंकों के साथ भी प्लेऑफ में जगह बना सकती है पर इसके लिए उसे बाकी टीमों के नतीजों पर निर्भर रहना पड़ेगा।

लखनऊ सुपर जायंट्स चौथे स्थान पर आ है। लखनऊ के 12 मैचों में 13 अंक हैं और उसे प्लेऑफ में जगह पक्की करने के लिए बाकी दो मैच जीतने होंगे। लखनऊ सुपर जायंट्स को मुंबई इंडियंस (16 मई) और कोलकाता नाइट राइडर्स (20 मई) से खेलना है।

वहीं राजस्थान रॉयल्स के 12 मैचों में इतने ही अंक हैं और वह अंकतालिका में पांचवें स्थान पर है। राजस्थान को अब प्लेऑफ स्थान में जगह बनाने के लिए अपने बाकी दोनों गेम जीतने की जरूरत है। साथ ही राजस्थान को अन्य परिणामों पर भी आधारित रहना होगा।

पंजाब किंग्स अंकतालिका में छठे स्थान पर आ चुकी है। पंजाब के 12 मैचों में 12 अंक हैं। प्लेऑफ में जगह बनाने की संभावनाओं के लिए पंजाब को बाकी दोनों मैच जीतने ही होंगे। साथ ही अन्य टीमों के परिणामों पर भी नजर रखनी होगी।

# कपड़ों पर भद्दी बातें करने वालों पर भड़कीं सिंगर रीटा ओरा

सिंगर रीटा ओरा अक्सर अपने स्टाइल स्टेटमेंट्स की वजह से चर्चा में रहती हैं। अब उन्होंने ट्रोल करने वालों को करारा जवाब दिया है। उन्होंने नाराजगी जाहिर की कि आखिर क्यों लोग कपड़ों को लेकर जज करते हैं। रीटा ने ये भी बताया कि वह पूरे करियर में कई बार ऐसी बातें सुनती आई हैं। सिंगर रीटा ओरा अक्सर अपने बयान को लेकर सुर्खियों में रहती हैं। इस बार उन्होंने अपने फैशन सेंस को लेकर बात की। दरअसल, उन्हें अपनी ड्रेस को लेकर अक्सर आलोचना सुननी पड़ती है। उन्होंने अपने बोल्ड स्टाइल को लेकर आलोचना करने वालों को महिला विरोधी सोच से पीड़ित बताया। उन्होंने कहा कि वह अपने पूरे करियर में कपड़ों को लेकर काफी कुछ सुनती आई हैं लेकिन अब नहीं। आइए बताते हैं सिंगर ने क्या कहकर लोगों को बोलती बंद करवाई। एंटरटेनमेंट इंडस्ट्री में महिलाओं के साथ अलग तरह का व्यवहार किया जाता है। वह क्या पहनती हैं और क्या काम करती हैं, इस पर काफी चर्चा होती है। मैंने अपने पूरे करियर ड्रेसिंग सेंस को लेकर काफी कुछ सुना है। कई लोग मुझे यह तक कह देते हैं कि यह क्यों पहना है? यह गलत है और महिला विरोधी भी है। रीटा ने आगे कहा कि मुझे इस बात से फर्क नहीं पड़ता कि लोग मेरे बारे में क्या सोचते हैं? मुझे सिर्फ इस बात से फर्क पड़ता है कि मैं क्या करना चाहती हूं और फैंस को क्या पसंद है। रीटा के इस बयान को उनके फैंस खूब पसंद कर रहे हैं। सिंगर रीटा इंग्लिश सिंगर और सॉन्ग राइटर हैं। उन्हें इंडस्ट्री में फेम हॉट राइट नाउ गाने से मिला था। जिसने रातों रात उन्हें मशहूर कर दिया था।

# टाइगर 3 के बाद सोहेल खान की फिल्म करेंगे सलमान खान?

जय हो जैसी फिल्में डायरेक्ट कर चुके सलमान खान के भाई सोहेल खान एक नई फिल्म पर काम कर रहे हैं। उन्होंने खुलासा किया कि वह जल्द ही एक्शन फिल्म लेकर आएंगे। जिसके लिए वह पहली कोशिश भाई सलमान खान को लेने की ही करेंगे। पढ़िए सोहेल ने क्या कुछ बताया। हेल्लो ब्रदर से लेकर जय हो जैसी फिल्में डायरेक्ट करने वाले सलीम खान के छोटे बेटे सोहेल खान इन दिनों अपने नए प्रोजेक्ट पर काम कर रहे हैं। कई कॉमेडी फिल्में बना चुके सोहेल इस बार एक बड़े पैमाने पर एक्शन फिल्म बनाने का विचार कर रहे हैं। वह इस फिल्म पर काम कर रहे हैं। जब उनसे पूछा गया कि इस फिल्म में वह किसे कास्ट करना चाहेंगे तो उनका जवाब काफी दिलचस्प था। उन्होंने कहा कि वह तो चाहते हैं कि सलमान खान इस फिल्म को करें लेकिन वह बहुत प्रोफेशनल हैं। मुंबई में एक कार्यक्रम में सोहेल खान पहुंचे। उन्होंने बताया कि वह एक बार फिर डायरेक्टर के तौर पर वापसी कर रहे हैं। वह चाहते हैं कि उनके अगले प्रोजेक्ट में बड़े भाई सलमान खान लीड रोल प्ले करें। उन्होंने कहा कि मेरी पहली चॉइस तो वही होगी कि भाई के पास जाएं। वो भी सूटेबल होने चाहिए इसके लिए। लेकिन वह बहुत प्रोफेशनल हैं। अब ये उनके ऊपर है कि वह इसे कर पाते हैं या नहीं। सोहेल खान के कहने का यही मतलब था कि सलमान खान अपने आगामी कई फिल्मों और कमिटमेंट्स में बिजी होते हैं। अगर वह किसी को काम के लिए डेट्स दे चुके हैं तो फिर वह प्रोफेशनली उसी पर फोकस करते हैं। ऐसे में वह तो यही चाहते हैं कि सलमान खान उनकी नई फिल्म में हो लेकिन अभी कुछ कहा नहीं जा सकता कि सलमान खान इस फिल्म के लिए समय निकाल पाते हैं या नहीं।

# कुब्रा ने 'सेक्रेड गेम्स' के बारें में बात की

` बोल्ड सीन से जुड़ी 'सेक्रेड गेम्स' फेम कुब्रा सैत ने कम समय में अपनी अच्छी खासी पहचान बना ली है। एक्ट्रेस कमाल की एक्टिंग कर लोगों का दिल जीत चुकी है। हाल ही में उन्होंने नवाजुद्दीन सिद्दीकी के साथ सेक्रेड गेम्स के एक सीन की शूटिंग के बारे में बात की, जो आपको हैरान कर देगा।

### सेक्स सीन के बाद रोई थीं कुब्रा

सेक्रेड गेम्स में कुब्रा और नवाजुद्दीन के इंटीमेट सीन्स हैं। सीरीज के डायरेक्टर अनुराग कश्यप थे। इसमें सैफ अली खान और राधिका आप्टे ने भी एक्टिंग की है। बातचीत में कुब्रा ने सेक्स सीन के बारे में बताया, वो सीन पहले दिन शूट हुआ था। यह दिन का आखिरी सीन था। मुझे जाकर इस सीन को पूरा करना था। मुझे याद है कि हमने सीन पूरा किया और इसे करने में हमें 7 टेक लगे थे। सातवें टेक तक, मैं भूल गई कि मैं कितने घंटे से शूटिंग कर रही हूं। मैं फर्श पर गिर गई और उठ नहीं पाई। मैं एग्जॉस्ट हो गई थी और रोए जा रही थी। नवाज और अनुराग कश्यप ने मुझे उठाया और जोर से गले लगाया क्योंकि मैं रो रही थी। मैं धीरे से कट सुना।



# अध्ययन सुमन के निशाने पर आए कास्टिंग डायरेक्टर्स

100 साल से ज्यादा समय से देश भर में फैले सिनेप्रेमियों का मनोरंजन करने वाली हमारी बॉलीवुड इंडस्ट्री की दुनिया बाहर से जितनी चकाचौंध से भरी लगती है, अंदर से उतनी ही काली और गहरी है। इसमें काम करने वाले सितारे समय-समय पर उनके साथ हुए बुरे हादसों के बारे में अक्सर खुलासा करते रहते हैं। बीते काफी समय से बॉलीवुड की काली सच्चाई उजागर करते एक्टर अध्ययन सुमन ने हाल ही में एक बार फिर से इंडस्ट्री में उनके साथ हुए बुरे बर्ताव का खुलासा किया है। बॉलीवुड सिंगर और एक्टर शेखर सुमन के बेटे और अभिनेता अध्ययन सुमन ने एक इंटरव्यू में बताया है कि उनके साथ कास्टिंग डायरेक्टर्स कैसा बर्ताव करते थे। अपने करियर के शुरुआती दिनों में, अभिनेता अध्ययन सुमन राज - द मिस्ट्री कंटीन्यूज, हार्टलेस, हिम्मतवाला जैसी फिल्मों में दिखाई दिए थे। लेकिन उसके बाद से वह पर्दे से कहीं गायब हैं। भले ही पूरी फिल्म इंडस्ट्री को पता था कि अध्ययन सुमन प्रसिद्ध अभिनेता शेखर सुमन के बेटे हैं, लेकिन उसके बाद भी उनके साथ इंडस्ट्री में सही तरह से बर्ताव नहीं होता था। अध्ययन को जल्द ही एहसास हो गया था शेखर सुमन का बेटा होना उनके लिए किसी भी फिल्म में भूमिका मिलना कोई गारंटी नहीं है। हाल ही में एक साक्षात्कार में, अध्ययन ने खुलासा किया कि कैसे कास्टिंग डायरेक्टर ने उन्हें किसी कुत्ते की तरह ट्रीट किया था। पहले भी कई बार बॉलीवुड के काले चिट्ठों से पर्दा उठा चुके अध्ययन सुमन ने एक बार फिर हाल ही में एक इंटरव्यू में कास्टिंग डायरेक्टर की हरकतों का खुलासा किया है। अध्ययन ने साझा किया कि लोग उन्हें पार्टियों में जाने की सलाह देते थे, लेकिन उन्होंने अपने मन से सवाल किया कि क्या पार्टियों में जाने से क्या उन्हें कोई काम मिलेगा। वह बोले, लोग मुझसे कहते थे अरे जा न, पार्टी कर न इंडस्ट्री के लोगों के साथ, उनके साथ घूम। लेकिन मेरा सवाल है, पार्टी करने से मुझे काम कैसे मिलेगा? अध्ययन सुमन बोले, सिर्फ पार्टी करने से काम नहीं मिलता है। साथ ही, आप इंडस्ट्री में नाम कमा चुके स्टार्स के साथ जाकर पार्टी नहीं कर सकते। यदि आप कोई नहीं हैं और आपने अभी तक कुछ बड़ा नहीं किया है, तो वे आपको इंवाइट ही नहीं करेंगे। या तो आपको बहुत सफल होने की जरूरत है या किसी स्टार किड के बचपन के दोस्त बनने की जरूरत है ताकि उनके आसपास आराम कर सकें। अध्ययन ने कास्टिंग डायरेक्टर्स के उनके प्रति रवैये के बारे में भी बात की और बताया कि कैसे उन्होंने उन्हें इधर-उधर धकेला। वह बोले, मेरे पास कास्टिंग डायरेक्टर्स ने रात के दो बजे कॉल किया और कहा, अभी आजा उठकर। उन्होंने मुझे अजीब समय पर जगाया, मुझसे पूछा कि अभी आजा पार्टी करने रात को और मैं ऐसी पार्टियों में गया हूं। मैं काम के लिए बेताब था। लेकिन कुछ समय बाद, मुझे किसी कुत्ते जैसा महसूस हुआ। उसने अभी बोला उठ जाओ, फिर बोला बैठ जाओ।

# मेरी महाभारत न पहले कभी देखी होगी न सुनी होगी: राजामौली

आरआरआर के बाद महेश बाबू को लेकर 3 भागों में फिल्म बनाने वाले एसएस राजामौली सोशल मीडिया पर चर्चाओं में है। उनकी चर्चा महाभारत पर फिल्म बनाने को लेकर हो रही है। महाभारत के लिए राजामौली ने कहा है कि उनकी महाभारत ऐसी फिल्म होगी जिसके बारे में आपने न पहले कभी देखा होगा और न पहले कभी सुना होगा। कहानी वही होगी लेकिन उसे पेश करने का अंदाज जुदा होगा। हाल ही में डायरेक्टर एसएस राजामौली ने एक इवेंट के दौरान बताया कि अगर वो कभी महाभारत पर फिल्म बनाते हैं तो वो फिल्म कैसी होगी। राजामौली ने अपनी बहन के पति डॉक्टर एवी गुरुवा रेड्डी से बात करते हुए बताया कि अगर वो कभी महाभारत पर फिल्म बनाने पर आ गए तो वो 10 अलग-अलग पार्ट में पूरी महाभारत को फिल्माना चाहेंगे। बातचीत के दौरान राजामौली ने कहा कि हमारे देश में महाभारत के कई अलग-अलग वर्जन मौजूद हैं। उन सभी को पढ़ने में ही मुझे कम से कम एक साल लग जाएगा और अगर मैं महाभारत पर कभी फिल्म बनाता हूं तो ये फिल्म 10 भाग में होगी। महाभारत पर फिल्म बनाने को लेकर मेरे मन में यही आइडिया है। ज्ञातव्य है कि अपने एक पुराने साक्षात्कार में राजामौली बता चुके हैं कि महाकाव्य पर फिल्म बनाना उनका ड्रीम प्रोजेक्ट है। जब भी मैं कोई फिल्म बनाता हूं मुझे ऐसा महसूस होता है कि मैं महाभारत पर फिल्म बनाने के लिए ये सब सीख रहा हूं। कुछ बड़ा करने के लिए छोटे-छोटे स्टेप्स से सीखना बहुत जरूरी है। मेरी हर फिल्म महाभारत पर फिल्म बनाने के लिए लिया गया कदम है, छोटी-सी कोशिश है। इससे पहले राम चरण के साथ हुई बातचीत में राजामौली ने बताया था कि उनकी महाभारत का मटेरियल और कैरेक्टर उससे पूरी तरह अलग होंगे जिस तरह हम आज महाभारत की सेटिंग और किरदारों को जानते हैं। राजामौली ने कहा था- मैं महाभारत में अपने किरदारों को जिस तरह से पेश करूंगा, वैसा कुछ आपने पहले कहीं भी न कभी देखा होगा, न सुना होगा। मेरे मन में महाभारत को लेकर ऐसा ही कुछ विजन है। मैं अपने तरीके से आपको महाभारत की कहानी सुनाऊंगा।

# पैपराजी पर नाराज हुईं मलाइका अरोड़ा

मलाइका अरोड़ा एक ऐसी एक्ट्रेस हैं जो हमेशा ही खबरों में बनी रहती हैं। एक्ट्रेस अपनी प्रोफेशनल और पर्सनल लाइफ को लेकर चर्चा में रहती हैं। इसके साथ ही मलाइका अपने लुक्स और स्टाइलिश अंदाज के लिए भी जानी जाती हैं। एक्ट्रेस अक्सर ही शहर में अपने कैजुअल आउटिंग के दौरान स्पॉट होती रहती हैं। वह इस दौरान भी खुशी खुशी पैपराजी के आगे पोज देती हैं। हालांकि इस बार एक्ट्रेस पैपराजी पर काफी नाराज दिखाई दी हैं। दरअसल, शुक्रवार के दिन मलाइका अरोड़ा को एक क्लीनिक पर स्पॉट किया गया था। जैसे ही वह अपनी कार से बाहर निकलीं, फोटोग्राफर्स ने बिल्डिंग के मुख्य गेट तक उनका पीछा किया। उस दौरान एक्ट्रेस ने एक सफेद रंग का टैंक टॉप और कार्गो पैंट पहन रखी थी और उन्होंने बालों का बन बनाया हुआ था। जैसे ही मलाइका ने अंदर कदम रखा तभी एक फोटोग्राफर ने अपना संतुलन खो दिया और हाथ में कैमरा लिए उनसे टकरा गया। मलाइका ने जल्दी से गफ्फ पर ध्यान दिया और पैपराजी को कड़ी नजर से देखते हुए कहा कि आराम से आराम से। इसके बाद वह तुरंत लिफ्ट के अंदर चली गईं, जहां पर उनका बेटा अरहान पहले से ही उनका इंतजार कर रहा था। बीते दिनों मलाइका ने कहा था कि वह अर्जुन के साथ अपना परिवार शुरू करने के लिए तैयार हैं। हालांकि उसने अपनी शादी को लेकर साफ तौर पर कुछ नहीं कहा है। एक्ट्रेस के बातों से यह महसूस होता है कि वह अब शायद शादी के लिए तैयार हैं।

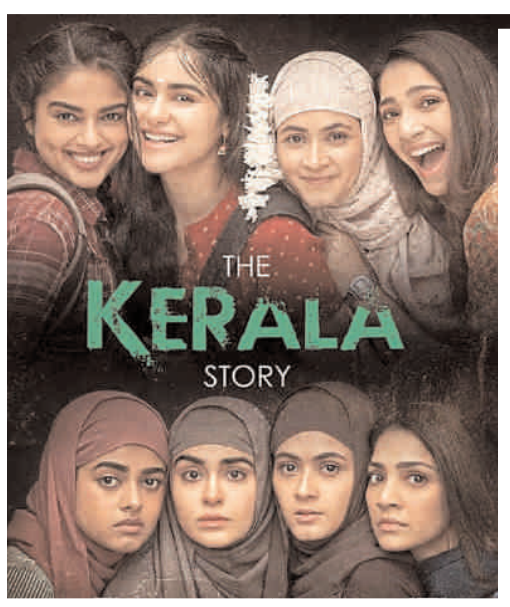


# 7 दिन में ही ब्लॉकबस्टर बन गई फिल्म 100 करोड़ के क्लब में पहुँचेगी द केरल स्टोरी

निर्माता विपुल अमृतलाल ने हिन्दी सिनेमा को वक्त, आँखें, फोर्स, कमाण्डो सरीखी कई फिल्में दी हैं। द कश्मीर फाइल्स की सफलता को देखने के बाद उनके द्वारा बनाई गई फिल्म द केरल स्टोरी को लेकर उन्होंने भी नहीं सोचा होगा फिल्म इस कदर हिट हो जाएगी। पिछले सात दिन से पश्चिम बंगाल व तमिलनाडु को छोड़कर देश भर में चल रही द केरल स्टोरी ब्लॉकबस्टर बन गई है। बीते शुक्रवार को 8 करोड़ से शुरूआत करने वाली द केरल स्टोरी ने सिर्फ सोमवार को 10.50 करोड़ का कारोबार किया, वरना शेष दिनों में इसने लगातार बढ़ोतरी दिखाते हुए स्वयं को 81.36 करोड़ तक पहुँचाने में सफलता प्राप्त कर ली है। फिल्म ने रिलीज के सातवें दिन 12.50 करोड़ का कलेक्शन किया है। इस तरह फिल्म का कुल कलेक्शन 81.36 करोड़ हो गया है। फिल्म की कमाई को देखते हुए यह निश्चित हो गया है कि यह फिल्म शनिवार को 100 करोड़ के क्लब में शामिल हो जाएगी। 28 करोड़ के बजट में बनी इस फिल्म ने अपनी लागत पहले ही निकाल ली थी। अब यह पूरी तरह से निर्माताओं के लिए फायदे का सौदा साबित हो रही है।